यमुना सत्याग्रह संवाद

यमुना सत्याग्रह संवाद

जल बिरादरी
34/46, किरण पथ
मानसरोवर, जयपुर-302 020
फोन : 0141-2393178
ई-मेल - watermantbs@yahoo.com

प्रथम संस्करण :
सितम्बर, 2007

मूल्य : 51/- मात्र

प्रकाशक एवं वितरक :
जल बिरादरी
34/46, किरण पथ
मानसरोवर, जयपुर-302 020
फोन : 0141-2393178
ई-मेल - watermantbs@yahoo.com

रूपांकन एवं मुद्रण
कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	1
2.	जल साक्षरता का आह्वान	11
3.	सत्याग्रहियों का निवेदन	18
4.	यमुना को सदानीरा, निर्मल बनाएं	22
5.	यमुना के लिए एक अपील	29
6.	यमुना सत्याग्रह : जलस्रोतों पर नियंत्रण	35
7.	यमुना सबकी है	39
8.	यमुना सत्याग्रह तैयारी प्रक्रिया	45
9.	यमुना यात्रा की एक झलक	52
10	सत्याग्रहियों के विचार	62
11.	स्थानीय लोगों के विचार	77
12.	यमुना यात्राओं की बैठकों का विवरण	87
13.	सत्याग्रह प्रक्रिया यात्रा	105
14.	प्रेस नोट	124
15.	चिंतकों के पत्र	127
16.	छपते-छपते	144

प्राक्कथन

वर्ष 2004 के जनवरी में डौला-बागपत (उ.प्र.) गांव से कुछ लोगों ने तरुण भारत संघ, भीकमपुरा, अलवर (राज.) में आकर मुझसे कहा 'अपना गांव प्यासा उसे प्याऊ नहीं। दूसरों को प्याऊ क्यों ? अपने हैण्डपम्प सूख रहे हैं। तालाबों पर कब्जे हो गए हैं। फिर भी दूसरों की ही चिन्ता क्यों ? अपने गांव में क्यों पानी का काम नहीं ?'

मैंने सहज रूप से कहा कि जो गांव चाहता है, वह पानीदार बन जाता है। आप चाहें तो डौला भी पानीदार बन सकता है। वीरेन्द्र ने कहा कि पानी के लिए कुछ जरूर करना चाहिए। मैंने उन्हीं के साथ गोपालसिंह और रामेन्द्रसिंह को भेज दिया। इन्होंने वहां जाकर गांव में देखकर काम शुरू करवाना तय किया। वहां कब्जों को हटवाने के लिए मुझे कई बार जाना पड़ा। खैर बहुत कठिनाई से काम चालू हुआ। डौला आते-जाते यमुना भी रास्ते में पड़ती है। इसे देखकर मन में बहुत सवाल उठते रहे।

इस डौला के काम के साथ-साथ हिण्डन नदी के क्षेत्र में बीमारी, बेकारी, लाचारी की हालात देखी। बालैनी के वाल्मिक आश्रम के महन्त ने हिण्डन शुद्धि के लिए सरकार पर दबाव बनाने का मुझसे आग्रह किया। मैंने समय निकाल कर हिण्डन की पदयात्रा करके हिण्डन के समाज तथा सरकार और

उद्योगों द्वारा पैदा किये गये प्रदूषण को रोकने के उपायों पर बातें कीं। समाज को हिण्डन के साथ जोड़ दिया। तीन माह तक दोनों किनारे के गांव-गांव में सभा-शिविर आयोजित किए गए। अब लोग हिण्डन को प्रदूषण-मुक्त कराने की बातें करने लगे हैं।

डौला-हिण्डन के काम के लिए दिल्ली में भी बहुत बार आना-जाना पड़ा। दिल्ली के दीवान सिंह ने दिसम्बर, 2006 में बहुत आग्रह किया। मैं यमुना और दिल्ली में कुछ करूं। हम सहज रूप से अब भी तरुण जैसे ही हैं। तरुणों को अपने चारों तरफ की बातें, वातावरण प्रभावित करता है। ये देखकर फिर कुछ जो अच्छा दिखता है, उसी में लग जाते हैं। मैं भी साधारण तरुण भाव से दिल्ली और यमुना के काम का संबंध सोचकर फरवरी में पूरे मनोयोग के साथ दिल्ली आया।

जैसा मेरा स्वभाव है, मैं कुछ करने से पहले उसके बारे में पढ़ता नहीं, देखता हूं। मैंने दिल्ली जाकर अपना डेरा डाल दिया। साथ ही साथ यमुना यात्राएं भी शुरू कर दीं। दिल्लीवासियों से मिलना-जुलना शुरू किया। 22 मार्च तक जिनसे मिला, उन्हें बुलाकर गांधी-स्मृति में एक सभा की। प्रो. सैफुद्दीन सोज, जल संसाधन मंत्री भी आये। बहुत से अन्य लोग आए। नदी और जल साक्षरता की कुछ अच्छी-अच्छी बातें हुईं। जल साक्षरता वर्ष 2007 में सरकार क्या करने वाली है ? यह सब जाना। हमने जो सोचा था, वह सब मंत्री जी को बताया।

दिल्ली में ही कुछ स्कूलों-कॉलेजों में भी गया। पुराने नदी प्रेमियों से मिला। मेरी मिलने की यात्रा जारी रही। 18 अप्रैल को जल साक्षरता हेतु सत्याग्रह तैयारी संवाद किया। इसमें बहुत से पत्रकार, जल संसाधन मंत्री प्रो. सैफुद्दीन सोज, ग्रामीण विकास मंत्री श्री रघुवंशप्रसाद सिंह जी आए। मुख्य अतिथि श्री रघुवंशप्रसाद सिंह ने सत्याग्रह पर बहुत बातें कीं। क्योंकि भारत

में यह सब उन्हीं के जिले चम्पारण से शुरू हुआ था। मृणाल पाण्डेय, मैक्सीन ओंलवीन आदि आये।

पत्रकार मित्रों से आग्रहपूर्वक बोलने को कहा, वे बोले। उन्हें सबने सुना। इसी आग्रह में यमुना का सवाल जोर पकड़ गया। बस ! हमें लगा कि यमुना का सवाल अब भूजल पुनर्भरण रोकने का सवाल भी बन गया है, जो अभी दिल्ली के समाज को समझना चाहिए। हमने सोच-विचार कर यमुना से ही किसान और गरीब को हटाने, भूजल लूट को रोकने तथा प्रदूषण मिटाने का लक्ष्य रखकर पहले अपने पुराने कार्यक्षेत्र राजस्थान की तरह जल सत्याग्रह की तैयारी शुरू की।

दिल्ली में ही यमुना किनारे पर छोटी-छोटी यात्राएं कीं। 19 मई को एक बार फिर सबके साथ गांधी दर्शन, राजघाट, दिल्ली में बैठे। इस बैठक में बहुत से साथी आये। यह बड़े विद्वान जनों वाली बैठक हुई। इसमें मेरा उत्साह बहुत बढ़ा। फिर मैं यमुना किनारे अपने गांव डौला-बागपत, बड़ौत, कांधला, कराना, शामली, सहारनपुर होते हुए हथनीकुण्ड पहुंचा। यहां सम्मेलन करके फिर हरियाणा वाला रास्ता पकड़ा। यमुना नगर, कुरुक्षेत्र, करनाल, घरोंड़ा, पानीपत, सोनीपत होते हुए अच्छी सभाएं करते हुए दिल्ली कुर्सिया घाट पहुंचे।

यहां अच्छी सभा हुई। अच्छी बातें और अच्छे निर्णय हुए। दिल्ली में वजीराबाद पुस्ते से अक्षरधाम पुस्ते तक पद यात्रा करके, फिर दिल्ली से मथुरा-आगरा-इलाहाबाद तक यमुनोत्री से दिल्ली तक यमुना सत्याग्रह संवाद यात्रा सम्पन्न हुई। इस यात्रा ने यमुना का दर्शन कराया।

सप्तऋषि कुण्ड से निकलने वाली यमुना की दूध जैसी निर्मल सात धाराएं यमुना के बचपन की क्रिया का स्मरण कराती हैं। बर्फीले कुण्डों से बना

ग्लैसियर का एक नाम सप्तऋषि है। वैसे इन सातों कुण्डों से आने वाली धाराओं के अलग-अलग नाम हैं। यमुनोत्री में आकर इसका एक ही नाम 'यमुना' हो जाता है।

यवनेश पर्वत श्रृंखला से निकलने वाली योनिरूप से उत्पन्न यमुना की विविध सप्त धाराएं विविधनामा यमुना नदी है। कालिन्दी पर्वत के नीचे तक आने पर पकी, गहन-गंभीर सफेदी वाली दिखाई देती है। ऊपर से आने वाली दूध सी जल धारा में पूरी शुद्धता, गंभीरता का दर्शन होता है। जैसे

ही धरती, पहाड़ के पायदान को छूती है, तो बाल्यकाल वाली बाल्या बनकर यमुनोत्री से जानकी चट्टी (खरसाली) तक कल-कल, अठखेलियां करती हुई पहुंचती है।

खरसाली से आगे इसमें किशोरीपन भर जाता है। फिर इसमें मिलने वाले झरने-जंगलों से झरकर आते हैं। अब यमुना जी की दुग्ध सम फेन धारा निःस्मृत नहीं रहती। जंगल की सृजित धाराएं इसमें मिलने लगती हैं। इस धारा को देखने वाला भी सूरज के प्रकाश में इसमें अपना चेहरा देख सकता है। अब यह नदी देखने वाले को अपनी औकात बताने वाली बन जाती है। हनुमान धारा मिलने पर हनुमान चट्टी में आकर यमुना जी तरुण हो जाती हैं। अपनी तरुणाई और अंगड़ाई लेते हुए यह आगे बढ़ती हैं। यमुना की तरुण तरंगों और आवाज से अब मन-मुग्ध होता है।

नदी की तरुणाई अब किसी को भी पीछे धकेल सकती है। अब जल धारा में प्रवेश करके पार करने वाला कोई सूरमा नहीं दिखता। मेरे जैसा राजस्थानी तो इसकी तरुणाई देखकर आकर्षित तो होता है पर छूने से डरता है। यहां यमुना के कुंवारेपन की कहानी हर मोड़ पर सुनी। जहां भी रुका या इसके किनारे पैदल चला, बस इसके बहुत से रंग और रस (चखे) थे। पानी के गीत सब जगह अलग-अलग ध्वनि में सुनने को मिले।

यमुनोत्री में रहने वाले महात्मा रामभरोसे दासजी, नेपाली बाबा की बहुत सी बातें जाते समय सुनीं। उनसे मिलकर अच्छा लगा। उन्हें यमुना की

शुद्धता की बातें सुनाईं। उनसे यमुना की क्रोध की बातें सुनी। बोले, ''यवनेश पीठ पर आने के लिए पुल और यात्रियों को ठहरने की जगह बनाई थी। सब 13 अगस्त को बर्फ ने पिघल कर, बादलों ने रास कर यमुना का असली कुंवारेपन का गुस्सा दिखाया। हमारे सबको तोड़कर बहाकर ले गई। यहां किसी यात्री को अब ठहरने की जगह नहीं है।'' हमें यहां रात हो गई थी। हमारा मन था यहां आश्रम मिलेगा। उसमें ठहरेंगे लेकिन जगह नहीं मिली। गहरे अन्धेरे में ही पहाड़ से नीचे उतरे।

मेरे साथ पांच पूर्व-दक्षिण भारत के सन्त और हमारे सात साथी पत्रकार भी थे। खैर बिना कुछ खाये। बीती रात में नीचे आये। सन्तों को तो श्री श्री 108 गोपालदास जी वर्षा, कुरियाली, राममंदिर यमनोत्री, त्यागी आश्रम में श्री रमेशदास जी के पास ठहरा दिया। हम जानकी चट्टी आकर रुके। प्रात: सब मिलकर खरसाली होते हुए यहां श्री रणसिंह राणा के साथियों से मिलकर आगे बढ़े। ये भी हमारी यात्रा में साथ चलने के लिए सामान लेकर तैयार थे। लेकिन गाड़ी में जगह नहीं थी। इसलिए नहीं चल सके। इनके

गांव में यमुना जी छः माह रहती हैं। यहां 6 माह रहकर ही अपना बचपन सुरक्षित पूरा करके किशोर बनती हैं। किशोर अवस्था में रोगों से लड़ने की ताकत आ जाती है, इसीलिए यहां यमुना अपना बचपन पूरा करके यहां रुकती नहीं बहती-चलती रहती हैं।

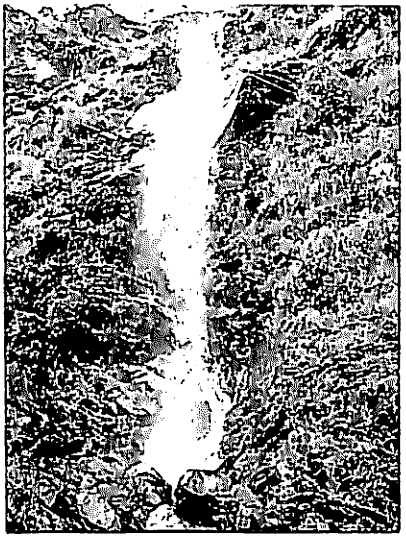

मनुष्य स्वभाव से ही दूसरों की जवानी और पानी को अपने लालच के लिए काम लेने हेतु लोलुप रहता है। यह लोलुपता गगा में पहले शुरू हुई थी। यमुना में बहुत बाद में आई। मेरा आज तक मानना था। यमुना अभी अपने मूल चरित्र में बच सकती है। अभी तक के कागजी निर्णय देखकर तो कुछ आशा रहती है। 12 मई 1994 को यमुना से जुड़े पांचों मुख्यमंत्रियों ने यमुना को 10 क्यूसेक पानी सदैव देने का निर्णय लिया था, अब नहीं दे रहे हैं। हथनीकुण्ड में आकर वह पानी पूरा ही पूर्व-पश्चिम की नहरों में बांट लेते हैं।

अब हमारे राज्य का संचालक वर्ग अपनी बातों को पूरा नहीं करता। तभी तो विकास नगर के नीचे और यमुना नगर के ऊपर पानी और प्रदूषण दोनों ही नहीं है। विकास नगर में इसके साथ मनुष्य ने अपने बल से इसकी ऊर्जा और पानी लिया है। मनुष्य बल से जब प्रकृति से लेने की शुरुआत होती है, तभी प्रकृति के नष्ट होने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। विकास से विनाश शुरू होता है।

यमुना में 23 मई को जब मैं वहां था, पानी नहीं दिखता था। ऐसा लगा जैसे यमुना हथनीकुण्ड में समाप्त हो गई है। अब यह मैला ढोने वाली मेहरी

बन कर ही रह गई है। यमुना नगर के सभी उद्योग और नगर पालिकाएं इसमें मलबा डाल रही हैं। ऐसा यमुना नगर से पंचनदा तक इस नदी में आकर मिलती सभी जल धाराओं से होता है। यमुना फिर पक्की पवित्र-प्रौढ़ सी दिखाई देने लगती है। यह प्रौढ़ता यमुना को संगम इलाहाबाद में फिर बीमारी और बुढ़ापा देती है। इस बीमारी के इलाज हेतु कई इन्जेक्शन और टेबलेट दी जाती हैं। लेकिन ये केवल नाम और दिखावे के लिए दिए जा रहे हैं। इन्हें देखकर हमारा मैला और समाज की मैली जीवन पद्धति का स्पष्ट दर्शन होता है। मैली जीवन पद्धति बनाने में हमारे राज की भूमिका सबसे बड़ी है। एक युवा प्रधान मंत्री ने 1986 में मैली नदी को साफ करने और मैली राजनीति को ठीक करने का अभियान चलाया था। वह बेअसर क्यों रहा ?

अब तो यमुना का मैला ही कुछ घरानों को प्रतिष्ठा दिलाने वाला बन रहा है। मैला दूर करने वाले घराने दिल्ली में मालामाल बन रहे हैं। मुख्य मंत्री

दिल्ली में क्लीन यमुना बनाने में जुटी हुई हैं। उनसे तथा यमुना के पेट पर कब्जा कराने का जज़्बा दिखाने वाले राजनेताओं से भी मिलना हुआ। किसानों, पण्डों-पुजारियों, पर्यटकों, न्यायमूर्तियों, कानूनविदों, विद्यार्थियों, शिक्षकों सबने यमुना को यमुना बनाने की बातें कीं। यमुना को यमुना बनाने के लिए क्या-कैसे काम करें ? कौन करेगा ? इसका यहां के लोगों को अहसास नहीं।

यमुना के साथ फरवरी से अगस्त तक चार चरणों में संगम से यमुनोत्री तक जानने, देखने-समझने से मुझे यहां कुछ करने का अहसास पक्का हुआ है। अब आगे क्या अपने आप होगा, उसका भी आभास होने लगा है।

यमुना दर्शन के बाद यमुना पर बैठने का मन बन गया। मुझे लगा 'यमुना सबकी है।' सबको यमुना हेतु अपनी समझ के अनुरूप जितना बस चले

उतना करना चाहिए। इसी भाव से यमुना में काम करने आया हूं। अब यमुना के बारे में लिखने का मन भी बना है। इसलिए कुछ लिखना भी शुरू किया। इस पुस्तिका को तैयार करने में देवयानी कुलकर्णी, सतेन्द्र सिंह का बहुत योगदान रहा है। इस सामग्री को व्यवस्थित किया। विनोद ने सामग्री इकट्ठी की। ईरीना ने इसके फोटो तैयार किये। यह यमुना यात्रा के दौरान लिखी यमुना सत्याग्रह तैयारी संवाद की पहली पुस्तिका है। हमें आशा है कि यह जनसाधारण को यमुना-समझ बढ़ाने हेतु कारगर सिद्ध होगी।

❑❑❑

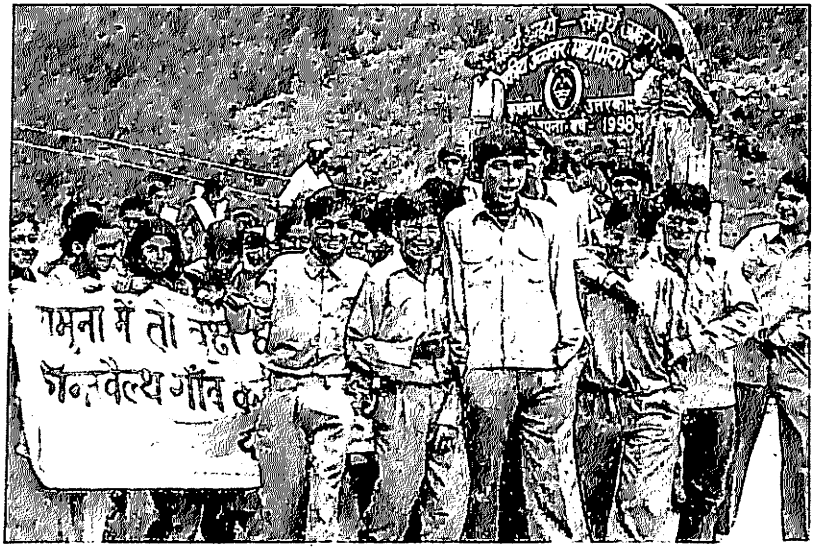

जल साक्षरता का आह्वान

जल प्रकृति का अनुपम उपहार है, राष्ट्र की धरोहर है। भारत के पानी को समझने-सहेजने और इस पर समान हक़ कायम करने के काम में भी लगे, भाइयों, बहनों, संगठनों और सरकारों के साथ संवाद और सत्याग्रह में विश्वास रखने वाले आस्थावानों के भाईचारे का नाम ही 'जल-बिरादरी' है।

जल बिरादरी ने पिछले कई वर्षों में पूरे देश में जलयात्रा कर पानी के स्थानीय तथा भारतीय सरोकारों के प्रति चिंता और जिम्मेदारी का अहसास

जगाने की कोशिश की है। फिलहाल संगठन नदियों के पुनर्जीवन की मुहिम में लगा है। जन-जल जोड़ हेतु जल साक्षरता, जल पुनर्भरण इकाइयों को कब्जा मुक्त कराने, नदियों को प्रदूषण मुक्त व सदानीरा बनाने के साथ-साथ नदी जल स्रोतों को उद्योगपतियों के हाथ से निकालकर वापस समाज को सौंपने जैसी बड़ी चुनौतियां अभी जल बिरादरी के सामने हैं। इन चुनौतियों के जवाब में कुछ ज़मीनी मॉडल खड़े करने की जरूरत है। जल बिरादरी ऐसा करने में जुटी है। लोगों को पानीदार बनाने की भी जरूरत है। अलवर की अरवरी नदी व वहां का समाज इसका गवाह है कि नदी का पुनर्जीवन संभव है।

स्थानीय जल बिरादरी ने छत्तीसगढ़ की शिवनाथ नदी को उद्योगपतियों के हाथों से छीनकर वापस समाज को सौंप दिया है। पश्चिम उत्तर प्रदेश की हिण्डन नदी का समाज अब इस बात का उदाहरण बनने की राह पर अग्रसर है कि समाज चाहे तो भीषणतम प्रदूषित नदी भी स्वस्थ, स्वच्छ व शुद्ध बना सकता है। पश्चिम उ.प्र. के जिला बागपत के ग्राम डौला में परम्परागत जल संग्रहण इकाइयों पर से कब्जे हटवाये तथा उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए प्रयासरत हैं।

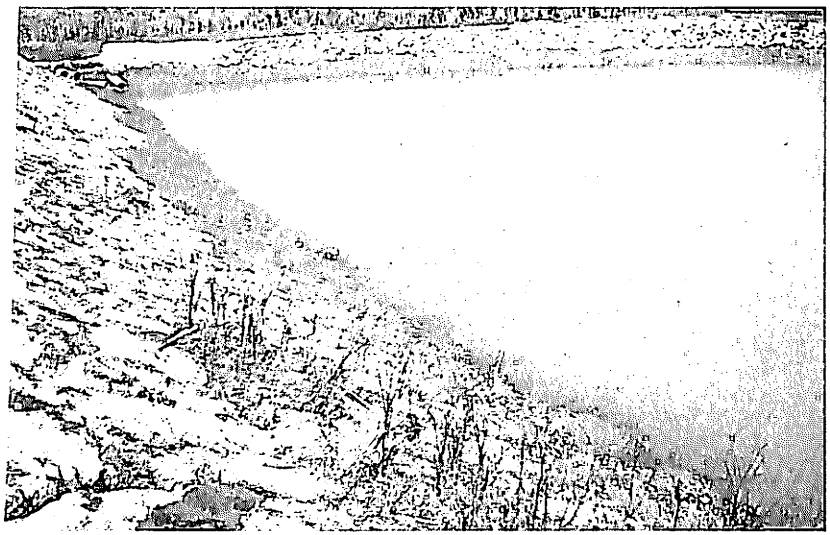

जल बिरादरी ने पिछले सात वर्षों में हर राज्य में जल नीति को जनोन्मुखी, जन-जरूरत व भारतीय जल दर्शन के अनुकूल बनाने के लिए अपनी कोशिश आज भी नहीं छोड़ी है। इस बात की खुशी है कि जल बिरादरी के सतत ज़मीनी व वैचारिक प्रयासों से आज भारत के कोने-कोने में जल चर्चा का माहौल खड़ा हुआ है। समाज, सरकार, संचालक वर्ग व सभी आज पानी पर बात करते व सुनते हैं। यह संतोषजनक है; लेकिन अभी भारत के पानी के सामने बड़ी चुनौतियां हैं। अभी प्रदूषण व जल शोषण रोकने के लिए समाज, सरकार व उद्योगपतियों का मानस बनाने का व्यापक कार्य अभी बाकी है। लोगों में उनके आस-पास के परिवेश व पानी की संस्कृति, संस्कार, स्वभाव, समझ व खतरों का अहसास जरूरी है।

हम जल संकट के समाधान का दायित्व समाज व सरकार दोनों का मानते हैं, लेकिन लोकतंत्र में लोगों के चुने प्रतिनिधियों वाली सरकार की जिम्मेदारी ज्यादा होती है। अतः जल बिरादरी की सरकार से कई अपेक्षाएं हैं।

* पहला - सामुदायिक जल प्रबंधन को बढ़ावा देने वाले कायदे-कानून बनें व उनकी पालना सुनिश्चित कराने की व्यवस्था भी विकसित की जाए।
* परम्परागत जल संग्रह इकाइयों व नदी घाटी के जल ग्रहण क्षेत्रों को बचाने के लिए उन्हें कब्जामुक्त व शोषणमुक्त कराने, जंगल व जंगली जीवों की महत्ता को समझते हुए उनके संरक्षण हेतु सभी सरकारों ने Reserve Forest और Wildlife Sanctuories की घोषणा की, Notification जारी किए। उसी तरह आज Water Reserve बनाने की जरूरत है। यहां पानी का Industrial use, पानी का बाजारीकरण आदि पूरी तरह प्रतिबंधित हो। पानी आजाद होकर बह सके, पानी का जल स्तर एक स्तर से नीचे न जाने पाए, यह जिम्मेदारी हो। इस पर सरकार विचार करेगी तो जरूर यह एक बड़ी पहल होगी। इससे पानी की लूट रुकेगी, पानी

की लूट रोकने की व्यवस्था बनाने की जरूरत है। सरकार इस पर व्यापक पहल करे।

* जल के विभिन्न सरोकारों को शिक्षा पाठ्यक्रमों में शामिल करना जरूरी है।

* आज जरूरत है कि केन्द्रीय जल प्रबंधन पर खर्च होने वाली धनराशि अब विकेन्द्रीकृत जल प्रबंधन पर खर्च हो। जल निकासी की बजाय, जल संग्रहण व पुनर्भरण की योजना, परियोजना प्राथमिकता बने।

* हमारा मानना है कि जल बचाने की जिम्मेदारी तभी बनेगी जब समाज को हकदारी मिलेगी। सरकार ने समाज से जल की हकदारी छीन ली है। समाज को पानी की हकदारी वापस लौटाना सरकार की जिम्मेदारी है। ऐसा होने पर ही हमें जल जुटाने, सहेजने व उसके अनुशासित उपयोग की समाज से अपेक्षा कर सकते हैं। सरकार को इस पर पूरी प्रतिबद्धता से निश्चय व निर्णय करने की जरूरत है।

आज सरकार ने 80 प्रतिशत जल सुविधाएं ऊपरी 20 प्रतिशत लोगों को दी हैं। 80 प्रतिशत गरीबों के हिस्सें में कुल 20 प्रतिशत सुविधाएं हैं। यह नीति ही गरीबों को और गरीब व बेपानी बना रही है। अतः व्यवस्था व नीति में व्यापक बदलाव के बगैर यह संभव नहीं है। गरीब व ग्रामीण के प्राण खतरे में हैं। गरीब व ग्रामीण के पैर उसकी जड़ों से उखाड़ने की तैयारी है। यह बड़ा खतरा है। सामुदायिक प्रयासों को बढ़ावा देकर तथा गांव को बाजार के चंगुल से बचाने के प्रयास हों।

जल लूटने वालों को सजा व जल बचाने वालों को प्रोत्साहन देना जरूरी है। 'निर्मल ग्राम योजना' को 'निर्मल जल ग्राम योजना' बनानी चाहिए।

प्रत्येक निर्मल तालाब के प्रबंधक समाज को पुरस्कृत व सम्मानित करना चाहिए। तालाबों के रख-रखाव की अब नई व्यवस्था खड़ी करनी होगी।

ग्रामीण विकास मंत्रालय अब राष्ट्रीय रोजगार गारंटी का पूरा पैसा 'जल संचयन इकाइयों के कामों से जुड़े रोजगार पर ही खर्च करे; क्योंकि इस तरह की योजनाओं की इकाइयां हम बेरोजगारों को कई पीढ़ी का रोजगार दे सकती हैं। जिस ग्राम पंचायत ने इस पैसे से जल प्रबंधन की अच्छी व्यवस्था बनाई है; उस पंचायत को प्रोत्साहन हेतु धनराशि की जरूरी व्यवस्था बनाने की जरूरत है लेकिन ग्राम पंचायत की तरफ से जल संरक्षण के काम शुरू होवे। इसके लिये ग्राम पंचायत में पानी के सरोकारों का अहसास जरूरी है। अतः जल साक्षरता को ग्रामीण विकास आन्दोलन जैसे बड़े अभियान के विकास की शुरुआती प्रक्रिया का आवश्यक अंग बनाया जा सके, तो यह राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना की सफलता सुनिश्चित करने में मदद करेगा। यूं भी ग्रामीण विकास आंदोलन व निर्मल ग्राम योजना का रिश्ता पानी से है ही। ऐसे में यदि जल और ग्रामीण विकास मंत्रालय मिलकर काम करें, तो अच्छे परिणाम निकल सकते हैं। यह सुझाव सम्पूर्ण व्यवस्था

बदलने का प्रवेश-बिंदु बन सकता है। ऐसे काम में जल बिरादरी साथ देने को हमेशा तैयार है।

जल समझ बढ़ाने हेतु जल साक्षरता की बड़ी जरूरत है। आज गांधी जी के बलिदान स्थल से इसकी शुरुआत कर सकते हैं। हम भारत की पाठशालाओं / कॉलेजों से अपने समुदायों / शहरों व समाज के भिन्न वर्गों में जल समझ का लेन-देन करने का मन रखते हैं। जहां पहले ही समझ है, वहां पानी के संचयन का काम करेंगे। जहां यह काम हो रहा है, वहां पानी की हकदारी के लिए पानी की लूट को रोकने हेतु सत्याग्रह करेंगे। ध्यान रहे कि पानी की लूट की छूट सरकार ने ही दी है। अतः सरकार इस छूट को रोककर हमारी सहयोगी बने। हालांकि पिछला अनुभव उलटा है। हमने लूट पर रोक की अपनी कोशिश का दुष्फल भी चखा है, पर संतोष है कि हमें सफलता मिल रही है। राजस्थान उच्च न्यायालय ने लूट की छूट देने वाले नये लाइसेंसों पर रोक लगा दी है। लूट रोकने तथा सभी की जरूरत के मुताबिक समान जल की व्यवस्था अरवरी संसद ने अपने इलाके में खड़ी की है। अरवरी संसद जैसी व्यवस्था पूरे देश में बने। इसके लिए पूरे देश

के सभी भूसांस्कृतिक क्षेत्रों की जल बरादरी, 18 अप्रैल, 07 से आज जल साक्षरता अभियान शुरू कर रही है। यह अभियान भिन्न भू-सांस्कृतिक क्षेत्रों के बीच उनके परिवेश व पानी के प्रति अहसास जगाने से शुरू होकर वर्षा जल को सहेजने, जल का शोषण व प्रदूषण रोकने तथा जल के अनुशासित उपयोग की दिशा में सक्रिय तरुण जल विद्यापीठ इस हेतु जल कार्यकर्त्ता को निर्माण के काम के लिये निरन्तर कार्यरत हैं। यह अभियान उत्तर-पूर्व राज्यों से शुरू होकर कालांतर में दक्षिण, उत्तर, पूर्व, पश्चिम सभी जगह चलेगा। इस अभियान की रीढ़ हमारे जल कार्यकर्त्ता, देशभर के जल प्रेमी, गजधर तथा प्रकृति प्रेमी समाज व हमारी सरकारों को ही बनाना होगा। यह किसी एक व्यक्ति, संस्था अथवा सरकार का अभियान नहीं है। यह सभी का साझा है। साझे से ही जल के साझे संकट का समाधान निकलेगा, चूंकि जल बिरादरी साझे जल प्रयास करने वालों का भाईचारा कायम करती है। अतः जरूरत है कि समाज भी, सरकार भी, संस्थाएं और हम भी साझे जल भविष्य के लिए साझे प्रयासों को संकल्पित हों।

□□□

सत्याग्रहियों का निवेदन

दिल्ली से दिल्ली : यमुना सत्याग्रह तैयारी प्रक्रिया में यमुना के उद्गम से अन्त तक देख कर मिश्रित अनुभव हुआ। मन में आया, इसे अभी बचाया जा सकता है। इसकी नई-पुरानी सभी समस्यायें दूसरी नदियों जैसी ही हैं। इस नदी को ठीक करने का काम पूरा होने से दूसरी नदियों को ठीक किया जा सकता है।

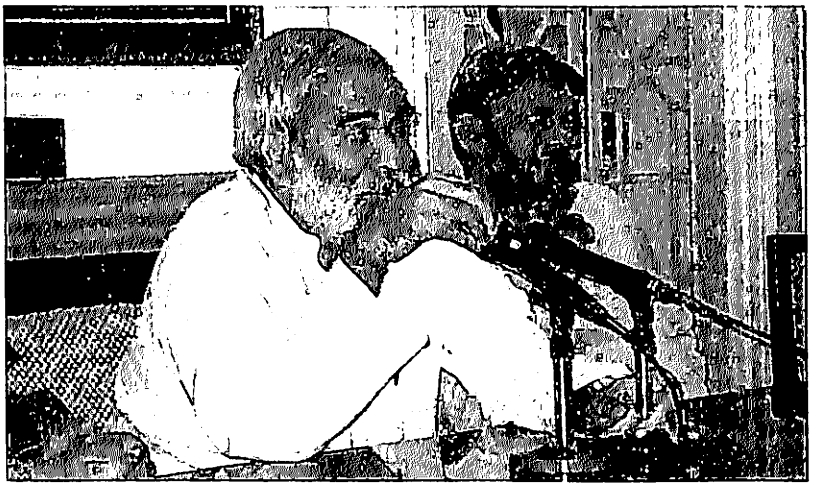

इसमें अभी काम करना जरूरी है, क्योंकि यमुना विकास के नाम पर अभी नये विनाश के बहुत से काम शुरू होंगे। हमारी सक्षम सरकार निरंकुश भाव से जल के लुटेरों और प्रदूषकों को सब कुछ पैसे देने वालो को छूट दे रही है। **'प्रदूषक भुगतान करें'** नई पर्यावरण नीति में प्रावधान है। ये प्रावधान अब सभी शोषक-प्रदूषकों को पसन्द आने लगे हैं। इसी के चलते यमुना के ऊपर का जल प्रदूषित हुआ। अब भूजल लूटने वाली कम्पनियां यहां कॉमनवैल्थ-खेल गांव के नाम पर खुले रास्ते से घुस कर अपनी कम्पनियों के व्यापार हेतु जल की लूट करना चाहती हैं।

यमुना के पेट दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ में यह घुसपैठ भविष्य के लिए खतरा बनेगी। इसे रोकने के लिए यमुना सत्याग्रह दिल्ली में शुरू हुआ। इसकी शुरुआत 18 अप्रैल 2007 के दिन गांधी बलिदान स्थल से हुई। उसी दिन देश भर से आये जल बिरादरी के साथियों ने संकल्प लिया था, जल के प्रदूषण और शोषण को रोकने हेतु सरकार से सत्याग्रह की पालना कराना है। यह सत्याग्रह देश भर में कुछ जगह बहुत सफल हुआ। यमुना में जारी है।

19 मई को पत्रकार बुलाये गए, उन्हीं से उनकी राय यमुना सत्याग्रह के विषय में सुनी। उनकी सभा के बाद यमुना के दोनों किनारों पर यमुना को मां मानने वाले जल सत्याग्रहियों की खोज शुरू हुई।

दिल्ली से बागपत, बड़ौत, कांधला, कराना, शामली, सहारनपुर होते हुए 23 मई 2007 को हथनीकुण्ड पहुंचे। उसी दिन 6 राज्यों से आये यमुना प्रेमियों का यहां सम्मेलन हुआ। फिर यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, सोनीपत के बीच यमुना किनारे के गांवों में होते हुए 26 मई 2007 को दिल्ली पहुंचे। 27 मई 2007 को दिल्ली में पदयात्रा आयोजित की गई और यमुना किनारे के दोनों तरफ सत्याग्रहियों की खोज को जारी रखते हुए 26 जून 2007 को दिल्ली से फरीदाबाद, मथुरा, आगरा तथा आगरा से दिल्ली विकास नगर, मसूरी, बरकोट, पुरूओला, यमुनोत्री से वापस यमुना के किनारे-किनारे 2 जुलाई 2007 को इलाहाबाद संगम पहुंचे।

इलाहाबाद मण्डलायुक्त के घर पर चार कलेक्टरों तथा सम्बन्धित अधिकारियों से बातचीत करके सरकारी पक्ष समझकर 3 जुलाई 2007 को पूरा दिन संगम पर लगाया। न्यायमूर्ति श्री गिरधर मालवीय जी से मिले, पत्रकारों से बातें कीं। यमुना के संकट को समझते हुए यमुना को **'मां'** का वास्तविक दर्जा दिलाने हेतु, समाज और सरकारी व्यवहार कैसा होना चाहिए, इस पर बातें करते वापस दिल्ली की तरफ मुड़े।

❑❑❑

यमुना को सदानीरा, निर्मल नदी बनायें

यमुना माँ के कब्जे हटवाकर अविरल निर्मल जल-धारा बनाने हेतु, 'यमुना-संसद' बनाएँ। यमुना को अब तक दिल्लीवासी शुरू से सदानीरा देखते थे। अब वही इसे नाले के रूप में देख रहे हैं। क्या यह सब हमारी आँखें देखने की इच्छुक हैं ? नहीं ! लेकिन अब हमें कोई दिखाना चाहता है।इसलिए अब हम ऐसा ही देखने को मजबूर हैं। नदियों को शोषक-प्रदूषक अभी तक केवल गन्दगी ढोनेवाली गाड़ी बना रहे थे। अब इसे नाला बनाना चाहते हैं। जो आज के बडे तथाकथित करना चाहते हैं, वहां होता हैं। यमुना के कुर्सिया घाट के सैकड़ों साल पुराने मन्दिर तोड़ दिये। लेकिन पहले अक्षरधाम मन्दिर को बनाने की स्वीकृति दी। अब इस मन्दिर वाले जो अपनी कीमत बढ़ाना चाहते हैं। इस हेतु अपने पास ही कॉमनवैल्थ खेलगांव कराना चाहते हैं। ये सब हो रहा है।

आज सरकार अपने साथ कुछ मनोदशा बदलने वाले मुद्दे उठाकर बड़ों को साथ लेकर पहले उनका स्वार्थ पूरा करती है। फिर अपना स्वार्थ पूरा करती है। आज पुराने प्राचीन मन्दिर-घाट सब टूटे, पर अक्षरधाम मन्दिर बनता जा रहा है। वह जो चाहते हैं, भाजपा से कराते हैं। कांग्रेस से भी करवाते हैं। सभी मिलकर यमुना के साथ खेल रहे हैं।

आज सरकार ऐसा इसीलिए कर रही है क्योंकि अब समाज, सरकार को कटघरे में खड़ा नहीं कर सकेगा। यमुना को नाला बनाना सुरक्षित हो जाये। सीमेंट-कंकरीट में पहले बांधें, फिर नाले का दर्जा दें। इसमें ठेकेदारों, इन्जीनियरों, नेताओं, बड़ी विदेशी कम्पनियों के स्वार्थ भी पूरे होंगे। सरकार भी सुरक्षित बची रहेगी। नाला तो मल ढोने के लिए ही होता है। आज पवित्र नदियों की जरूरत नहीं है। मल ढोने वाले नालों की ज्यादा जरूरत है। इसलिए यमुना को नदी नहीं, नाला बनना चाहिए। सरकार इसे एक दम से नाला नहीं बना सकती। ऐसा करने हेतु सरकार को कई स्वीकृतियां विभिन्न विभागों की लेनी पड़ेंगी। इसलिए अघोषित रूप से टुकड़ों-टुकड़ों में कब्जे करके इस नदी को नाला बनाना आसान है। यमुना को नाला बनाने से दिल्लीवासी सहमत हैं? तभी तो यह नाला बन रही है। यदि असहमत हैं तो खड़े होकर यमुना पर हो रहे निर्माण को रोकें। घर छोड़कर बाहर आयें। मां को बचायें ।

यमुना से उजड़े लोगों का भी उतना ही हक है जितना कि आज इस पर नया निर्माण करने वालों का है। यमुना की कच्ची बस्तियों के लोग तो सहजता

से हट गए। सरकार इन बसावटों से सहमत नहीं थी। सरकार ने इन्हें हटा दिया। अब दिल्लीवासी यमुना पर नए कब्जे से सहमत नहीं हैं। लोकतंत्र में लोक सर्वोपरि होता है। दिल्ली का लोक नए कब्जों को रुकवा दे। हमने अपनी कम वर्षा के क्षेत्र में वर्ष 2000 में सरकार पर दबाव डाल कर अलवर-जयपुर में पानी लूटने व प्रदूषित करने वाले कारखानों पर रोक लगवा दी थी। नयी सरकार ने उसी निर्णय को बदल कर 2004 में फिर वैसे कारखानों को स्वीकृति दी तो समाज ने न्यायालय में जाकर उनके लाइसेंस रद्द करा दिए। इसी प्रकार कुछ को सरकार और न्यायालय ने मिलकर घालमेल करके चलवाना चाहा तो फिर गाँव के लोगों ने बन्द कराने का जल सत्याग्रह शुरू किया और काम रुका। इसी प्रकार दिल्ली में भी यमुना पर चल रहे बड़े सभी अवैध कब्जों को रोका जाए।

आज की परिस्थिति में जलस्रोतों पर नियंत्रण रोकने का काम साझा बनाना होगा। पहले राज-समाज-महाजन ने मिल कर जल स्रोतों का निर्माण किया था। उपयोग समाज ने किया। देखभाल और मरम्मत भी समाज करता था। पानी की संरचना का कोई एक मालिक नहीं था। सब ही अपना मान कर

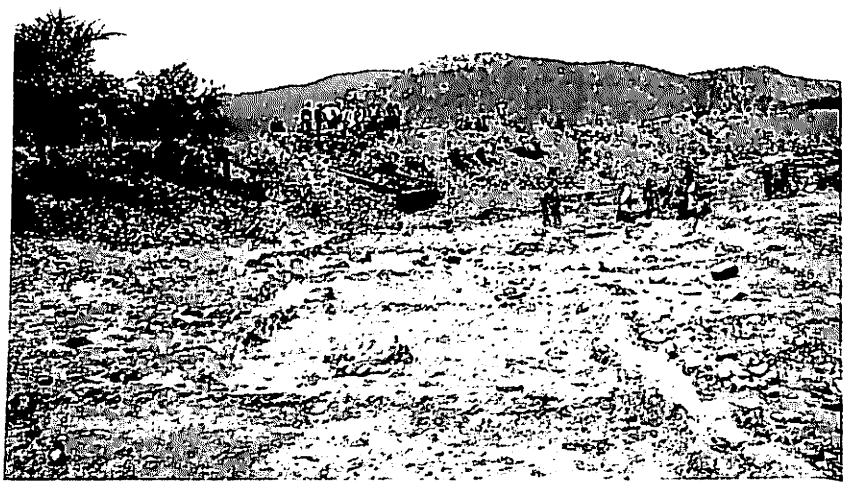

इनको बचाने में जुटे रहते थे। पानी पर कब्जा करना पाप था। आज उल्टा हो गया है। पानी पर कब्जा करके उससे पैसा वसूलने वाला विकसित है। जिस जगह पर जल सबसे अधिक प्रदूषित, वहीं विकसित शहर है। दिल्ली में यमुना सबसे अधिक प्रदूषित तो दिल्ली सबसे विकसित। जहां पानी की कमी के कारण आत्महत्याओं के लिए मजबूर किसान अधिक हैं, वही विकसित गांव और राज्य कहलाते हैं।

विकास की मार ने जलस्रोतों को समाज से छीनकर सबल को दिया है। सबल ने उसे बेच कर धन कमाया। कुछ राज्य को दिया? नहीं! राज्य से सब कुछ लिया ही, फिर भी राज्य को करदाता कहलाकर राज्य हितैषी बन गया। आज जो भी राज्य सरकार कर रही है, वह किसकी चाल है ? यह राज्य भी, राजनेता भी जानते हैं। राजनेता सबकुछ जानबूझ कर अनजान बनने में अपना हित समझते हैं । वही आज ये कर रहे हैं। सैक्टर रिफार्म के नाम पर जो कुछ किया, उसमें सभी जल संसाधन हमारे हाथों से निकल कर राज्य के बने। राज्य ने उन्हें सबलों को दिया। सबलों ने उन्हें बेच कर धन कमाया, कुछ सरकारी खजाने में कभी-कभी दिखाने के लिए दे भी दिया।

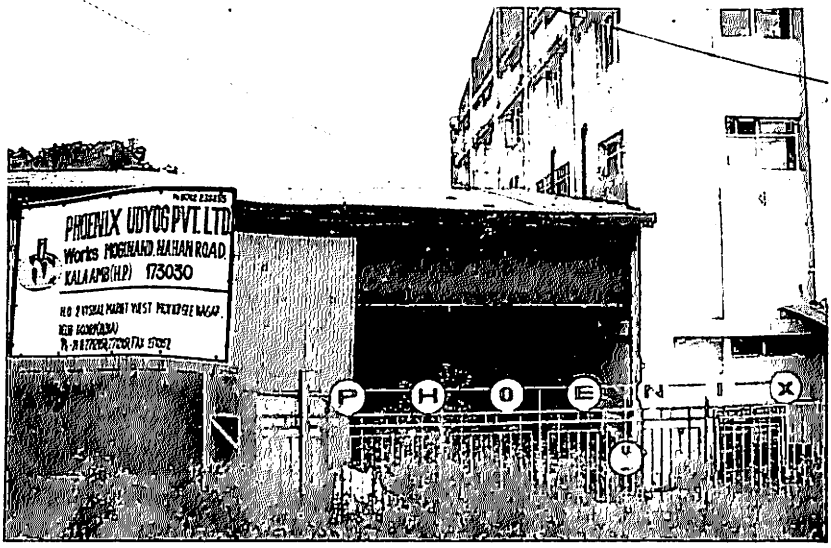

देशभर की सिंचाई जिन संरचनाओं से होती थी, आज वे कहां हैं ? किसके पास हैं ? कहां जा रही हैं? इनमें अधिकतर पर कब्जे किसके हो गये हैं ? कुछ बची हैं। वे प्रदूषित हो रही हैं। इनको प्रदूषित करने वाले ही बड़े हैं, लेकिन इनके किनारे के गरीब तो उजड़ जाते हैं। उनका सब कुछ टूट जाता है। बेघर हो जाते हैं। दूसरे कुछ चंद फिर बड़े और बड़े बनते जाते हैं। पानी की पवित्रता के नाम पर सरकार गरीबों को गन्दा कह कर हटाती है, बड़ों को बसाती है। गंदगी का नाम आज गरीब है। गरीब ही गंदगी पैदा करता है ? नहीं, गंदगी तो विकसित बड़े देश, बड़े लोग कर रहे हैं। गंदगी ही आज का विकास है। अधिक गन्दगी करने वाला, अधिक कब्जे करने वाला ही विकास का मापक है। अर्थात् प्रदूषण, शोषण और कब्जे ही आज का विकास है।

विकास ने गंगा-यमुना को नदी से नाला बनाकर समाज को बेपानी बना दिया है। मछुआरों को बेकार, किनारे के समाज को गन्ध सूंघने के लिए लाचार तथा इसमें नहाने और पीने वालों को बीमार बना दिया हैं। आज

के विकास ने हमारे समाज में चालीस प्रतिशत को केवल लाचारी, बेकारी बीमारी और गुलामी ही दी है। इनके कल्याण हेतु आज वह 27000 करोड़ रुपये की राष्ट्रीय रोजगार गारंटी के नाम पर खर्च बता कर यह भी बड़ों के पेट में जाने से रुकेगा तो ही अच्छा हो सकता है। वे अपनी पूरी पूँजी परंपरागत जल संरचनाओं के कब्जे हटवाने तथा उनको पुनर्उपयोगी बनाने पर ही खर्च करे। उन्होंने हमें पूर्ण भरोसा दिलाया। हमें उनकी बात पर विश्वास तो है, लेकिन उस दिशा में कुछ काम शुरू होगा, तभी कुछ बात बनेगी या वे लिखित नीतियां दस्तावेज बनायेंगे, तब हम मानेंगे।

सरकार को इस दिशा में मदद हेतु तालाबों से कब्जे हटवाने वाला उच्चतम न्यायालय का आदेश मददगार बन सकता है। वैसे तो यह सरकार स्वयं ही ग्रामीण विकास आन्दोलन चलाने की तैयारी कर रही है । इसमें एकमात्र जल संचयन का काम जरूरी अभियान बतौर शुरू करना चाहिए । आने वाली वर्षा के बाद ही इस काम का असर दिखाई दे सकता है। राजस्थान के बहुत से गावों ने अपने श्रम से अपने गांवों को पानीदार बनाया। परिणाम में बाढ़-सुखाड़ से मुक्ति मिली। गाँव के लोगों की जल लाचारी खत्म हुई।

शहरों से वापस गांव लौट आए। गांव में सब्जियां पैदा करके फिर शहर समाज को रोजगार और रोटी देने वाले बनने लगे। शहर की विकसित कहलाने वाली मशीनी जिन्दगी से अब मुक्त हवा में रहने लगे हैं मेरे गांववासी। देश की दूसरी जगहों पर भी ऐसा करने की प्रेरणा दे रहे हैं। दिल्ली के समाज को अरवरी नदी के समाज से सीखकर यमुना संसद बनानी चाहिए। वहां के समाज ने जिस प्रकार अरवरी नदी के क्षेत्र में विदेशी कम्पनियों को वहां आने से रोका है, उसी प्रकार की कोशिश दिल्ली निवासियों को करनी चाहिए। मैं तो यहां तक कहना चाहता हूं कि जिस प्रकार अरवरी नदी क्षेत्र के लोगों ने नदी को पुनर्जीवित किया है, उसी प्रकार यमुना किनारे के दोनों तरफ के लोगों को मिलकर यमुना को शुद्ध, स्वच्छ बनाने की कोशिश करनी चाहिए एवं नदी को नाला बनने से रोकना चाहिए।

आज यमुना किनारे के लोग भी ऐसा ही करें। यमुना को बचाएं। कब्जा करने वालों को रोकें। गन्दे नालों को साफ पानी वाली धाराओं में बदलवाने का सत्याग्रह करें। यमुना को यमुना मां बनाये रखने का सत्याग्रह शुरू करें।

❑❑❑

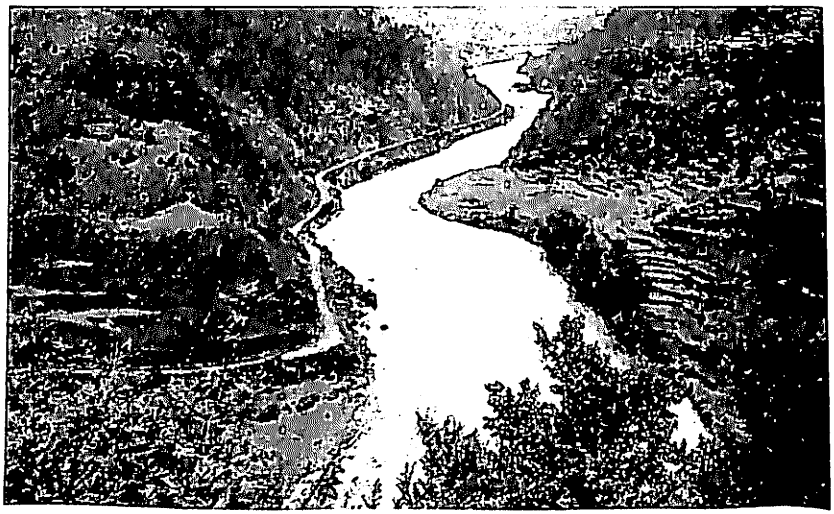

यमुना के लिए एक अपील

19 मई 2007

प्राकृतिक संसाधन के शब्दकोश में लगातार शब्द कम होते जा रहे हैं। पहले जमीन, फिर जंगल, जानवर और अब पानी। बीसवीं सदी में पानी व्यापार की चपेट में आ गया है। व्यावसायिक घराने अपने निर्वहन के लिए पानी को एक 'उपभोक्ता वस्तु' के रूप में देख-समझ रहे हैं। उन्हें मालूम है कि पानी के जितने हिस्से पर उनका नियंत्रण होगा, उनकी व्यावसायिक उम्र उतनी ही लंबी होगी। मीठे पानी के प्रमुख स्रोतों पर खरीद-बिक्री के प्रयास अब छुपे हुए रहस्य नहीं हैं। हमें यह समझना होगा

कि जैसे-जैसे जल संसाधनों पर नियंत्रण बढ़ेगा, पानी का संकट गहराता चला जाएगा। जल दोहन की वस्तु नहीं है। जल संरक्षण और उपयोग का शाश्वत-चक्र है। यह चक्र हमारे जीवन-क्रम को चलाता आ रहा है। हमारे पुरखों ने हमें जो समझ दी है, वह कभी जल को भोग्य वस्तु नहीं बनाती। इस समझ में कमी आ गई जिसके कारण आज हम जल-संकट जैसे नये-नवेले शब्दों को अपनी शब्दावली में जोड़ रहे हैं।

एक बड़ी समस्या यह हो गयी है कि अब जल संरक्षण को भी हमने सरकार का काम मान लिया है। हम अपने उपभोग लायक अन्न पैदा कर सकते हैं, तो जल-संरक्षण क्यों नहीं कर सकते? हमारी समझ में आयी इस खोट का ही नतीजा है कि सरकार अपने हिसाब से जल संरक्षण कर रही है और उस संरक्षित जल पर उद्योगों को प्राथमिकता दे रही है और पानी तथा हमारे बीच में तरह-तरह के व्यवधान पैदा कर रही है। पानी और हमारे बीच फासला लगातार बढ़ता जा रहा है। सरकार की सक्रियता का परिणाम यह हुआ है कि पानी मंत्रालयों, विभागों, दफ्तरों, फाइलों का विषय बन गया है और जहां भी ये तत्व शामिल होंगे वहां भ्रष्टाचार, लूट-पाट और मनमानी होना स्वाभाविक है। बाढ़-सुखाड़ अपनी जगह, पानी की समस्या अपनी जगह और सरकारी इंतजाम अपनी जगह। हम सभी दावे-प्रतिदावों में व्यस्त हैं।

पानी पर अपने समाज के एक बड़े हिस्से ने अपना हक छोड़ दिया है। हमारे जीवन में बहने वाला पानी सरकार द्वारा बनाई गयी नालियों और नहरों में पहुंच गया है। इसी का परिणाम है कि गंदे नालों की संख्या बेतहाशा बढ़ी है। इस सच्चाई से कौन इंकार करेगा कि अपशिष्ट पदार्थ नाले में बाद में पहुंचते हैं, पहले वे हमारे हाथ से गुजरते हैं। पानी के प्रति हमारा यह गैर-जिम्मेदाराना रवैया सबको भारी पड़ेगा। पानी को हम उपभोग की वस्तु समझेंगे तो हमें असमय काल-कवलित होने से कोई नहीं बचा सकता।

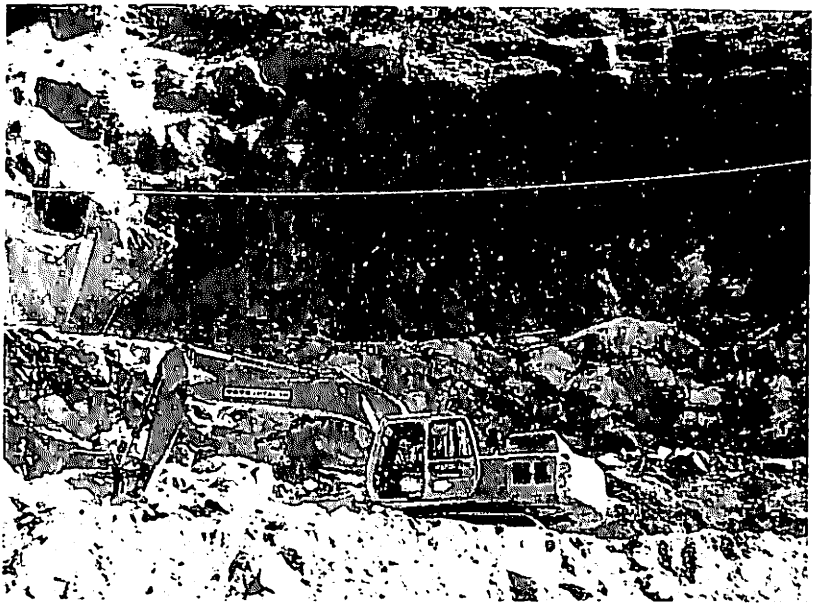

दिल्ली के भूभाग पर हृदय धमनियों की तरह बहनेवाली मां यमुना के साथ हमने कृतघ्नता का व्यवहार किया है। हमने यमुना को अपने चित्त से उतार दिया है। इसी का परिणाम है कि अब सरकारें योजनाबद्ध तरीके से उसे समाप्त कर देने के काम में जुट गई हैं। पहले ही हमारी गंदगी के भार से बोझिल यमुना का अस्तित्व मिटा देने का आखिरी प्रहार सरकार द्वारा होने ही वाला है। वह है कि इसके किनारों पर 10 हजार हैक्टेयर जमीन पर कंक्रीट का जंगल खड़ा कर दिया जाए।

अरबों-खरबों का व्यापार हो जाएगा और सरकार के खजाने में भी इतना पैसा आ जाएगा कि वह कुछ और फ्लाई-ओवरों को खड़ा कर विज्ञापन छपवा देगी। लेकिन इस व्यापार में यमुना ही खत्म नहीं होगी, खत्म हो जाएगी हमारी वह समझ जो अपनी नदियों से मां का रिश्ता रखती है। खत्म हो जाएगा वह भारतीयता का बोध जो तमाम संकटों में भी हमें अडिग रखता है।

यमुना के इस व्यवसायीकरण में हम यह भी भूल गये हैं कि एक बार के मुनाफे के लिए हम क्या-क्या गंवाने जा रहे हैं? हम यह भी भूल गये हैं कि बाढ़ और भूकंप दोनों प्राकृतिक क्रियाएं हैं और इंजीनियरिंग की कोई भी तकनीक इनका तोड़ नहीं हो सकतीं। यमुना के थाले में बनी तमाम संरचनाएं सिर्फ एक बाढ़ या भूकंप से धरती में समा सकती हैं। अगर हम अभी सचेत न हुए तो आनेवाली पीढ़ी सेटेलाइट चित्रों से यमुना को खोजेगी और पश्चाताप करेगी कि हमारे पूर्वज कैसे गैर-जिम्मेदार थे कि जीती-जागती नदी को उन्होंने मर जाने दिया?

यह अपील मैं दिल्ली में बैठकर लिख रहा हूं। यहीं 15 मई की सुबह एक अंग्रेजी अखबार में मैंने पढ़ा कि मैं यमुना बचाने के लिए दिल्ली में दो महीने से डेरा डाले हूं। इस अखबार ने जो शब्द प्रयोग किया है वह है 'रेस्क्यू ऑपरेशन'। मानो जंगल में आग लगी है और 'वाटरमैन' पानी लेकर आ पहुंचा है। मुझे यह सब थोड़ा अटपटा लगता है। मैं खुद में इतना सामर्थ्यवान कभी नहीं हो सकता कि इस तथाकथित 'आपदा राहत' में अकेले कुछ करूं और सफल हो जाऊं। मेरी समस्त क्षमताओं का स्रोत समाज में है। असली सामर्थ्य तो समाज में है, जिसने मुझे थोड़ा उपयोग करने का मौका देकर कृतार्थ कर दिया है।

मैं दिल्ली में हूं और यमुना के सवाल को लेकर ही हूं, लेकिन यह कोई राजेन्द्र सिंह का आपदा प्रबंधन नहीं है। यह समाज की वर्तमान जरूरत है। यमुना पर आपदा आयी है। इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता, लेकिन प्रबंधन सब समाज को, हमको, आपको मिलकर करना होगा। आप सबसे मेरी अपील है कि अपने-अपने स्तर पर जो कर सकते हैं, करें, मैं आपके साथ हूं। एक वादा मैं जरूर करता हूं कि मैं इसे बुझने नहीं दूंगा। लेकिन मेरे अकेले से क्या हो सकता है? यमुना के बारे में पांच मुख्य मांगें हमने रखी हैं, जो इस प्रकार हैं:

हमारी प्रमुख मांग

1. यमुना के दोनों किनारे के 10 हजार हैक्टेयर में कंक्रीट के जंगल की बजाय प्राकृतिक जंगल लगाया जाए। इसको पंचवटी के रूप में विकसित किया जाए और ऐसे वृक्ष लगाए जाएं जिनमें जल का वाष्पीकरण ज्यादा न हो और वह अपनी जड़ों में पानी को समेट कर रख सकें । जैसे- पीपल, गूलर, बरगद, कदम, आंवला आदि।
2. यमुना के दोनों तरफ से आनेवाली प्राकृतिक जल धाराओं को पुनर्जीवित किया जाए। इसमें पश्चिम दिशा से ज्यादा जल धाराएं आती थीं। इनमें से एक धारा राजस्थान के गुढ़ा-झांकड़ी गांव से चलकर हरियाणा होते हुए नरायणा, नजफगढ़ होती हुई वज़ीराबाद के पास आकर मिलती थी। इस नदी का नाम है- साबी। यह साबी नदी यमुना को सालभर जल पिलाती थी, लेकिन दुर्भाग्य से आज यह एक नाले में बदल गयी है। बाढ़ के समय यह यमुना के बाढ़ के पानी से नरायणा झील को भरती थी और बाद में बाढ़ उतर जाने

पर यह उसी पानी को यमुना में पुनः उड़ेल देती थी। इसके कारण यमुना का अविरल प्रवाह बना रहता था। इसलिए साबी और अन्य छोटी-बड़ी जल धाराओं को पुनर्जीवित किया जाए।

3. दिल्ली क्षेत्र में सामुदायिक वर्षाजल को संरक्षित करने हेतु पुराने तालाबों, बावड़ियों, झालरों और जोहड़ों को पुनर्जीवित किया जाए और दिल्ली रिज के जंगल में जहां भी संभव हो, वहां नयी जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया जाए तथा दिल्ली के अरावली के भूजल को संरक्षित, सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया जाए। ऐसी संरचनाओं से अलवर की मशहूर अरवरी नदी की तरह यमुना भी पुनर्जीवित हो जाएगी और इसे अविरल बहाव के लिए अन्य जल स्रोतों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

4. दिल्ली के पर्यटन, सभ्यता और संस्कृति के मूल में यमुना ही है, लेकिन इसके साथ हमारा रिश्ता धीरे-धीरे खत्म हो गया है। यमुना से हमारा संबंध केवल इतना रह गया है कि इसके ऊपर बने भारी भरकम पुलों से गुजरते हुए एक बार हम खिड़की से झांककर गंदे पानी को देखते हैं और पुनः अपनी दुनिया में लौट आते हैं। यमुना के किनारों पर पहले से स्थित घाटों को पुनर्जीवित किया जाए। जल और जंगल को केन्द्र में रखकर ही पर्यटन की संभावनाएं विकसित की जाएं।

5. यमुना के अविरल प्रवाह को बनाये रखने के लिए यमुना से सम्बन्धित पांच राज्यों ने मिलकर यमुना प्रवाह की सहमति बनाई थी। उसे सभी राज्य मानें और उस निर्णय को क्रियान्वित करें, जिससे यमुना में जल नियमित छोड़ा जाए। इसके लिए सभी संबंधित राज्य सरकारों को तुरंत आवश्यक दिशा-निर्देश केन्द्र सरकार जारी करे।

□□□

यमुना सत्याग्रह

जलस्रोतों पर नियंत्रण

नदियों पर कब्जा करके नालों में बदलने का काम अंग्रेजी हुकूमत ने किया था। जब नदी अपनी धारा बदलकर एक गांव को दूसरे किनारे पर बैठा देती थी, तब अंग्रेजों को राजस्व इकट्ठा करने में कठिनाई होती थी, इसलिए उन्होंने नदियों के तट बांधने शुरू किए। आजादी के बाद ये ही तटबंधन बाढ़-मुक्ति के नाम पर बांधे गये, लेकिन नदी दो पाटों के बीच बंध गई। उसके पानी में आने वाली मिट्टी पहले तो किनारों में जमा होती थी। तटबन्धों से नीचे जमने लगी। नदी का तट ऊपर उठना शुरू हुआ। फिर सरकार ने तटबंधों को तोड़कर शहरों को बचाना शुरू किया। 1978 की बाढ़ में पूर्वी दिल्ली बहुत नीचे थी उस तरफ तोड़ना या स्वयं टूटना खतरे से

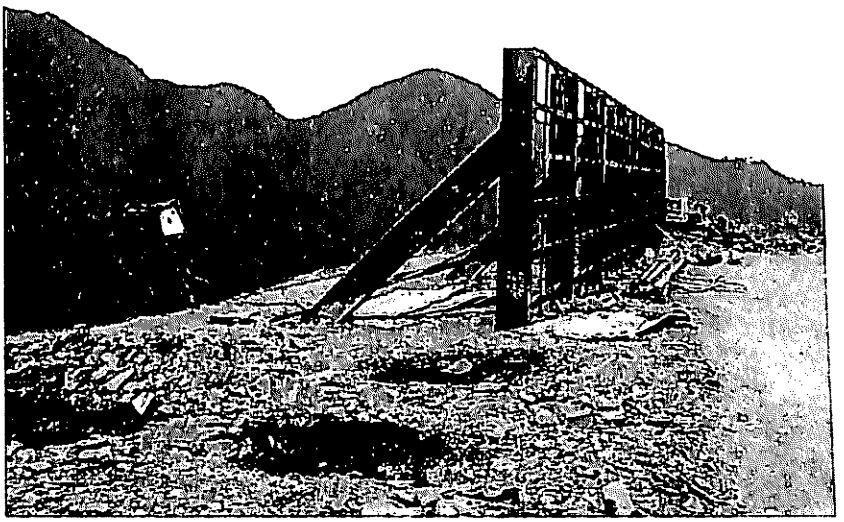

खाली नहीं था। इसलिए पश्चिम दिल्ली में मुखर्जीनगर, मॉडल टाउन, नजफगढ़ को डुबोकर ही सब्र कर लिया था। दिल्ली की 23 स्वच्छ जल धाराएं जो यमुना में आकर मिलती थीं, अब नाले में तब्दील हो गई हैं। आज वही अपने किनारे की सभी गन्दगी को ढोने वाली 'यमुना' मालगाड़ी बन गई है। इसका नया नाम अब कॉमनवैल्थ नाला बनने वाला है। दिल्ली के लोग यमुना दर्शन, यमुना स्नान सब भूल जाएंगे।

हमारे कार्यक्षेत्र राजस्थान के गुढ़ा-झांकड़ी गांव से आरम्भ होने वाली साबी नदी वजीराबाद में आकर यमुना की धारा को बढ़ाती थी। जब यमुना में बाढ़ आयी तो यह साबी वापस बहने लगती और नजफगढ़ झील को भरती थी और बाढ़ उतरने पर वह पानी उल्टा यमुना में चला जाता था।

मैं यमुना के डौला गांव में जन्मा था, सात साल की उम्र से पहले का मुझे याद नहीं तब तक मैं अपनी मां और दादी के साथ स्नान करने जाता था । जेष्ठ की दशमी, उसे हम गंगा दशहरा कहते थे। उस दिन अपने हमउम्र साथियों के साथ पैदल ही स्नान करने गया। बागपत घाट हमारे स्नान की जगह थी। यमुना में खूब डुबकी लगाकर यमुना रेती में खूब खेलते थे। पानी

और रेत दोनों ही समान आनन्ददायी थे। उस उम्र में हम रेत में घर बनाते थे, फिर पानी में जाकर नहाते थे। दुर्भाग्य से यह आनन्द आज हम अपने बेटे-बेटियों को नहीं दे सकते। बदलना ही गौरव की बात लगती है ? तो जरूरी बनाए, लेकिन क्या दिल्लीवासियों को अब यमुना नहीं चाहिए ? यह बात सही है कि ऊपर से देखने पर यमुना आज दिल्ली की जीवन-रेखा नहीं दिखती, लेकिन बहुत कुछ बिगड़ने के बावजूद भी यह दिल्ली की धरती का पेट पीने वाले पानी के लिए भरती है। दिल्ली में बन रहे बहुमंजिली इमारतों को गंगा का पानी पिलाने का सपना किसी भी दिन टूट जाएगा। सोचो, तब दिल्ली का क्या होगा ? क्या दिल्ली को अपने पानी पर जीने का कोई सपना नहीं देखना चाहिए ?

दिल्ली के करोड़ों लोग दूसरों के पानी पर जीने के विशेषज्ञ बने रहना चाहते हैं या अपने पानी पर जीने का गौरव पाना चाहते हैं । अपने पानी पर जीने का गौरव दिल्ली को मिल सकता है, दिल्ली की सीमाओं में आने वाले वर्षा के जल को सहेज कर दिल्ली के नीचे वाले बड़े भूजल भण्डारों को भरें और कुछ वर्षा जल को धरती के ऊपर भी इकट्ठा करें। यमुना के भराव क्षेत्र में हो रहे नये नियंत्रण और निर्माण को तुरन्त रोकें और हटावें। यमुना का नियंत्रण हटे बिना दिल्ली अपने पानी पर कभी जीवित नहीं रह सकेगी। दिल्ली को पानीदार बनने के लिए यहां यमुना की दस हजार हैक्टेयर भूमि को तीस हजार रुपये वर्गमीटर की दर से बिल्डर्स को बेचकर दिल्ली बेपानी और बेआबरू बनेगी। अब दिल्लीवासियों को विचारना है कि यमुना को नदी रखना है या कामनवैल्थ नाला बनाना है ? पानीदार बनना है या बेपानी रहना है ? ये सब निर्णय अब जल्द ही दिल्लीवासियों को मिलकर करने चाहिए। किसी खेल के नाम पर नदी को नाले में तब्दील करना है या दिल्ली का गौरव कायम रखने हेतु यमुना को दिल्ली की मां बनाकर रखना है। यमुना मां हेतु अब दिल्ली को जागकर, श्रमशील बनकर यमुना के कब्जे हटवाने हेतु श्रमदान में जुटना चाहिए। यमुना के मेरे गांव डौला के 17 तालाबों के

कब्जे उच्चतम न्यायालय के आदेश के बावजूद नहीं हटाये गये। फिर हम सबने मिलकर कब्जे हटाये और तालाबों को बनाया। अब मेरा गांव पानीदार बन रहा है।

दिल्ली सरकार एक तरफ जलसंरक्षण हेतु अनुदान दे रही है। दिल्ली का समाज भी दिल्ली की यमुना के कब्जे हटवाकर यमुना की सफाई करवाकर इसे पानीदार बनाये तो मैं भी दिल्लीवासियों के साथ यमुना में श्रमदान करने हेतु तैयार हूं। दिल्ली में यमुना से गरीबों के कब्जे सरकार ने हटवाए। गरीब मिलकर यमुना के वास्तविक लुटेरों और प्रदूषकों के कब्जे हटवाने हेतु खड़े हों।

आज महात्मा गांधी जिन्दा होते तो दिल्ली में यमुना किनारे रहते और गरीबों को उजाड़कर अमीरों को बसाने के विरुद्ध सत्याग्रह करते। हम सब मिलकर यमुना को यमुना मां बनाए रखने का आग्रहपूर्वक सत्कर्म करने हेतु जुटना चाहिए। यही यमुना सत्याग्रह यमुना और दिल्ली के गौरव को कायम रख सकता है।

❑❑❑

यमुना सबकी है।

"यमुना-गंगा मेरे लिए नहीं है। ये तो सारे समाज की हैं। इनमें बहने वाला सारा पानी सारे समाज का साझा है। मैं तो इनके एक लोटा जल का हकदार हूँ। इसी में प्रतिदिन मेरा मुँह धुल जाता है। आज पूरा लोटा खाली हो गया है, लेकिन मेरा मुँह नहीं धुला"—यह बात राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने उस वक्त कही, जब वे आनन्द भवन, इलाहाबाद में कांग्रेस के राष्ट्रीय सम्मेलन के दिनों में प्रातः मुँह धो रहे थे। उसी समय किसी जरूरी

काम की बात-चीत के बीच दुखी होते हुए बापू ने जवाहरलाल नेहरू जी से जल के अनुशासित उपयोग की चिन्ता व्यक्त की थी।

आज हमारे किसी नेता को जल और नदियों की ऐसी चिन्ता क्यों नही है? कोई भी बापू का नाम लेने से नहीं चूकता, लेकिन उनकी पानी और प्रकृति की चिन्ता किसी को नहीं छूती। नेता लोग अपने-अपने राज्यों के लिए पानी मांगते रहते हैं। मतदाताओं को रिझाने हेतु भी ये सब पानी की राजनीति करने में जुटे हैं। कोई भी समाज को पानी सहेजने हेतु तैयार करने की राजनीति नहीं करता। जहां कोई नेता ईमानदारी से पानी का काम करता है, उसे समाज बिना प्रचार के अपना नेता मान लेता है। उन्हें मतदाता अपना प्रतिनिधि चुन लेते हैं।

भारतीय समाज बहुत सजग है। इसे जब जो करना होता है, वह कर दिखाता है। अभी उत्तर प्रदेश में वही किया, जो वह चाहता था। वर्ष 2004 में भी भारत की जनता ने वही किया था, जो वह करना चाहता था। आगे भी वह ही अपनी इच्छा को अपने मत से पूरा कर सकता है। लेकिन मत पाने वाला नेता वह नहीं करता जो मतदाता चाहते हैं। लोकतन्त्र में लोक ऊपर रहता है। लेकिन आज नेताओं ने लोक को नीचे बैठा दिया। बहुमत पाने के लिए ही जनता को ऊपर दिखाता है। शेष समय में जनता की नहीं चलती। जिसे भी वह चुनता है, वही ज्यादातर समाज की अपेक्षायें पूरी करने में कमजोर साबित होता है।

अभी यमुना किनारे बसे लाखों लोगो के घरों को सरकार ने छुड़वाया और वे यमुना को माँ मानकर अपना घर छोड़ दिये। वे चाहते हैं, जो जमीन उन्होंने छोड़ी है, उसमें वृक्षारोपण या खेती की जाए। वे भी इस क्षेत्र में वृक्षारोपण करने हेतु आगे आने के लिए तैयार हैं। **हम लोग राष्ट्रमंडल खेल के विरोधी नही हैं। राष्ट्रमण्डल के खेल तो हमारी सरकार बहुत**

सुन्दर तरीके से दूसरी जगह पर द्वारका, असोला, सफदरजंग हवाई अड्डा, लोधी कॉलोनी जैसी जगह हैं, वहां पर कॉमनवेल्थ खेल गांव बनाये। ऐसी बहुत बड़ी-बड़ी जगह हमारे देश में हवाई अड्डे के पास ही मौजूद हैं। राष्ट्रमण्डल खेल यमुना के पेट को नष्ट करके कराना राष्ट्रहित में नहीं है।

यमुना के तटों पर प्रकृति के विरुद्ध सीमेन्ट-कंकरीट का जंगल चन्द बड़ों के लिए खड़ा करना राष्ट्र-विरोधी है। महात्मा गांधी आज जीवित होते तो लाखों लोगों को बेघर करके कुछ के घर नहीं बनने देते। वे यमुना को 'यमुना मां' बनाये रखने हेतु सत्याग्रह करते। आज जो भी बापू को मानने वाला होगा, वह भी इस रास्ते को अपनायेगा। यमुना किनारे बापू की समाधि है। यमुना में पहले तो सरकारों और समाज के कुछ ऐसे स्थानों की श्रद्धा और आस्था थी। इसीलिए यमुना को पवित्र मानकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व अन्य महान नेताओं की समाधि इसके किनारे बनाई गई थी। अब

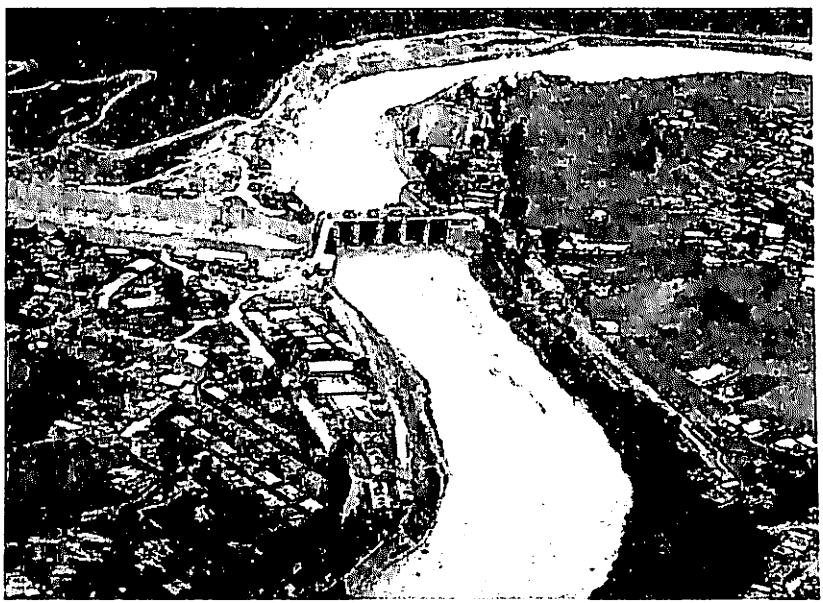

सरकार में यमुना के प्रति और महात्मा गांधी के प्रति यह आस्था नहीं है। इसीलिए यमुना के तट के तीर्थों को नष्ट करके मॉल, पांचसितारा होटल आदि बनाने का काम सरकार ने शुरू करवा दिया है।

भारतीय समाज आंखों से देखकर जागता है, इसलिए यमुना के साथ हो रहे अन्याय के विरुद्ध कोई बोल नहीं रहा है। जब दोनों तरफ अट्टालिकायें खड़ी हो जायेंगी, तब कोई कुछ बोलना और करना शुरू करेगा, जिसका कोई मतलब नहीं होगा। शुरू होने से पहले अन्याय रोकना अच्छा होता है। यमुना के किनारे दिल्ली का पेट पानी से भरने वाली जगह को बचाने हेतु दिल्लीवासियों को जगना चाहिए। अगली आने वाली पीढ़ी का और अपना सब सुख हम आंखों के सामने नष्ट नहीं होने दें, इस हेतु यमुना-सत्याग्रह की तैयारी करनी होगी।

यमुना सबकी मां है। हम सब तैयार होंगे तभी कुछ शुरू होगा। यमुना को लूटने तक हम प्रतीक्षा नही कर सकते। अभी आज हमारा मन जितना चाहता है, उतना हम यमुना को बचाने का काम शुरू करें। यमुना की छाती

पर चल रहे बुल्डोजर रुकवाएं। यमुना की खाली जगह में 1 अगस्त 2007 से वृक्षारोपण शुरू हो गया है। दिल्ली के नेता, अधिकारी, व्यापारी सब आकर प्रतिदिन पेड़ लगायें।

अब यमुना में बने मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों को रोककर यमुना में पड़ते गन्दे नाले ठीक करने का काम करने की जरूरत है। यमुना को दूर से मिलाने वाले जल क्षेत्रों में जल संरचनाओं का निर्माण शुरू कर सकते हैं। यमुना के खाण्डवप्रस्थ क्षेत्र अरावली में चैकडैम, जोहड़, तालाब बनाकर भूजल संकट के समय हेतु सुरक्षित क्षेत्र बना सकते हैं।

उक्त सभी काम दिल्ली की राजनैतिक पार्टियां स्वयं आज ही शुरू करें। राजनैतिक पार्टियां मतदाताओं को घुमाकर केवल मत लेने का काम कब तक करती रहेंगी? अब जो यमुना को मां बनाने का काम करेगा, उसे ही मतदाता मत देगा। अब मतदाताओं को समझना होगा कि कौन उन्हें घुमा रहा है? कौन हमारे जीवन और हम सब की चिन्ता कर रहा है ? यमुना को बिल्डर्स को सौंपना, यमुना का जीवन नष्ट करना है। दिल्लीवासियों का जीवन जल का हक छीन रहा है। दिल्लीवासी अपनी जागरूकता का प्रमाण प्रस्तुत करेंगे और अपनी यमुना को बचाने हेतु आज जुटेंगे।

ऊपर की बातें बहुत कठिन दिखती हैं, क्योंकि आज तो दिल्ली के राजनेता दिल्लीवासियों को टैंकर से पानी पिलाने में दिलचस्पी रखते हैं। टैंकर सप्लाई से उनका वोट पक्का होता है। राजनेता आज टैंकर से पानी पिलाकर अपने मतदाता को गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं। जब वे दिल्ली के टैंकर सप्लायर के विरुद्ध जायेंगे तो पानी का टैंकर रुक सकता है। राजनेताओं को पानी व पैसा और वोट मिलने लगे तो यमुनावासियों को पानीदार बनाने में किसी भी नेता की दिलचस्पी नहीं होगी। आज मत पाना और मतदाताओं की जेब खाली करवाना, ऊपर से उनका दाता बनना यह सभी राजनैतिक पार्टियों

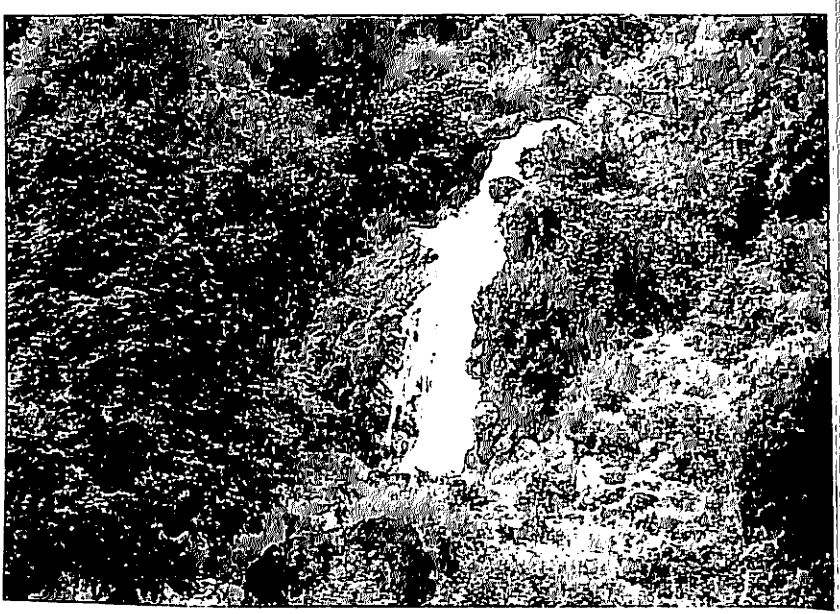

का एकमात्र काम बन गया है। यमुनावासियों को स्वयं तय करना है। स्वयं को पानीदार बनाने हेतु यमुना को अपने लिए बचायें।

आज हमें नमक सत्याग्रही की तरह यमुना सत्याग्रही बनना है। यमुना बचाने हेतु सरकार और समाज दोनों को तैयार होना चाहिए। **यमुना सबकी है।** इसे बचाने हेतु सब जुटें। दलगत राजनीतिक से ऊपर उठकर लोकतन्त्र के सिपाही बनकर लोक को यमुना के लिए जगाएं। यमुना बचेगी, दिल्ली बचेगी। यमुना शुद्ध सदानीरा बनेगी। भारत सुखी-समृद्ध बनेगा।

❑❑❑

यमुना-सत्याग्रह तैयारी प्रक्रिया

राष्ट्रीय जल बिरादरी ने 19 मई 2007 को जल संवाद और समाधान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी दिल्ली में आयोजित की। इस संगोष्ठी में देश भर के मीडियाकर्मी, जल मित्रों, किसानों, पानी प्रेमियों, प्रकृति को समझने वालों तथा कुछ चन्द इंजीनियरों, अधिकारियों, राजनेताओं तथा मरी-सूखी नदी को सदानीरा बनाने वाले अर्जुन गुर्जर जैसे 200 से अधिक जल प्रेमियों ने भाग लिया। इसके अलावा मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह, केन्द्रीय जल बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष श्री परितोष त्यागी,

डा. मनोज मिश्र, द्विजेन्द्र कालिया जी तथा विविध संस्थाओं के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे। इस जल संवाद में सुरेश बाबू, पर्यावरण विज्ञान केन्द्र ने शुरुआत की।

सुरेश बाबू ने अपनी यमुना के शोध परिणामों के बारे में बताया कि यदि यमुना को प्रदूषित होने से नहीं रोका तो दिल्ली में सबसे पहले पानी का अकाल पड़ेगा, क्योंकि यमुना का 80 प्रतिशत पानी दिल्ली अपने ऊपर खर्च कर रही है। उन्होंने कहा कि हमें यमुना को शुद्ध करने का कोई उपाय करना होगा।

द्विजेन्द्र नाथ कालिया, दिल्ली विश्वविद्यालय : इन्होंने कहा कि यमुना के प्रति दिल्ली शहर का व्यवहार अच्छा नहीं है। पिछले 40 सालों में दिल्ली ने बहुत तरक्की की है, लेकिन वे यमुना नदी को भूल गये और उसमें बड़ी कम्पनियों का गन्दा पानी तथा शहरों का सीवेज छोड़ा जाने लगा, जिस कारण यमुना नदी बहुत गन्दी हो गई है। हमें अपने आप नये सिरे से जानना होगा और नदी की अपनी आवश्यकता भी जाननी होगी। आपका जो भूमिगत जलपूर्ति (अन्डर ग्राउंड वाटर सप्लाई) है, इसका सबसे अच्छा उदाहरण तो दक्षिण में है। दक्षिण में पानी न केवल खारा हो गया बल्कि

उसका सतही जल भी नीचे चला गया है, कहीं-कहीं सूख भी गया है। अतः हमें इससे सीख लेनी चाहिए कि हम अपनी यमुना नदी के प्रति सचेत नहीं हुये तो यमुना पूरी तरह से मर जायेगी।

दीवान सिंह जी ने कहा कि यमुना नदी की जो परेशानी है, जब तक यह हम सब की परेशानी नहीं बन जाती, तब तक हम यह लड़ाई नहीं जीत सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्रश्न अब यह है कि हम यमुना को किस तरह से शुद्ध बना सकते हैं ? यह परेशानी सबसे पहले दिल्ली को समझनी चाहिए, क्योंकि दिल्ली इस देश की राजधानी है और जिस हिसाब से दिल्ली चलती है, उसके साथ ही पूरा देश चलता है। प्रो. विक्रम सोनी जिन्होंने यमुना पर गहन अध्ययन किया है, उन्होंने कहा कि यमुना पूरी दिल्ली को पानी दे सकती है, अगर हम इसके नदी तल (रिवर बैड) को बचाकर रखें।

आज दिल्ली शहर बोझ है पूरे देश के ऊपर। हमें ग्रामीणों को इज्जत देनी पड़ेगी, क्योंकि गांव वालों पर ही शहर वाले निर्भर हैं। उनको हमें स्वाभिमान देना पड़ेगा और उनको कहना होगा कि आप ही हो जिनके

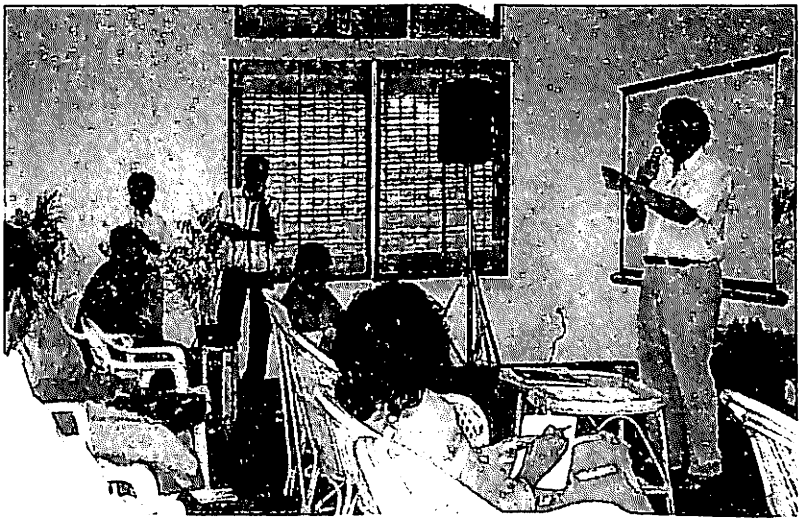

कारण देश जिन्दा है। हम तो देश के ऊपर बोझ हैं। अन्त में कहा कि अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो देश को बर्बाद होने में 5-10 साल ही लगेंगे ।

यमुना पानी के कारण यमुना नहीं बनी, यमुना के किनारे बसे लोग, उसके किनारे लगे पेड़-पौधों के कारण यमुना, यमुना बनी है। आज के संवाद का उद्देश्य है कि ये जल संकट है क्या ? क्यों बना ? कैसे बना ? कब से शुरू हुआ ? और इसके समाधान के कुछ उपाय हैं क्या ? जिन्होंने इसके कुछ उपाय अपने हाथों से किये हैं और जिन्होंने इसके उपाय अपने मन और मानस से किये हैं। ऐसे कुछ साथी इस बैठक में बैठे हैं, ऐसे लोग अर्जुन, रूडा, राधु जिन्होंने एक अपना उजड़ा गांव नहीं बल्कि आस-पास के गांवों को भी बसाया। केवल अपना गांव नहीं बसाया, अपनी नदी को भी जिन्दा किया। वो नदी अभी भी जिन्दा है।

उसकी अपनी एक संसद बनायी और वह संसद कैसे काम करती है? ये दिल्ली के लोग सीख सकते हैं, अर्जुन की अरवरी नदी से, उनकी बातों से। दूसरी तरफ नदी के किनारे बसे वो लोग जो नदी को नदी मां की तरह बनाकर देखना चाहते हैं। तीसरी तरफ वो लोग जिन्होंने एक राज्य में वैसी दृष्टि, वैसी नीति

देने की कोशिश की। मेरे गांव में जो गरीब से गरीब इंसान को पानी मिल सके तो मेरे राज्य की जल नीति क्या होगी। जब 2002 में जलनीति बनी उस समय मध्यप्रदेश एक मात्र ऐसा राज्य था, जिसने यह कहा कि ''अपने राज्य में पानी का निजीकरण नहीं करेंगे, सामुदायीकरण करेंगे।

परितोष त्यागी, पूर्व अध्यक्ष, केन्द्रीय जल प्रदूषण बोर्ड ने कहा ''भारत में पर्याप्त जल बरसता है, लेकिन उसके साढ़े छः प्रतिशत पानी का ही हम ठीक से उपयोग कर पाते हैं। हमें अपने जल संसाधनों को ठीक से प्रबन्धन करने की जरूरत है, अभी तक जल प्रबन्धन हुआ है, उसमें कुछ खामियां जरूर रह गई हैं, उससे हमें सीखना चाहिए।''

श्री दिग्विजय सिंह, पूर्व मुख्य मंत्री, (मध्य प्रदेश) ने बताया ''हमें प्रकृति के रिश्तों को मजबूत व गहरा मानते हुए ही देश का जल प्रबन्धन करना चाहिए और पानी के व्यापार की इस देश को जरूरत नहीं है। पानी प्रकृति-प्रदत्त वस्तु है। इस पर गरीबों का भी समान हक है, गरीबों को बिना पैसे खर्च किये यह जल मिलना चाहिए।'' सभा की अध्यक्षता कर रहे अर्जुन गुर्जर, अध्यक्ष अरवरी संसद ने बताया कि जिस तरह से हमने अपने बेपानी गांवों को पानीदार बनाया और एक मरी-सूखी नदी को सदा नीरा बना दिया। उसी तरह देश भर का समाज व सरकार मिलकर देश को पानीदार बना सकते हैं। उन्होंने बताया कि यही एक रास्ता है जिससे देश की ज्वलनशील पानी की समस्या दूर की जा सकती है।

मनोज मिश्र ने कहा कि यमुना का ग्राउन्ड वाटर खत्म हो गया है। नदी के तट की 10,000 हैक्टेयर जमीन हर हाल में खाली रखी जाए, जिससे पानी रीचार्ज होता रहे। दोनों किनारों पर तरह-तरह के पेड़ लगा दिये जाएं तो काफी हद तक पर्यावरण बचाया जा सकता है। गरीबों की 11280 झोपड़ियां तो हटा दी गईं, पर अमीर लोगों को कौन हटाएगा? सफाई कार्य से यमुना के जल को

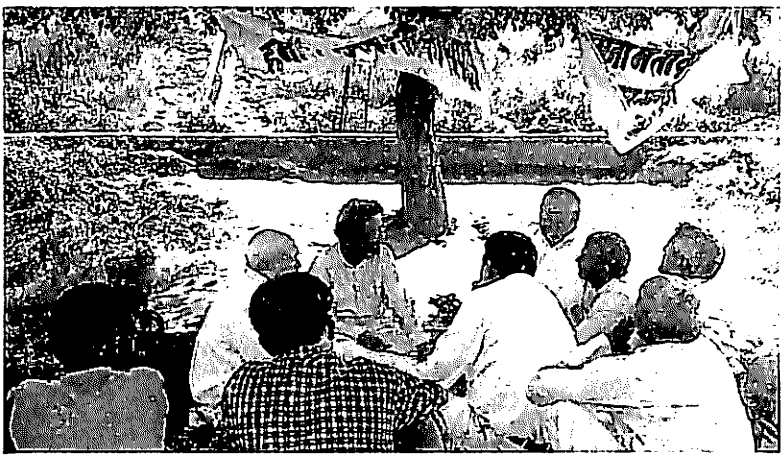

नई सुंदरता दी जा सकती है। यमुना का जल पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों व लोगों के लिये सुरक्षित किया जाये।

"अर्जुन गुर्जर की अनुभूति जन जल जरूरत पूरी करने वाले समय-सिद्ध सफल प्रयोग की कहानी कहती है। इस देश की कोई भी राज्य सरकार और भारत सरकार जहां इस तरह से पानी का प्रबन्धन करेगी, वहां की नदियां और समाज सदानीरा बना रहेगा। जहां-जहां पर अभी तक ऐसे प्रयोग हुए हैं, उन स्थानों पर जल संकट का समाधान हो गया है। जिस सरकार ने ऐसे कामों का आदर किया है, वहां पर यह कार्य अपने आप चल निकला है, लेकिन दुःख की बात है कि राज्य सरकारें इस कार्य को आगे नहीं बढ़ाती हैं। इस समय-सिद्ध सफल अनुभवों के विपरीत कार्य कर रही हैं।"

अलवर (राजस्थान) में जहां पर यह जल संरक्षण हुआ, वहीं पर राजस्थान सरकार ने पानी की लूट करने एवं प्रदूषण करने वाली कम्पनियों को स्वीकृति प्रदान कर दी है। जब वहां के लोगों ने इसका विरोध किया तो सरकार ने उन्हीं पर हमले करने शुरू कर दिये - ये ऐसे अनुभव समाज को स्वयं जल संरक्षण की अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में बाधक बनते हैं।

हमें आज जल की जरूरत है, जल संरक्षण की हकदारी समाज को देवें, जिससे समाज अपनी जिम्मेदारी और ईमानदारी से धरती का पेट पानी से भर सके। इस बात को पूरे देश की सभी राज्य सरकारों व भारत सरकार को समझना चाहिए।

अन्त में सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ कि अरवरी नदी में समाज ने जिस तरह काम करके अरवरी नदी को पुनर्जीवित किया, पानी की लूट और प्रदूषण से बचाया, वैसा ही यमुना पर काम करना चाहिए, क्योंकि यमुना में इस समय वो सब समस्याएं विद्यमान हैं, जो देश भर की सारी नदियों में मौजूद हैं। सर्वसम्मति से लिए गए निर्णय के अनुसार अगले दिन से ही यमुना पर कार्य शुरू कर दिया गया। पहले दिन कार्यकर्ताओं के साथ बैठक करके तैयारियां की गईं तथा अगले दिन से ही यमुना सत्याग्रह यात्रा शुरू हो गई। दिल्ली से यमुना सत्याग्रह यात्रा शुरू होकर सबसे पहले बैठक बागपत (उत्तर प्रदेश) में हुई। बागपत की बैठक का आयोजन पश्चिमी उत्तर प्रदेश की जल बिरादरी के समन्वयक श्री एस. राजू ने किया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के पत्रकारों के साथ "भगत जी " के घर पर संवाददाताओं का सम्मेलन हुआ। इसके बाद यमुना तट के घाट पर जाकर यमुना के किनारे लोगों के साथ संवाद हुआ।

❑❑❑

यमुना यात्रा की एक झलक

यमुना में प्रकृति-प्रदत्त पानी सबके प्राण हैं। राज्य, समाज और सृष्टि सबका इस पर समान हक है। जीवन का आधार जल किसी एक व्यक्ति और किसी एक कम्पनी की बपौती नहीं है। सब के जीवन **'जल'** को किसी भी कम्पनी के हाथ देना या प्रदूषित करना राष्ट्रहित में नहीं है। जल जीवन के लिए **'सत्य'** है। जल बिरादरी अपनी सरकार से इस **'सत्य को स्वीकारने का आग्रह'** कर रही है। हम सब यमुना जल बिरादरी से जुड़े हुए हैं, इसलिए जल को स्वयं समझकर, दूसरों को भी समझाते हुए और स्वयं जल सहेजने, शुद्ध करने हेतु दिनांक 20 मई से 4 जुलाई 2007

तक **'सत्य'** को मनवाने का **'आग्रह'** पूरे समाज के सामने रखने, यमुना को शुद्ध सदानीरा बनाने हेतु दिल्ली से बागपत, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, हथनीकुण्ड, आगरा, उत्तरकाशी, संगम इलाहाबाद तक **'सत्याग्रह तैयारी यात्रा'** निकाली गई।

इस यात्रा में शामिल राज्यों के प्रतिनिधि :

1. श्री राजेन्द्र सिंह (जल बिरादरी, अध्यक्ष, नई दिल्ली)
2. श्री रमेश शर्मा (दिल्ली)
3. श्री दीवान सिंह (दिल्ली)
4. प्रोफेसर एस. प्रकाश (उत्तर प्रदेश)
5. डॉ.पी.के.शर्मा (हिण्डन बचाओ संयोजक)
6. श्री ओंकारेश्वर सिंह (दिल्ली)
7. श्री महावीर त्यागी (हरियाणा)
8. श्री शकील अहमद (उत्तर प्रदेश)
9. श्री संजीव सिंह चौहान (हिमाचल)
10. श्री सुरेश राठी (हरियाणा)
11. श्री टेकचन्द (उत्तरांचल)
12. श्री यजमुनि जी (उत्तर प्रदेश)
13. श्री विनोद कुमार (उत्तर प्रदेश)
14. श्री प्रभुलाल सालवी (राजस्थान)
15. श्री सलीम खान (राजस्थान)
16. प्रो. द्विजेन्द्र कालिया (दिल्ली)
17. श्री ललित शर्मा (उत्तर प्रदेश)
18. श्री प्रदीप कुमार (दिल्ली)
19. सुश्री ईरीना सलिना (फ्रान्स)

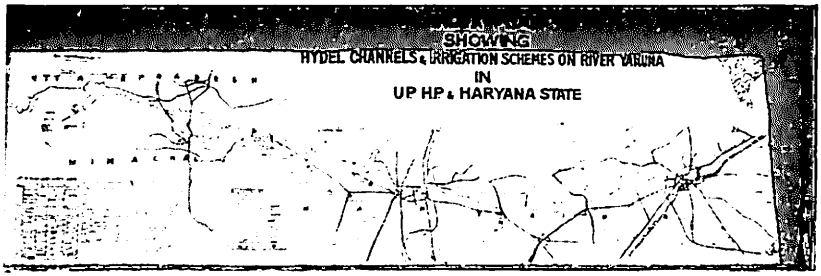

यह पदयात्रा यमुना तट से शुरू करके यमुना की आत्मा को शुद्ध करने का आह्वान है। सरकार ने यमुना को आज जहर पिलाना शुरू कर दिया है। जो मां हमें पानी देती है, आज उस मां का बुरा हाल है। यमुना हमारी मां है, वह मां की तरह बहनी चाहिए। अगर यमुना को बचाना है तो यमुना के कैचमेन्ट एरिया में तालाब, जोहड़, बांध, एनिकट बनाकर यमुना को बचाया जा सकता है।

जल संरक्षण और उपयोग का शाश्वत-चक्र है। यह चक्र हमारे जीवन-क्रम को चलाता आ रहा है। हमारे पुरखों ने हमें जो समझ दी है, वह कभी जल को भोग्य-वस्तु नहीं बनाती। इस समझ में कमी आ गई, जिसके कारण आज हम जल-संकट जैसे नये-नवेले शब्दों को अपनी शब्दावली में डाल रहे हैं।

यमुना और गंगा नदी संकट में हैं। दोआब क्षेत्र की पेयजल व्यवस्था इन दोनों नदियों पर टिकी है। विदेशी कम्पनियां विरासत को हड़पना चाहती हैं। इसकी शुरुआत देश की राजधानी से हो चुकी है। कोकाकोला और पेप्सी जैसी विदेशी पेय पदार्थ कंपनियों को ज्यादा पानी की जरूरत है। सबसे ज्यादा खतरा विश्व बैंक से है। सौंदर्यीकरण और कॉमनवैल्थ-खेल गांव जैसे कार्यक्रम की आड़ में भारत के सबसे अधिक जलधारण करने वाले गंगा-यमुना के बीच के क्षेत्र दोआब पर कब्जा करने की चाल चली जा रही है। जल-नीति में पानी का मालिकाना हक दिए जाने की घोषणा

हो चुकी है। अब इसके क्रियान्वयन का दौर शुरू हो रहा है। उस नीति को कार्य-रूप दिया जा रहा है। केन्द्र और राज्य सरकारों को आगाह किया कि पानी पर सभी का साझा हक है। सरकार जल-नीति तय कर पानी के निजीकरण को रोकने का कार्य करे।

हम लोगों को आगे आकर इस समस्या से निपटना होगा। यह नदी कहीं हमारे इतिहास में न चली जाये, इसके लिए हमें इसे बचाने के लिए सत्याग्रह करना होगा। यमुना सबकी मां है और इस मां को बचाने के लिए ही हमने यमुना सत्याग्रह किया है। अतः हम सब को तैयार होना होगा तभी हम कुछ शुरू कर सकेंगे। अभी आज हमारा मन जितना चाहता है, उतना हम शुरू करें। यमुना की छाती पर चल रहे बुल्डोज़र रुकवा सकते हैं। खाली जगह में वृक्षारोपण शुरू कर सकते हैं। अब यमुना में बनते मन्दिर, मस्ज़िद, गुरुद्वारों को रोक कर यमुना में पड़ते गन्दे नाले ठीक करने का काम कर सकते हैं। यमुना को दूर से मिलने वाले जल क्षेत्रों में जल संरचनाओं का निर्माण शुरू कर सकते हैं।

यमुना के खाण्डवप्रस्थ क्षेत्र, अरावली में चैकडैम, जोहड़, तालाब बनाकर भूजल को संकट के समय हेतु सुरक्षित क्षेत्र बना सकते हैं। ये सारे काम दिल्ली की राजनैतिक पार्टियां स्वयं आज ही शुरू कर सकती हैं। राजनैतिक पार्टियां अब मतदाताओं को घुमाकर केवल मत लेने का काम कब तक करती रहेंगी ? अब जो यमुना मां बनाने का काम करेगा, उसे ही मतदाता मत देगा। अब मतदाताओं को समझना होगा कि कौन उन्हें घुमा रहा है? कौन हमारे जीवन और हम सब की चिन्ता कर रहा है। यमुना को बिल्डर्स को सौंपना, यमुना का जीवन नष्ट करना और दिल्लीवासियों का हक छीन रहा है। दिल्लीवासी अपनी जागरूकता का प्रमाण प्रस्तुत करें और अपनी यमुना को बचाने हेतु आज ही जुटेंगे, तभी कुछ हो सकता है।

बहुत कठिन दिखता है, क्योंकि आज तो दिल्ली के राजनेता दिल्लीवासियों को टैंकर से पानी पिलाने में दिलचस्पी रखते हैं, क्योंकि टैंकर सप्लाई से उनका वोट पक्का होता है। जब राजनेताओं को पानी व पैसा और वोट मिलने लगे तो यमुनावासियों को पानीदार बनाने में किसी भी नेता की दिलचस्पी नहीं होगी। आज मत पाना भी और मतदाताओं की जेब खाली करवाना, ऊपर से उनका दाता बनना, यह सभी राजनैतिक पार्टियों का एक मात्र काम बन गया है। यमुनावासियों को स्वयं तय करना है। स्वयं को पानीदार बनाने हेतु यमुना को अपने लिए बचायें और यमुना को बचाने में जो लगें और मात्र महात्मा गांधी का नाम लेने वालों के बजाय जो महात्मा गांधी के बताये रास्ते पर चलते रहे हैं, उन्हीं को मत दें। हमें अब अपनी यमुना को बचाने के लिए संघर्ष करना होगा जिसमें आप सभी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

आज यमुना किनारे अतिक्रमण बढ़ रहे हैं। अतिक्रमण को हटाने में समानता का व्यवहार करते हुए अतिक्रमण हटवाए जायें। आज से कई वर्षों पूर्व 22 जलधाराएं यमुना में आकर मिलती थीं, जबकि ये सब लुप्त हो गई हैं तथा यमुना नाले का रूप ले चुकी है। भारत एक गर्म प्रदेश है, जब यहां पानी 45 किलोमीटर तक चलता है, तब वह नहाने लायक बनता है। 40 किलोमीटर तक पानी नदी की मुख्य धारा के साथ बहने से उसमें ग्रीष्मता के कारण शुद्धता आ जाती है, जबकि विदेशों में नदियों में पानी 200 किलोमीटर तक बहने पर ही नहाने लायक बनता है। यमुना मां खड्डों, नालों का रूप ले रही है। हमारा लक्ष्य यमुना मां को शुद्ध बनाना है।

हम नदियों को मां कहते हैं तो हमारा व्यवहार मां के प्रति जो होना चाहिए, आज वो नहीं हो रहा है। हम अपने बारे में सोचते हैं, अपनी मां के बारे में नहीं। आज जगह-जगह यमुना मां के बीचों-बीच से खनन के माफिया रेत निकाल रहे हैं, जिससे मां रूपी नदी का असली स्वरूप दिनों-दिन

बिगड़ता जा रहा है। नदी के बीचों-बीच से रेत निकालने से बड़े-बड़े गहरे खड्डे पड़ गये हैं। कभी-कभी गांवों के बच्चे नदी किनारे नहाने जाते हैं। ग्रामीण बताते हैं कि इस घाट पर कई बच्चे काल के ग्रास में चले गए हैं या चले जाते हैं। साथ ही अधिक खनन होने से यमुना मां के धरती के पेट में पानी अधिकता से नहीं पहुंच पाता है।

यमुना नदी का हथनीकुण्ड समझौता, केवल समझौता ही रह गया तथा इन राज्यों ने यमुना के सारे पानी का बंटवारा कर लिया। मां के लिए एक बूंद भी पानी नहीं छोड़ा। यमुना मां के बेटे (छः राज्य) आज इतने निकम्मे हो गए कि अपनी मां को भूल गए हैं।

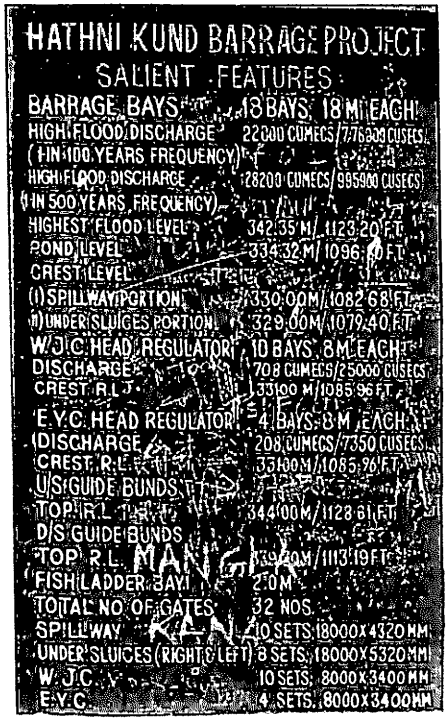

यमुना के छः बेटे !

1. हरियाणा	2. उत्तर प्रदेश
3. उत्तरांचल	4. दिल्ली
5. राजस्थान	6. हिमाचल प्रदेश

हथनीकुण्ड में लिए फैसले निम्नलिखित हैं -

1. यमुना नदी हमारी मां है। मां के पानी का हिस्सा मां को मिलना चाहिए।
2. 1994 में एग्रीमेन्ट में तय हुआ कि 11 प्रतिशत पानी मां को मिलना चाहिए। इसके लिए हमें यमुना के प्रवाह को बहता 11 प्रतिशत खुला रखना होगा।
3. यमुना किनारे बसे गांवों को बाढ़-सुखाड़ झेलनी पड़ती है। पानी का भविष्य, पानी की अपनी दृष्टि आदि के बारे में प्रश्न खड़े हो रहे हैं। दिल्ली में पहले यमुना 5 किलोमीटर चौड़ी बहती थी। जबकि आज 200 मीटर से कम चौड़ी है। यमुना के किनारे 30 हजार वर्ग गज की दर से जमीन बेची जा रही है। विश्व बैंक ने यमुना को सीमेन्ट से बांधकर उसके ऊपर शहर बनाने की योजना बनाई है। अगर यमुना को बांधना चाहते हैं, तो पीपल, बरगद, करील, आंवला, गूलर से यमुना को बांधें। एक पीपल का पेड़ जिसकी उम्र 40 वर्ष हो, वह 80 हजार लीटर पानी अपनी जड़ों में बांधकर रखता है।

इन छः बेटों ने यमुना के पानी को हथनीकुण्ड से अलग-अलग कैनालों में अपने लिए आपस में बांटा परन्तु मां के बंटवारे के हिस्से के पानी को नजरन्दाज़ किया। पांच बेटों ने मां के लिए 11 प्रतिशत बहाव पानी का बरकरार रहेगा, यानी इतना पानी यमुना में सदा बहता रहेगा, यह फैसला

1994 में इन छः राज्यों में से पांच राज्यों ने लिया, एक राज्य बाद में जोड़ा गया।

1970 में यमुना बैराज से नहरें निकाली थीं। यमुना पर 1994 में हथनीकुण्ड बना। 1994 में 4 किलोमीटर ऊपर उठाकर बनाया गया था। 1970 से नदी में पानी कम है। इसके बाद धीरे-धीरे नदी के पानी को छीनने का काम सरकार ने किया है। नदियों को नहरों में बदला गया।

समाज को अपने जीवन को बचाने के लिए संगठित होकर काम करना होगा। आज भी हम 90 प्रतिशत पानी धरती मां के पेट से निकालकर पीते हैं। इसे सुरक्षित बनाना आज की सबसे पहली जरूरत है।

बढ़ते उद्योगीकरण ने हमारे पानी को ज्यादा प्रदूषित किया है। हमारी मरती हुई नदियां, नालों का रूप ले रही हैं। यमुना मां को जीवित करने के लिए हमें गांवों से शुरुआत करनी होगी। दुखी लोगों की आवाज में ताकत होती है। उसी आवाज की ताकत से **यमुना मां** बनेगी।

दिल्ली सरकार ने 35,000 झुग्गी-झोपड़ियों को तोड़ा जिससे समाज का निचला तबका प्रभावित हुआ है। सरकार विकास इस तरह से कर रही है। दिल्ली के देहात में हरिजन, बढ़ई, लुहार आज बेरोजगार हो गए हैं। आजकल गरीब बच्चों को पीने का पानी नहीं मिलता है। 30 वर्ष पहले यमुना हमारे गांव को धोती थी। अब यमुना जी गांवों को गन्दा करती है।

हम समस्याओं को जानने आए हैं। आपकी तकलीफों में हमसफर बनने आए है। हमें अपनी नदियों को जिन्दा करना होगा। हमें यमुना जैसी नदी को ठीक करना व स्वच्छ बनाना है। यमुना में पानी ठीक से बहेगा तो हमें ठीक से पानी मिलेगा। उद्योग चलाने वाले लोग लालची हैं। जो पानी लेते

हैं बिना ट्रीटमेन्ट किये, उसे गन्दा करके नदी में छोड़ देते हैं। वे अपना पैसा बचाने के लिए ऐसा करते हैं।

तिजारा (राजस्थान) मुस्लिम समाज पानी को पैगम्बर का पैगाम कहता है। ये पानी बचाना, कुदरत की हिफाजत का काम मानते हैं, जो जल बचाता है, वह पैगम्बर जैसा है। जो जल को बर्बाद करता है, उसकी नमाज भी अदा नहीं होती है। कुदरत का भला करना है तो यमुना को बचाओ। आज यमुना की आवाज खत्म होती जा रही है। भारत के नौजवान साथियों को सोचना है कि आने वाले समय में पानी घी के भाव में भी नहीं मिलेगा। पानी होगा! पीने, जीने और नहाने योग्य नहीं बचेगा। आने वाले समय में भाई-भाई आपस में लड़ेंगे। जो सरकार की योजना बन रही है, उससे पानी की आपसी लड़ाई और तेज बढ़ेगी। पानी प्रकृति-प्रदत्त है। पानी सबका साझा है। यमुना सत्याग्रह का मतलब आज हमारी मां यमुना - यमुना मां नहीं रही है। आज मां एक नाला बन गई है। जो देश नदियों को मातृत्व देकर अपना जीवन चलाता था, आज वह देश नदियों को भूल रहा है।

नीर व नारी का रिश्ता बहुत गहरा है। पानी का फैसला यदि महिला करे तो देश की अच्छी तस्वीर बन सकती है। गांव क्रासका की जो औरत एक मटका पानी लाती तो उसे जवान माना जाता था। उन्हें 9 किलोमीटर दूर से पानी लाना पड़ता था। यहां वर्षा के पानी को छत पर इकट्ठा कर जीवन चलाते हैं। वहां एक दादी मां से कहा कि तुम इतनी दूर से पानी लाती हो, तुम अपने गांव में पानी का काम क्यों नहीं करती हो? अब वर्षा के दिन चल रहे हैं। इससे बढ़िया समय काम करने का नहीं है। तो उस दादी मां ने मुझसे कहा, हां तू नहीं जानता कि वर्षा के दिनों में तो हम पानी को सहेजते हैं और उससे अपना जीवन चलाते हैं। अगर हम अब काम नहीं करेंगे तो वर्षा का पानी हमें नहीं मिलेगा और हम प्यासे मर जाएंगे। अनपढ़ का मन मानस बहुत तेजी से चलता है। उनकी वृत्ति से निर्णय बड़े जीवनदायी होते हैं। जब वर्षा के दिन चले गये तब उन लोगों ने अपने गांव में जोहड़ व बांध का कार्य किया और आज वे 9 किलोमीटर दूर पानी लेने नहीं जाते हैं। इस क्रासका गांव से सीख लेकर दिल्ली निवासी भी अपनी यमुना मां को स्वच्छ बना सकते हैं। हमारी साझी जिन्दगी यमुना मां है। यमुना के जीवन को ठीक करने के लिए यह जल साक्षरता यात्रा निकाली जा रही है।

यमुना का पानी आपको मिलता है। यह आपकी मेहनत है लेकिन गांव में मांगू बाबा से मिलने के बाद पता चला कि पढ़ाई तो सिर्फ हमारी सोच बदलती है। जब मैंने राजस्थान में चार वर्ष तक पानी के कार्यों में जनता के साथ जुड़कर कार्य किया तो लोगों ने मुझे आतंकवादी, डकैत की उपाधि दी। जब मांगू काका ने अपने गांव गोपालपुरा में पानी का तालाब बनाया। तालाब में पानी भरा तो अपने रिश्तेदारों को बुलाया, तालाब में पानी दिखाकर उन्हें भी पानी बचाने के लिए तैयार किया। गांव का समाज अपने साझे भविष्य को देखता है। साझे काम भी करता है ।

❑❑❑

सत्याग्रहियों के विचार

यात्रा के तीनों चरणों में सत्याग्रहियों ने गांव, स्कूल, कालेज जाकर लोगों के साथ चर्चा की। अलग-अलग गांवों में बैठकें, सम्मेलन किये। पत्रकारों के साथ चर्चा की, भवन निर्माण विभाग के कर्मचारी, इन्जीनियर्स, सरकारी कर्मचारियों को सम्बोधित किया। इस तरह सत्याग्रहियों ने अपने-अपने विचार रखे।

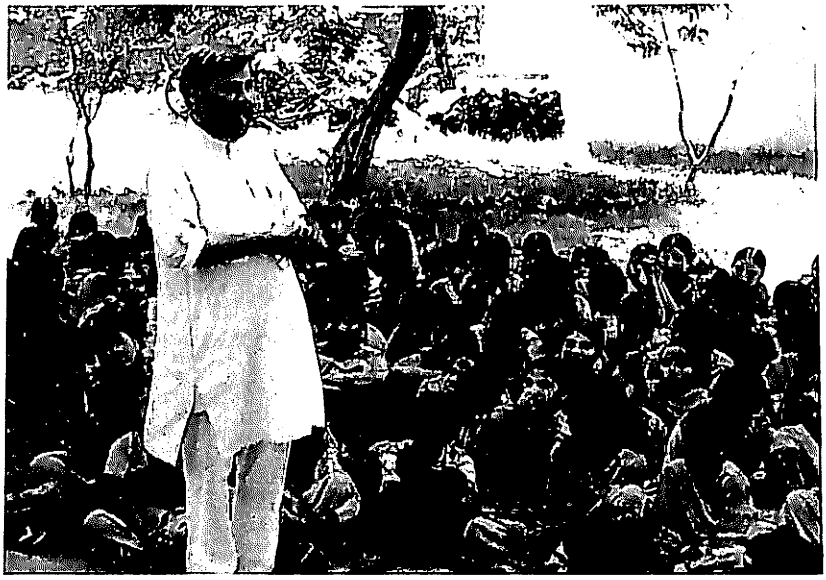

श्री राजेन्द्र सिंह ने विद्यालय के सभी अध्यापकों व बच्चों को आगाह करते हुए कहा कि आपका भविष्य क्यों बिगड़ रहा है ? क्योंकि पानी का बहुत बड़ा संकट आ रहा है, जैसे मैंने राजस्थान के स्कूली छात्रों के साथ मिलकर मार्बल की खानों का खनन करने वालों को रोका। पानी के लिए जोहड़ बनाए। अब वे गांव पानीदार बन गए।

गोपालपुरा गांव में गया तो वह गांव पानी की वजह से उजड़ गया था। जल से ही हमारा मन, बुद्धि, आत्मा व बल मिलता है। पानी हमें चलाता है। जीवन का दूसरा नाम जल ही है। धरती मां को पानी देने का काम पेड़-पौधे करते हैं। जब से पेड़-पौधे कम हो गए हैं, तब से धरती का पेट खाली हो गया है। अगर नदियां मर जाएंगी तो हम बर्बाद हो जाएंगे। नदियों के किनारे हमें पंचवटी लगानी चाहिए जिससे यमुना प्रदूषित न हो।

चांदपुरा गांव की प्रदूषित नदी को देखकर उन्होंने कहा कि इस नदी को आप ही बचा सकते हैं, क्योंकि इस नदी में आपने अपना जीवन जीया है। आपने तो फिर भी इस नदी को देखा है, लेकिन जरा यह सोचें कि क्या आपके बच्चे इसे देख पायेंगे ? अतः मेरी आप लोगों से विनती है कि आप ऐसा संगठन बनायें जो यमुना को प्रदूषित करने वालों के खिलाफ काम करें।

दूसरी ग्रामीण सभा में कहा कि गोपालपुरा गांव की रिश्तेदारी 45 गांवों में थी। इन्हीं रिश्तेदारों ने पानी का काम तेजी से आगे बढ़ाया है। आपका गांव तो बहुत भाग्यशाली है, गांव में तो बहुत पानी है। हमारे राजस्थान में इतना पानी नहीं है, लेकिन अब आपका भाग्य मुश्किल में है। आपकी यमुना का पानी खत्म होता जा रहा है।

हमारा भरोसा प्रकृति पर है। मुझे मेरी पढ़ाई पर गर्व था, मैंने सेहत पर काम करने का मन बनाया परन्तु वह काम छोड़ दिया। 6 माह के बाद गोपालपुरा

के मांगू काका से पूछा, आपका गांव क्यों उजड़ा ? उन्होंने कहा कि हमारे गांव के लोग गांव छोड़कर शहर की ओर जाने लगे। तो मैंने मांगू काका के साथ मिलकर जोहड़ बनाने का काम किया। हमने मिलकर तालाब बनाये। मांगू काका ने अपने गांव को नहीं बल्कि आस-पास के सभी गांवों को पानीदार बनाया।

इस यात्रा के दौरान सत्याग्रहियों ने बताया कि हम 19 मई 2007 को दिल्ली से यमुना सत्याग्रह यात्रा पर निकल गये थे और आज हम वापस आये हैं। हमने यमुना को वहां से देखा है, जहां से यमुना शुरू हुई है। यमुना बड़े लोगों के हाथों में न जाये, इसके लिए हमें सोचना होगा। देश की सभ्यता के लिए हमें यमुना को स्वच्छ करना होगा। सरकार आज यमुना को सीमेन्ट व कंकरीट के जंगलों से बांध रही है। अगर यमुना को बांधना है तो सीमेन्ट, कंकरीट के जंगलों से नहीं बल्कि पीपल, गूलर, कदम्ब, करील, आंवला, बरगद के पेड़ों से बांधा जाये। यमुना हम सब की मां है और मां का दर्द समझना बेटों का धर्म है।

सत्याग्रहियों ने सोनीपत में कहा कि सोनीपत के लोग भाग्यवान् हैं परन्तु भाग्यवान् लोग भूल जाते हैं। लगातार भूजल का दोहन करते हैं। सन्

1980 में राजस्थान का थानागाजी इलाका जलविहीन था। समाज बेपानी जब होता है, तब धरती का पेट खाली हो जाता है। धरती का पानी कितनी तेजी से नीचे जा रहा है, उसको समझना होगा। जब राजस्थान में पानी के लिए 11 लोगों को मारा गया है। आजकल राजनेता पानी की राजनीति कर रहे हैं। समाज जहां स्वयं पानी को समझकर सहेजने का काम करता है, आज इन गांवों में पानी है। जो लोग पानी की कमी से गांव छोड़कर गये थे, वे सब अपने गांव में आ गये हैं। हमें अपनी यमुना मां को बचाना है। हमें सरकार से कहकर यमुना में 10 क्यूसेक (क्यूबिक मीटर प्रति सेकण्ड) पानी छुड़वाना है।

कॉमनवैल्थ खेल गांव यमुना के किनारे ही क्यों आयोजित किया जा रहा है ? दिल्ली में और भी जगह है। शायद आपको पता नहीं कि जहां कॉमनवैल्थ खेल गांव किये जा रहे हैं। वो जगह रेतीली है, वहां कोई भी बिल्डिंग ठहर नहीं सकती है। थोडा सा भूकम्प भी उसे बचा नहीं सकता है। यह वह जगह है, जहां दिल्ली को सबसे ज्यादा पानी मिलता है। यह तो हमारे पानी को लूटने का एक तरीका है। यहां 40 मीटर गहरे तक रेत में पानी ही इकट्ठा होता है। ये खेल गांव रेत में महल बना रहे हैं।

सत्याग्रहियों ने चेतावनी दी कि सरकार ने पानी का निजीकरण नहीं रोका तो इसके भयंकर परिणाम होंगे। यमुना को बचाने के लिए ही हमने यमुना-सत्याग्रह कार्यक्रम शुरू किया है। आज हमारे समाज में पांच तरह के लोग हैं। ये पांच तरह के लोग कौन हैं ?

1. पहले वे लोग जो दुर्जन-शक्ति होते हैं, जो कोई भी अच्छा कार्य करता है, उसके कार्य में बाधा डालने वाले, उसके कार्य की अवहेलना करने वाले होते हैं।

2. दूसरे वे लोग जो अवसरवादी होते हैं। इनको जहां जैसा मिल जाये ये वहां चले जाते हैं। हमें इन अवसरवादी लोगों को कैसे अच्छे कार्य में लगायें, ये हमें सोचना होगा।

3. तीसरे वो लोग जो कभी किसी का बुरा सोच भी नहीं सकते, लेकिन कभी किसी का अच्छा कर नहीं सकते हैं। ये लोग सज्जन हैं, लेकिन सोयी हुई ताकत हैं। हमें इस सोयी हुई ताकत को जगाना होगा।

4. चौथे वो लोग जो अच्छे कार्य को करने के लिए अपना घर-बार सभी को छोड़कर आगे आ जाते हैं। ये आगे आने से डरते नहीं हैं, लेकिन इनकी संख्या समाज में बहुत कम है। मैं इनको प्रेरक-शक्ति कहता हूं। ये हमारे समाज को चेतना व ऊर्जा देती है।

5. पांचवें वे लोग जो हर व्यक्ति को अच्छे कार्य में लगाते हैं। इन लोगों को मैं गुरु कहता हूं। हमें इनमें तीन तरह के लोगों को एकजुट करना होगा। तभी हम अपनी गंगा-यमुना नदियों को बचा सकते हैं।

सनौली गांव में सत्याग्रहियों ने गांव के लोगों के साथ बातचीत करते हुए कहा कि सनौली गांव के पास यमुना का अभेद है। यहां यमुना बिल्कुल

सूखी है। अभी तो यमुना में खेती हो रही है। फसलें दिख रही हैं। परन्तु यहां यमुना में जो खनन हो रहा है। इसका सबसे बुरा असर यहां की खेती पर होगा। हमें खनन को रोकना है।

यात्रा के दौरान रमेश शर्मा जी ने कहा कि हमें राष्ट्रपति से अनुरोध करना होगा कि यमुना को बचाने के लिए कुछ कार्य करें। जो यमुना यमुनोत्री से निकलती है, तो कितनी स्वच्छ, निर्मल होती है, लेकिन जब वह दिल्ली से होकर गुजरती है, तो नाले का रूप धारण कर लेती है। क्या यह सब हमारी आखें देखने की इच्छुक हैं? नहीं! लेकिन अब हमें कोई दिखाना चाहता है। इसलिए अब हम ऐसा ही देखने हेतु मजबूर हैं। नदियों को शोषक-प्रदूषक अभी तक केवल गन्दगी ढोने वाली गाड़ी बना रहे थे। अब इसे नाला बनाना चाहते हैं। जो आज के तथाकथित बड़े नेता करना चाहते हैं, वही होता है, लेकिन हमें यह सब करने से रोकना है। अगर हम जैसे नागरिक ही पीछे हट जायेंगे तो इस यमुना का क्या होगा ? अतः हमें इसे बचाने के लिए आगे आना होगा।

मथुरा में सत्याग्रहियों ने अपने विचार रखे। श्री रमेश शर्मा ने कहा कि हम सभी जल के संरक्षण की अपनी जिम्मेदारी समझें। सरकार समाज को जल की हकदारी दे तो फिर गांव-घर के सभी स्रोत पानीदार बन जाएंगे। सरकार इसके लिए राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम के तहत साधन उपलब्ध कराए। आज सरकार को पेयजल सुरक्षा का अधिनियम बनाकर अपनी जिम्मेदारी को पूरा करना चाहिए। अगर ऐसा सरकार ने नहीं किया तो समाज सरकार पर पूरा दबाव बनायेगा, तब सरकार मजबूर होकर यह काम करेगी। अच्छी सरकार जनदबाव से पूर्व ही अच्छा कार्य कर लेती है। उम्मीद है कि पेयजल संकट के समाधान हेतु स्थाई उपाय करके भूजल पुनर्भरण का काम किया जाए। जोहड़, तालाब आदि से कब्जा हटाकर उन्हें मरम्मत कर ठीक किया जाए। जल का शोषण कम होना चाहिए। ठीक

समय पर सही प्रयास से जल-संकट का समाधान संभव है। सरकार इस काम में अपनी हकदारी-ईमानदारी और जिम्मेदारी पूरी करके दिखा सकती है। तब ही भारत पानीदार बनेगा।

यदि भारत की पेयजल समस्या का समाधान करना चाहते हैं, तो भूजल का लेन-देन बराबर करना होगा, यदि ऐसा नहीं हुआ तो भूजल, पेयजल की जरूरत पूरी नहीं कर सकता। धरती के पेट से जल निकालने से अधिक वापस धरती को देना जरूरी है। भूजल पुनर्भरण ही हमारे पेयजल संकट का स्थाई समाधान है। इसकी चिन्ता आज सरकार दिखाती तो है, लेकिन उस दिशा में सही चिन्तन और काम नहीं दिख रहा है। भूजल की कमी आज के जल संकट की मूल समस्या है। धरती से जल पुनर्भरण करने वाली नदियों, नहरों, नालों, जंगलों के जल भराव क्षेत्रफल में जल दबाव की कमी आई है। इसके घटने से धरती का पेट खाली होने लगा है। तेज गति से यह गहराता ही जा रहा है। भूजल का कम होना ही बाढ़-सुखाड़ का बढ़ना भी

बता रहा है। अब वर्षा का जल मिट्टी, कंकर, पत्थर सब कुछ ही साथ लेकर निचले क्षेत्र में इकट्ठा करता है। ऊपरी क्षेत्रों में जहां अधिक वर्षा के कारण बाढ़ आती है। वहां की नमी और मिट्टी का उपजाऊपन पानी के साथ बह जाता है। तत्पश्चात् वहां सूखे की स्थिति आने पर सब कुछ उजड़ जाता है। अतः बाढ़-सुखाड़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इनका बनना भी उसी कारण से होता है। इस कारण को समझकर जहां पानी दौड़ता है, वहां उसे चलना सिखाना है, जहां चलने लगे, वहां रेंगना सिखाना और जहां पानी रेंगने लगे, वहां पकड़कर धरती के पेट में बैठाना चाहिए। जब जरूरत हो, उसे निकालकर अपना जीवन चला लें। फिर वर्षा आने पर बड़ी उदारता से उसे वापस कर दें। तभी धरती के ऊपर नमी और नीचे पानी रहेगा।

भारत को पेयजल जरूरत पूरी करने के वास्ते जनोन्मुखी विकेन्द्रित जल-प्रबन्धन को अपनाना होगा। जितना जल धरती से लेते हैं, उतना ही धरती को वापस लौटाएं तो फिर सरकारी पाइप से आने वाला पानी कभी नहीं सूखेगा। आज पाइप से पानी तो पहुंचता है, परन्तु शीघ्र ही मूल स्रोत समाप्त हो जाता है। इस प्रकार खर्च के बावजूद पानी न मिलने के कारण धनराशि और पानी दोनों समाप्त हो जाते हैं। सरकार यदि हम सबको पेयजल देना चाहती है, तो केवल धरती से पानी लेने की तकनीक ही कारगर नहीं होगी, बल्कि हमें धरती से जल का लेनदेन बराबर करना होगा। हमने आज तक केवल जल की लूट व प्रदूषण ही सीखा और सिखाया है। अब हम धरती से जितना पानी लेते हैं, उतना ही पानी धरती को देकर पेयजल लेना शुरू करें।

हमारे देश में पानी का यह संकट न हो अगर हम सालभर में गिरने वाली सभी 4000 बूंदों (बी.एम.सी.) को सहेज कर रख लें। अभी 4000 बूंदों में हम केवल 600 बूंद पानी ही सहेज पाते हैं। शेष बर्बाद ही होती हैं। हम अपनी सारी बूंदों को सहेज कर और समझकर उपयोग करें।

भारत देश में पेयजल का संकट जल की कमी के कारण नहीं है, बल्कि भूजल की कहीं अधिकता और कहीं कमी के कारण ही है। बंगाल और असम जहां बहुत पानी है, वहां भी जल धातुओं के कारण पानी पीने योग्य नहीं है। आर्सेनिक, फ्लोराइड, आयरन, नाइट्रेट व मिक्स धातुओं के कारण जल संकट है। जल उपलब्धता की दृष्टि से 55607 गांव ऐसे हैं, जिनमें पेयजल उपलब्ध नहीं है और वे प्रदूषित जल पीकर बीमारी, बेकारी और लाचारी का जीवन जीते हैं। 3.31 लाख गांव ऐसे हैं जहां कम और प्रदूषित पेयजल मिलता है। इस देश में अधिक से अधिक जनसंख्या अशुद्ध पानी पीने के लिए मजबूर है।

चांदपुरा गांव की बैठक में अपने विचार रखते हुए रमेश शर्मा ने कहा कि जिस नदी में आपकी संस्कृति व सभ्यता छुपी हुई थी। वह आज क्या है ? इससे आप स्वयं परिचित हैं। अतः आप लोगों को आगे आकर इस काम को उठाना होगा। इसकी लम्बी लड़ाई लड़ने की तैयारी करनी होगी। अतः आप ही कामनवैल्थ खेल गांव की जगह को बनने से रोक सकते हैं। अपनी मां को बचाना है तो बेटों को आगे आना ही होगा। यमुना नहीं बची तो हम भी नहीं बचेंगे, समाज, गांव, मानव का बचना मुश्किल होगा। यमुना हमारे लिए जीवन देने वाली रही है। आज इसे हमने ही मार दिया है। इसका जीवन हमने छीन लिया है। हम ही इसको जीवित कर सकते हैं, इसका जीवन लौटा सकते हैं। इसके लिए हमें दृढ़संकल्प लेकर खड़ा होना होगा तभी हम अपनी यमुना मां को बचा सकेंगे। आओ, हम मिलकर आज यमुना को बचाने का संकल्प लें।

यात्रा के दौरान यात्रा प्रभारी प्रोफेसर एस. प्रकाश जी ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि आज हमारे देश में विकास के नाम पर विनाश किया जा रहा है। बढ़ते उद्योगों का सारा गन्दा पानी नदियों में डालने से देश की सम्पूर्ण नदियां बर्बाद हो चुकी हैं। नदियां आज कचरा ढोने वाली गाड़ी बन गई हैं।

उन्होंने कहा कि कम्पनियों के मालिक प्रकृति से जितना पानी लेते हैं, वैसा ही पानी उसी रूप में धरती मां को लौटाएं तथा कम पानी खपत वाली फसलों की खेती करने का आग्रह किसानों से किया। यात्रा गांव टपराना, झिझाना, नांगल (हरियाणा सीमा) तथा शामली में किसानों, गरीबों, मजदूरों ने यात्रियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। आम लोग यमुना मां के घटते जल व बढ़ते प्रदूषण से चिन्तित नजर आए, आम जनता केमिकल कम्पनियों द्वारा यमुना में छोड़े जा रहे दूषित जल से दुखी नजर आई। ग्रामीणों ने बताया कि राजनेताओं का हाथ इन मिलों, फैक्ट्रियों के साथ होने से हमारी सुनवाई बिल्कुल नहीं हो रही है। जनता इनके खिलाफ धरना, प्रदर्शन करने को तैयार है। नेतृत्व का अभाव जरूर नजर आता है। संगठन बनने में समय नहीं लगेगा, क्योंकि लोग पहले से भी दुखी हैं।

हिण्डन नदी का केस हाईकोर्ट में हुआ है, जिससे सरकार को हिण्डन नदी को साफ करना पड़ेगा, अगर ऐसा नहीं करते तो सच्चाई की तस्वीर सामने नहीं आती । भनेड़ा खेमचन्द गांव रात्रि में ग्रामीणों ने हिण्डन व यमुना में प्रदूषण से बढ़ते खतरों को यात्रियों के सामने रखा। उन्होंने बताया कि प्रदूषण का पानी धरती मां के भूगर्भ तक पहुंच जाने से हैंडपम्पों, जल-स्रोतों, कुओं का पानी पीला, मटमैला एवं बदबूदार बाहर निकलता है। कई जगह पानी के अधिक दोहन से जल स्रोतों का पानी सूख गया है। आने वाले भविष्य में पानी की बूंद-बूंद के लिए लड़ना पड़ेगा, इसलिए हर नागरिक को सोचना होगा कि अमूल्य धरोहर का संरक्षण कैसे किया जाये ? इसके लिए समाज को जल के परम्परागत जल स्रोतों जैसे बावड़ियां, कुएं, तालाब, पोखर, जोहड़, एनिकट बना कर वर्षा जल का समूचा संरक्षण जरूरी है।

इस यात्रा में डा. मनोज मिश्र जी ने कहा कि यमुना को जीने दो, नदी का विनाश भविष्य का सर्वनाश होगा। इस शास्त्री पार्क ने यमुना का हिस्सा

अपने कब्जे में कर लिया है। हमें यमुना का सर्वनाश होने से रोकना होगा। यहां पर कॉमनवैल्थ खेल गांव, अक्षरधाम मन्दिर के पीछे होने का निर्णय लिया गया है। अक्षरधाम एक प्राइवेट धाम है। यहां यमुना में 5-7 मंजिल इमारतें बनेंगी। यह पूरा क्षेत्र बाढ़ से प्रभावित हो सकता है। 1995 में जब यहां पर बाढ़ आई थी, तब जहां पर यह अक्षरधाम मन्दिर है, वहां पर उस समय नाव चलती थी।

डॉ. पी. के. सिंह ने बताया कि यमुना के असली बेटे गांवों में रहते हैं, उन्हें जगाना होगा।

ललित शर्मा ने कहा कि हमें यमुना को उसका 11 प्रतिशत पानी वापस दिलाना है। पानी छोड़कर फिर बचे हुए पानी में से ये छः राज्य आपस में बराबर बंटवारा करें। आज का समाज यह सोच रहा है कि कैनाल में पानी आ रहा है, यानी हमारी फसल अच्छी हो रही है। उन्हें यह महसूस कम हो रहा है कि यमुना के किनारे के लोगों का हाल क्या होगा, जहां कि यमुना सूख रही है। इसलिए हमने यमुना सत्याग्रह आरम्भ किया है। बच्चों को यहां

जल सहेजना सिखाया जा सकता है। हिन्दुस्तान में 2000 बच्चे दूषित पानी पीने से प्रतिदिन मरते हैं।

दीवान सिंह जी ने बताया कि हमें यमुना को बचाने के लिए संघर्ष करना होगा। यमुना के प्रदूषण से हमारे जीव-जन्तु, जंगल, खेत मरते जा रहे हैं। हमें यमुना को साफ करने के लिए सरकारी अधिकारियों को प्रार्थना-पत्र देना होगा और उनके न सुनने पर हम सबको सत्याग्रह करना होगा। यमुना के किनारे वाले गांव प्रदूषण से दुखी हैं। दिल्ली में यमुना नदी के पास आप खड़े नहीं हो सकते हैं। इसमें गन्दे नालों को डाला जाता है। देश की राजधानी दिल्ली ही हमारी मां को बर्बाद कर रही है। यमुना के आस-पास खड़े होने से आप बीमार हो जाओगे। आज हमारे देश में नदियों को बचाने के लिए कोई भी कानून नहीं है। दिल्ली में 1500 एम.जी.डी. पानी की खपत है। दिल्ली में महिपाल एरिया में 400-500 फीट पानी नीचे चला गया। झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों का प्रतिमाह 700-800 रुपये पानी पर खर्च होता है। दिल्ली जल बोर्ड पानी की योजना पर कोई सीधा जवाब नहीं दे रहा है। नदी देश की सभ्यता व संस्कृति की जननी है। यदि नदी खत्म होती है तो जीवन खतरे में पड़ जायेगा, वह क्षेत्र भी खत्म हो जायेगा।

ओंकारेश्वर जी ने बताया कि पानी बचाने के लिए हमारे यहां पहाड़, जंगल को बचाना जरूरी है। दिल्ली सरकार यमुना के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है। दिल्ली सरकार यमुना को एक नाले का रूप दे रही है। यमुना के किनारे वाले गांव बाढ़-सुखाड़ से जूझ रहे हैं। युवाओं को संगठित होने का आह्वान किया। नदी में पानी की मात्रा को रखना जरूरी है। पानी की मात्रा तो नदी में नहीं है, ऊपर से गन्दगी डाल रहे हैं। यमुना आज नाले का रूप ले रही है।

राजेन्द्र यादव (हरियाणा जल बिरादरी अध्यक्ष) ने बताया कि यमुना में गन्दे नाले का पानी नहीं छोड़ा जाये। उन्होंने यमुना नदी के पानी के समझौते के बारे में जानकारी देकर कहा कि 6 राज्यों को ध्यान दिलाना जरूरी है कि अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया तो यमुना मां तो पानी को तरसेगी लेकिन वे भी पानी के लिए तरसेंगे। पानी जीवन का आधार है। भारतीय संस्कृति में यमुना नदी को मां का दर्जा दिया गया है। आज हमारी मां पानी के अभाव में खत्म हो रही है और यह एक गन्दे नाले का रूप ले रही है।

महावीर त्यागी जी ने बताया कि आज यमुना का स्रोत कैसे कम होता जा रहा है। पानी से कैसे पार पाना है? जैसे धरती मां का पेट खाली हो रहा है। जिस गति से हम पानी को बर्बाद कर रहे हैं, अगर यह गति बनी रही तो आने वाले समय में जल-संकट भयानक रूप ले लेगा। भारत में नदियां बिक रही हैं। राजेन्द्र सिंह से प्रेरणा लेकर हमें जागना है। नदियों को शुद्ध-सदानीरा बनाना है। आज से 80 वर्ष पूर्व यमुना कैसी थी जबकि आज यमुना की क्या दशा है? व्यवहार को ठीक करना होगा, प्रकृति से जितना लेते हैं, उसके बदले में वापस प्रकृति को देना होगा। पानी है तो जीवन है। पानी नहीं है तो कल नहीं है।

यजमुनि जी ने बताया कि पानी के सम्बन्ध में जो पंचायत तय करे, उसे पंचायत की कार्यवाही में लिखा जावे। प्रदूषण विभाग कहता है कि जो

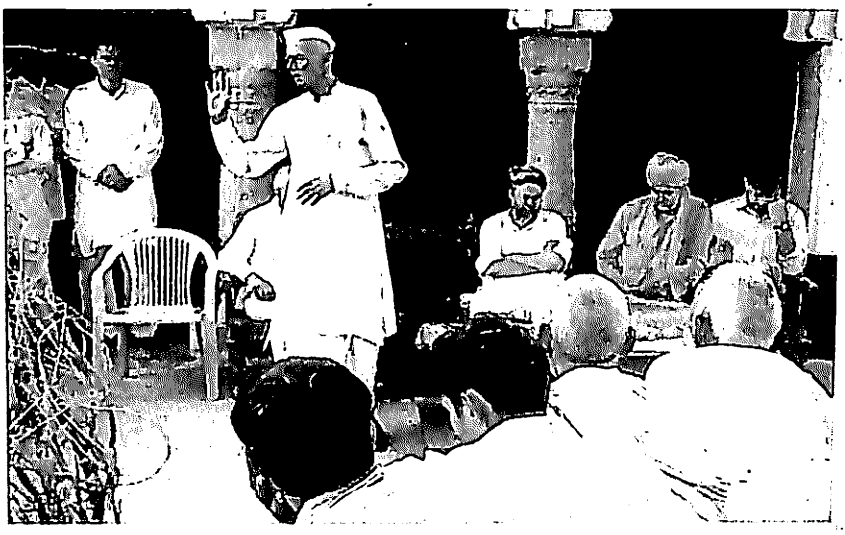

फैक्ट्रियों वाले पानी लेंगे, वैसा ही पानी ट्रीटमेन्ट करके यमुना में डाला जाये। यमुना को स्वच्छ करने का कार्य सिर्फ जनता ही कर सकती है। आज यमुना ऐसी यमुना नहीं रही, जिसमें हम स्नान कर सकें। स्नान करने की बात तो दूर रही, उसमें एक बूंद भी पानी शुद्ध नहीं है। आजकल गांव की संस्कृति में भी जल की मान्यता खत्म हो रही है। हमारे देश में नदियों को मां का वरदान प्राप्त है। हमने यमुना मां को शुद्ध करने के लिए ही यमुना सत्याग्रह छेड़ा है, क्योंकि आज नदियां हमारी मां नहीं रही हैं। आज यमुना में बड़ी-बड़ी मिलों व शहरों का गन्दा पानी छोड़ा जा रहा है जिससे यह नदी बदबूदार बन गई है। यमुना सत्याग्रह जल बिरादरी के लोग चला रहे हैं। यमुना मां आज मरने लगी है। हमें यमुना मां को बचाना है।

संजीव ढाका ने कहा कि यमुना का बुरा हाल अधिकतर सरकारों, राजनेताओं और उद्योगपतियों ने किया है। सरकार सीवर लाइन डालती है। उद्योगपति अपनी फैक्ट्रियों से रासायनिक अम्ल छोड़ते हैं। इसको हम सबको मिलकर रोकना होगा। गंगा-यमुना नदी तो पूरी दुनिया में अग्रणी नदियाँ हैं। पहले यह नदियां शुद्ध थीं। यमुना को शुद्ध करने के लिए हमें

सरकार के खिलाफ सत्याग्रह करने की जरूरत है। जब तक युवा आगे नहीं आएंगे, तब तक यमुना नदी स्वच्छ नहीं होगी। सुरेश राठी जी ने बताया कि गरीब आदमी यमुना के किनारे अपना आसरा बनाता है और उसे हमारी सरकार तोड़ देती है। हमारी सरकार कहती है कि यमुना के किनारे बसे लोग ही यमुना को गन्दा कर रहे हैं। पर उन्हें पता नहीं कि फैक्ट्रियों का पानी व शहरों के गन्दे नाले गिरने से यमुना नदी गन्दी होती है।

दिल्ली से दिल्ली, यमुना-सत्याग्रह की तैयारी प्रक्रिया में यात्रियों ने यमुना और इसके किनारे के समाज से बहुत सीखा। 3 जुलाई को इलाहाबाद में न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय जी ने कहा, अब नदियां हमारी मां जैसी नहीं रहीं। मैं जब बच्चा था तब मेरे परिवार में कोई भी गंगा-यमुना में शरीर का पसीना तक नहीं त्याग सकते थे। मल-मूत्र त्याग कर शरीर शोधन के बाद ही हमें गंगा-यमुना में स्नान की अनुमति मिलती थी। आज हमारा मन-मानस सब कुछ अनुशासनविहीन बन गया है। इसीलिए हम बीमारियों से भयभीत हैं। दुखी और तनावग्रस्त हैं। जब जीवन अनुशासित होता है, तब हम निर्भय होकर जीते हैं।

❑❑❑

स्थानीय लोगों के विचार

यमुना सत्याग्रह की तैयारी की यात्रा में सत्याग्रहियों ने स्थानीय लोगों के साथ यमुना के बारे में बातचीत की और यमुना को बचाने पर विचार-विमर्श किया। लोगों ने अपने-अपने विचार रखे। उनमें से कुछ लोगों के विचार इस प्रकार हैं -

राजेश मास्टर जी ने कहा कि हम सब एक साथ मिलकर संकल्प लेते हैं कि हम अपनी यमुना में गन्दा पानी नहीं डालेंगे और अपनी यमुना को सदानीरा बनायेंगे।

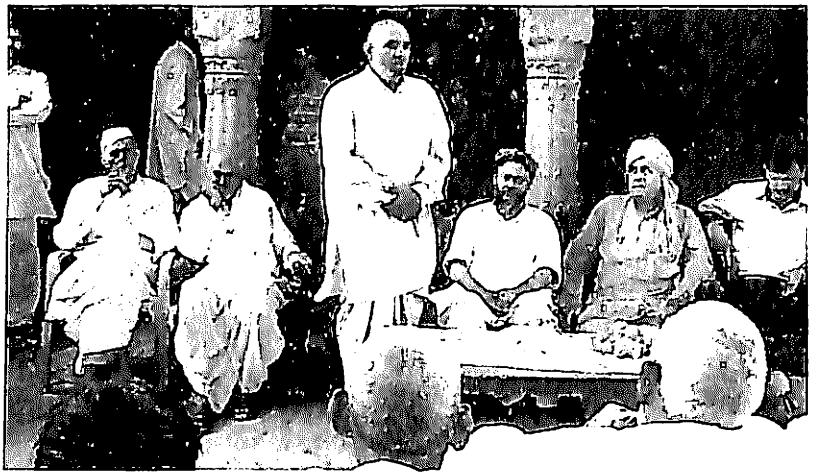

अट्टा गांव के लक्ष्मण सिंह (सरपंच) जी ने कहा कि यमुना को शुद्ध करने के लिए हमारा गांव पूरी तरह से तैयार है।

जसवंत जी ने बताया कि एक 14 वर्ष की बच्ची ने अपने परिवार के लिए पानी हेतु अपने हाथों से कुआं खोदकर दिया है। उन्होंने कहा कि आने वाले 5-6 वर्षों में हमारा राष्ट्र पानी को तरसेगा। उन्होंने बताया कि आजकल शहरों में कारों को साफ करने के लिए हजारों लीटर पानी बर्बाद कर देते हैं। हमें वर्षा के पानी को बचाना चाहिए।

जसबीर सिंह ने बताया कि सरकार द्वारा यमुना की सफाई करने के लिए करोड़ों रुपए आए, यमुना की सफाई नहीं हुई। पैसे कहां चले गए? यह लोग समाज के लोग हैं।

गांव वालों ने बताया कि 5-6 सालों से इस नदी में गन्दा पानी आ रहा है। टोडर मिलों का पानी आ रहा है। पानी में रहने वाले जीव-जन्तु भी मर जाते हैं। दुष्यंत कुमार ने बताया कि आज से 15 वर्ष पूर्व यमुना में साफ पानी

था। यमुना आज से 15 वर्ष पहले 21 किमी दूर थी, जबकि आज गांव के बिल्कुल नजदीक है, क्योंकि हर जगह खनन हो रहा है।

कुर्सिया घाट में सत्याग्रहियों को गांव के लोहरी बाबा ने कहा कि कुर्सिया घाट पर सैकड़ों मन्दिरों को तोड़ा गया और जो उन मन्दिरों के अन्दर मूर्तियां थीं, उनको उठाकर नदी में फेंका गया। आज देश में इंसानियत नहीं रही है। सरकार में न्याय नहीं है, अन्धे होकर लोगों को बेघर बनाया गया है।

अशोक वशिष्ठ जी ने बताया कि संगठन बनाकर यमुना की हो रही बुरी स्थिति को दूर किया जा सकता है। आज हम हिन्दू नहीं रहे हैं। आज सरकार यमुना घाट को भी तोड़ने के आदेश दे रही है। जब हमारा संगठन बनकर तैयार होगा, तब ही हमारी यमुना साफ हो सकती है।

एस.एस. अग्रवाल जी ने कहा कि सरकार यमुना के दोनों तरफ 300 मीटर तक यमुना एक्शन प्लान में लेना चाहती है। उन्होंने कहा कि 300 मीटर तो रोड तक जाता है। क्या सरकार रोड तक एक्शन प्लान लेगी?

विजय वशिष्ठ जी ने कहा कि न्यायाधीश को देखना होगा कि यमुना के दोनों किनारों पर 300 मीटर में कितने लोग आते हैं? यह न्यायाधीश को क्यों नहीं दिखता है? यमुना एक संस्कृति है। नदियों के किनारे तो घाट ही होते हैं।

यमुना में 1978 में 8 लाख क्यूसेक पानी आता था। सन् 1990 में दिल्ली में बी.पी.पी. जाती है। इसके अन्तर्गत 1992 में कोर्ट ने पानी को दूषित करने वाली फैक्ट्रियों को पानी को शुद्ध करने के लिए ट्रीटमेन्ट प्लांट लगाने का आदेश दिया गया, लेकिन उन फैक्ट्रियों ने ऐसा नहीं किया। 1992 से यमुना में गन्दे पानी का बोलबाला आज तक चल रहा है। हम सब को मिलकर यमुना को शुद्ध बनाना है।

हवासिंह चौधरी जी ने बताया कि हमें पानी के संरक्षण में बहिनों को आगे लाने का प्रयास करना चाहिए। हरियाणा में पानी की कमी नहीं थी परन्तु धान की फसल बोने के कारण पानी का दोहन अत्यधिक होने से पानी की कमी होने लगी है। हमें जल की एक-एक बूंद को बचाना होगा।

खजुरी पुस्ता में हुई बैठक में कमाण्डर सर्वेश्वर सिन्हा जी ने बताया कि हम यमुना के मुद्दे को लेकर कोर्ट में जा सकते हैं। यमुना के मामले में हमें कोर्ट से सफलता मिल सकती है। मीटिंग व प्रदर्शन करने से सरकार व कोर्ट पर प्रभाव पड़ेगा। उसके बाद यमुना सत्याग्रह यात्रा बाबा मार्ग से पुस्ता, चौथा

पुस्ता, करतार नगर व भजनपुर होते हुए शास्त्री पार्क, दिल्ली में पहुंची। वहां एक सहारा प्रेस वार्ता हुई, जिसमें राजेन्द्र सिंह जी ने यमुना सत्याग्रह यात्रा करने की जो पांच मागें हैं, उनकी जानकारी दी।

जैन साहब ने कहा कि आदमी तब डरता है जब उससे कोई चीज छीनी जाती है। राजघाट पर जमीन का लेवल, कुर्सिया घाट पर पानी का लेवल नीचे जा रहा है। यहां से 80 एम.जी. पानी रोज निकाला जाता है। अक्षर धाम मन्दिर यमुना से 30 टयूबवैल लगाकर रोज यमुना से पानी ले रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर नदियों का कन्जर्वेशन बने।

श्री गोविन्द जी ने बताया कि हमें यमुना के शुद्धिकरण के लिए जनता के बीच जाना होगा, तभी हमारी यमुना का शुद्धिकरण हो सकता है।

चांदपुरा के ग्रामीणों ने कुछ व्यक्तियों के नाम यात्रीदल को बताये, जो यमुना को बचाने तथा लोगों को जागरूक करने का कार्य करेंगे :

1. नूरी पुत्र श्री रमजान
2. मोहम्मद शहीद पुत्र श्री अली खां
3. नूरी ईलाही पुत्र श्री भूरा जी
4. शेरदिल पुत्र श्री मेजर खान
5. हुसनी पुत्र श्री चन्दा जी, पंचायत सदस्य
6. खुर्शीद पुत्र श्री मुस्सदीन
7. महावीर पुत्र सम्मन जी

मैगा पाई होटल, फरीदाबाद में हुई बैठक में श्रीमती रेखा चौधरी, चेयरमैन ने यात्री दल को धन्यवाद दिया कि वह हमारी सभ्यता व संस्कृति को बचाने

के लिए यह यमुना सत्याग्रह किया है। तो अब हम जैसे लोगों को भी इसमें आगे आकर कन्धे से कन्धा मिलाकर यमुना को बचाना होगा।

गोकुल बैराज, बी.सी.डी. की श्रीमती नन्दिनी जैन ने कहा कि आपके इस अच्छे कार्य में उत्तर प्रदेश सरकार भी आपके साथ है और अब समय आ गया है कि हम यमुना को बचाने के लिए कुछ करें।

माथुर चतुर्वेदी परिषद के अध्यक्ष नवीन नागर ने सत्याग्रहियों का स्वागत किया और कहा कि वह भी जल बिरादरी के साथ है तथा यमुना बचाने को लेकर वह यहां जन जागरूकता का काम करेंगे, जिससे लोगों को यमुना के बारे में पता हो सके कि यह कितनी प्रदूषित हो चुकी है। उन्होंने इस सत्याग्रह में सभी की भागीदारी होने की वकालत की।

आगरा नगर निगम में हुई बैठक में श्री राजेन्द्र सिंह जी की बातों से प्रभावित होकर सभी पार्षदों ने कहा कि वह भी एक दिन श्रमदान के रूप में कार्य करेंगे

तथा तालाब बनायेंगे, लेकिन हमारे इस कार्य में आप भी शामिल हों। इसकी हम आशा करते हैं। राजेन्द्र सिंह जी ने उन्हें आने का आश्वासन दिया कि आप लोग इतना अच्छा कार्य करना चाहते हैं तो मैं जरूर आऊंगा।

आगरा की मेयर श्रीमती अंजुला माहोर एवं नगर आयुक्त श्री श्याम सिंह यादव ने आगरा नगर निगम में आकर पार्षदों व हमें अपने 25 वर्षों के अनुभव हमारे साथ बांटे, इसके लिए हम उनका धन्यवाद करते हैं तथा हम भी यमुना सत्याग्रह में साथ हैं।

महिला संगठन की अध्यक्ष डा. मनोरमा शर्मा ने संगठन की उनके उद्देश्यों के साथ एकजुटता व्यक्त की। इस कार्यक्रम में सुश्री प्रेमा पाटनी, डा. शैलबाला अग्रवाल, नीलिमा पाटनी तथा डा. शशि गोयल ने इस यमुना सत्याग्रह में अपने संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका बताई तथा कहा कि उनका संगठन यमुना सत्याग्रह में पूरे जोश के साथ भाग लेगा तथा यमुना को बचाने के लिए काम करेगा।

उत्तराखण्ड जल बिरादरी के प्रदेश संयोजक श्री सुरेश भाई ने उत्तराखण्ड में लोगों की स्थिति तथा वहां बन रही जल विद्युत परियोजनाओं पर प्रकाश डाला और जलविद्युत परियोजनाओं की जानकारी लोक सुनवाई के दौरान दी। उन्होंने आश्वासन दिया कि प्राकृतिक मंच अब उत्तराखण्ड राज्य नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से करेगा। उन्होंने आगे कहा कि तमाम जलविद्युत परियोजनाएं लोक सुनवाई तक करने में परहेज करती हैं जिससे लोगों को इन परियोजनाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है। यदि लोग अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाते हैं तो उन्हें जबरन प्रताड़ित किया जाता है। यह लड़ाई जारी रहेगी, जब तक जल विद्युत परियोजनाओं में लोगों की आजीविका सुरक्षित न हो, साथ ही प्राकृतिक संसाधनों पर हो रहे अनियोजित विकास पर प्रतिबंध न लगे, जलविद्युत परियोजनाओं की

खामियों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए मंच अब पुनः नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों तक पहुंचेगा। पानी, पेड़ और मनुष्य का आपसी सामंजस्य है। कौन भला प्राकृतिक संसाधनों के बिना जीवित रहता है? प्राकृतिक मंच अब उत्तराखण्ड राज्य नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से प्रदर्शन करेगा।

रामधीरज जी ने कहा कि आज पानी की समस्या केवल उत्तर भारत की नहीं है बल्कि पूरे देश की है। 10-15 साल पहले किसी को कहा जाता कि धरती के नीचे का पानी कम हो गया है तो लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते, लेकिन आज स्थिति यह है कि गंगा और यमुना का पानी कम हो गया है। जिस कारण हमारी धरती का पानी भी कम हो गया है। इसलिए मित्रों, पानी का बड़ा सवाल पैदा हो गया है। आज हम पीने का पानी टैंकर से मंगवाते हैं, सवाल यह है कि आप अपनी गंगा व यमुना नदी को बचाने का काम नहीं कर रहे हैं। हमें अपनी गंगा और यमुना को बचाने का प्रयास करना चाहिए और हमें यह दृढ़संकल्प लेना चाहिए कि हमें अपनी गंगा और यमुना को बचाना है। उन्होंने संगम घाट पर कहा कि इस समय देश में गंगा-यमुना नदी का बुरा हाल है। यहां यमुना तो चम्बल नदी से होकर आती है तो यह थोड़ी-बहुत साफ है। सरकार और समाज को यह सोचना चाहिए

कि कैसे इन दोनों नदियों को प्रदूषित होने से रोक सकते हैं? अगर नदियां मरती हैं, तो हमारा समाज और हमारी संस्कृति भी धीरे-धीरे मर जायेगी। हमारी संस्कृति नदियों से ही जिन्दा है। हमें अपनी संस्कृति को मरने नहीं देना है। इसलिए हम अपनी नदियों को स्वच्छ व सदानीरा बनायेंगे।

कमिश्नर (इलाहाबाद) ने कहा कि हमें अपनी यमुना को बचाना है। उसमें गन्दे नाले नहीं डालने देने हैं। हम इसे शुद्ध बनाने के लिए राजेन्द्र सिंह जी के यमुना-सत्याग्रह में उनके साथ हैं।

मथुरा में विश्राम घाट के पण्डितों ने कहा, हम आज भी यमुना मैय्या को मैय्या, जीवनदायिनी कष्टहारिणी ही मानते हैं। यमुना को मां मानने वाले आज भी बहुत से लोग मिलेंगे। उन्हें जोड़ना जरूरी है। विश्राम घाट, मथुरा, निगमबोध घाट, दिल्ली, उद्गम स्थल यमुनोत्री, संगम-इलाहाबाद ये चार ही तीर्थ स्थल हैं। इनको बचाना जरूरी है। हम यमुना तीर्थों को बचाने हेतु सभी लड़ाइयां लड़ेंगे।

मनोरमा शर्मा ने कहा ''नीर-नारी सृष्टि के प्राण हैं।'' मैं इस रिश्ते को समझती-मानती हूं। यमुना सृष्टि को बचाना मैं अपना कर्म-धर्म मानती हूं। आगरा में महिला शक्ति सेना खड़ी करके इस कार्य को सतत करूंगी।

मुकेश जैन ने कहा ''यमुना को शुद्ध-सदानीरा'' बनाने में मेरी समस्त-शक्ति और साधन भी लगाऊंगा। मेरा परिवार समाज के साझे कार्यों को करता रहा है। मैं भी जल शुद्धता हेतु सतत कार्य करूंगा। यमुना को शुद्ध-सदानीरा बनाने में लगूंगा।

रमन भाई उच्चतम न्यायालय के अनुश्रवण समिति के सदस्य हैं। उन्होंने कहा मैं यमुना-सत्याग्रह में सक्रिय सत्याग्रही की भूमिका निभाऊंगा।

❑❑❑

यमुना यात्राओं की बैठकों का विवरण

21, 22 मई को बागपत में यमुना सत्याग्रह की तैयारी हेतु बैठक

बागपत के यमुना घाट पर 21, 22 मई 2007 को यमुना सत्याग्रहियों ने बैठक की। इस बैठक में यमुना के पानी को हाथों में लेकर प्रदूषण की मात्रा को पत्रकारों को दिखाया और आज नदी का पानी पीने लायक नहीं रहा है। श्री सिंह ने पत्रकारों से पलटवार करते हुए प्रश्न किया कि आपके मन पवित्र हैं तो पवित्रता आगे बढ़नी चाहिए। मिट्टी पर पड़ी सलवटें दिखाकर समझाया कि नदी में प्रदूषण की मात्रा बहुत अधिक है। जल संकट के बढ़ने के कारणों को गिनाते हुए श्री राजेन्द्र सिंह ने बताया कि :

1. पानी का बाजारीकरण
2. भूजल भण्डारों का तेजी से दोहन
3. बाजारू खेती जिसमें 90 प्रतिशत पानी बर्बाद हो जाता है।

23 मई 2007 को हथनीकुण्ड में बैठक

यमुना सत्याग्रह यात्रा प्रातः 11 बजे हथनीकुण्ड पहुंची । सत्याग्रहियों के स्वागत हेतु हथनीकुण्ड अतिथिगृह के हाल में एक बैठक रखी गई। बैठक में सिंचाई विभाग के 6 राज्यों के प्रतिनिधियों सहित पूरे देश के पत्रकार मीडिया मौजूद थे। बैठक में उपस्थित प्रतिनिधियों, पत्रकारों ने अपना-अपना परिचय दिया। परिचय के बाद बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री राजेन्द्र सिंह ने बैठक का एजेण्डा सामने रखा। उन्होंने बताया कि पानी की बढ़ती लूट के सम्बन्ध में हमने 19 मई 2007 को एक खुली बैठक रखी थी। 20 मई 2007 की बैठक में यमुना क्या है? यमुना को मां कैसे कहें ? इस बैठक में फैसला लिया गया कि उत्तर प्रदेश में यात्रा कर यमुना सत्याग्रह का एक विधिवत् ऐलान किया जाए।

इस बैठक में पांच बातें तय की गईं। इस बैठक में मीडियाकर्मियों को सुना गया था। मीडियाकर्मियों ने कहा कि पानी के बढ़ते संकट को लेकर हमारी सरकारों को भी सोचना होगा क्योंकि यह मुद्दा जन्म-मरण को लेकर बनता है। इस बैठक में दिल्ली के पण्डित-ब्राह्मणों ने बताया कि यमुना दिनों-दिन उजड़ती जा रही है। सरकार ने आम गरीब जनता के साथ अन्याय करके बड़े-बड़े उद्योगपतियों के हाथों में यमुना को बेच दिया है।

बैठक के अहम निर्णय

हथनीकुण्ड : हथनीकुण्ड में बैराज का रिसता हुआ नीचे से पानी आता है। यमुना का अपना पानी बिल्कुल नहीं है।

1. छः राज्यों को लिखा गया कि 1994 में जो फैसला हुआ, उस फैसले के अनुसार यमुना में 11 प्रतिशत पानी छोड़ा जाए जिससे मां का बहाव जारी रह सके।
2. यमुना के दोनों किनारों पर पंचवटी लगवाई जाए, जिसमें गूलर, पीपल, कदम्ब, आंवला, बरगद आदि के पेड़ लगवाए जायें।
3. यमुना किनारे बसे दोनों तरफ के समाज को जगाना होगा कि यमुना पर सबसे पहले तुम्हारा हक है, तुम्हें पानी की जगह गन्दगी व दूषित जल नसीब हो रहा है।
4. यमुना के कैचमेन्ट एरिया में परम्परागत जल स्रोतों तालाब, बावड़ियों, जलाशयों, एनिकटों, बांधों का समाज के साझे सहयोग से पुनर्भरण निर्माण करवाया जाये ताकि वाटर लेवल ऊपर उठ सके।
5. गांवों का सर्वे करके लोगों को यमुना मां के प्रति सचेत करना तथा उनको आपस में जोड़ने का कार्य करना होगा।

26 जून 2007 को छांयसा गांव में बैठक

26 जून 2007 इसके पश्चात सभी यमुना तट के किनारे, **छांयसा गांव** गये। जहां पत्रकारों को श्री सिंह ने यमुना सत्याग्रह यात्रा के बारे में बताया और पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुये सिंह ने कहा कि अगर उन्हें कॉमनवैल्थ खेल गांव बनाना ही है तो किसी और जगह भी बना सकते हैं। अगर उन्होंने उस जगह कॉमनवैल्थ खेल गांव बनवाया तो वह हमारी लाशों पर बना लें।

यहां से सत्याग्रही **विश्राम घाट मथुरा** गये। जहां मंदिर के पुजारियों के साथ एक बैठक रखी गई। मंदिर के पुजारियों ने यात्रा दल को अपनी

समस्याओं से अवगत कराते हुए बताया कि यमुना का यह घाट जिसकी अपनी एक संस्कृति है। वो नदी आज कितनी गंदी है। पहले यह नदी 12 माह बहती थी, लेकिन अब यह रुक गई है, जिस कारण ये ज्यादा गंदी व मैली हो गई है। ट्रीटमेन्ट के नाम पर सरकार हजारों-करोड़ों रुपये खर्च कर रही है, लेकिन कुछ नहीं हो पा रहा है, बल्कि भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

श्री रमेश शर्मा जी व श्री राजेन्द्र सिंह जी ने उपस्थित पुजारियों व बुद्धिजीवियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज हमारे देश में पर्याप्त पानी के बावजूद हम बेपानी हैं।

उन्होंने पुजारियों से कहा कि आप लोग इस यमुना को बचाने में सबसे अहम भूमिका निभा सकते हैं। लोगों को धर्म के आधार पर संवेदनशील बनाकर इस यमुना को सदा निर्मल नदी बना सकते हैं। इसलिए आप लोगों को आगे आकर, कमर कसकर कार्य करना होगा। इसके पश्चात् मंदिर के पुजारी लोगों ने यात्रियों को विश्राम घाट से नाव द्वारा नदी का अवलोकन करवाया। आगे जाकर देखा तो नदी काफी गंदी थी, किनारे पर ट्रीटमेन्ट प्लांट बंद पड़े हुये थे तथा नाले का पानी सीधा नदी में छोड़ा जा रहा था। नदी के अवलोकन करने के पश्चात् सत्याग्रही दल विश्वविद्यालय के गेस्ट हाउस में रुका।

दिनांक 27 जून 2007 को श्री माथुर चतुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय, डेम्पीयर नगर, मथुरा में बैठक

सत्याग्रहियों का दल श्री माथुर चतुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय, डेम्पीयर नगर मथुरा गया। जहां पर एक प्रेस कान्फ्रेस को सम्बोधित करते हुए कहा कि यमुना सबकी मां है, उसे प्रदूषण रहित बनाया जाये। आज अपनी पवित्र नदियों के जल का भी निजीकरण करने का प्रयास किया जा रहा है जबकि यमुना ही नहीं अन्य सभी नदियों में प्रकृति-प्रदत्त पानी सबका प्राण है।

राज-समाज और सृष्टि सभी का इन पर समान हक है। जीवन रूपी जल को किसी कम्पनी के हाथों में देना या प्रदूषित करना राष्ट्रहित में नहीं है। पतित पावनी श्री यमुना हम सबकी मां है उनको प्रदूषित करना महापाप है। यह सब जानते हुये भी हम उसे प्रदूषित ही नहीं, उसके स्वरूप को ही नष्ट करना चाहते हैं।

यात्रियों ने कहा कि भू-गर्भ जल पर सबका समान अधिकार है। नदियों में प्रकृति-प्रदत्त जल प्राणी मात्र का जीवन है। उस जीवन को निजी हाथों में देकर सबके साथ अन्याय ही नहीं, राष्ट्रीय सम्पत्ति को क्षति पहुंचाई जा रही है। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि जल बिरादरी यमुना के पवित्र रूप को पुनः प्रस्थापित करना चाहती है। इसके लिए वह तीसरी बार दिल्ली से आगरा, यमुनोत्री, इलाहाबाद तक की जन-जागरण यात्रा की गई।

उन्होंने कहा कि यमुना के दोनों तरफ से आने वाली प्राकृतिक जल धाराओं को पुनर्जीवित किया जाये। सभी जल धाराओं पर जल शोधन संयंत्र लगाये जायें तथा कोई भी उद्योग या महानगर पालिका उसमें प्रदूषित पानी न डाले,

इसकी सुदृढ़ व्यवस्था की जाये। सामुदायिक वर्षा-जल को संरक्षित करने के लिए पुराने तालाबों, बावड़ियों, झालरों और जोहड़ों को पुनर्जीवित किया जाये और जंगल में जल संरक्षण संरचनाओं की स्थापना की जाये। यमुना संस्कृति को पुनर्जीवित किया जाये। यमुना में शुद्ध सदानीरा हमारे जीवन का आधार बनाया जाये। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की कोई जल-नीति नहीं है। वह बनाई जाये। भू-गर्भ जल के स्रोतों का निजीकरण करना बड़ा अपराध है। उन्होंने कहा कि नीर-नारी पंचायतें बनाकर भू-गर्भ जल की सुरक्षा की व्यवस्था की जाये। उन्होंने कहा कि अभी तक सात हजार करोड़ रुपया यमुना एक्शन प्लान पर खर्च हो जाने के बाद भी यमुना का प्रदूषण निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह चिंतनीय है।

माथुर चतुर्वेदी परिषद् के अध्यक्ष नवीन नागर ने सत्याग्रहियों का स्वागत किया और कहा कि वह भी जल बिरादरी के साथ है तथा यमुना बचाने को लेकर वह यहां जन जागरूकता का काम करेंगे जिससे लोगों को यमुना के बारे में पता हो सके कि यह कितनी प्रदूषित हो चुकी है। उन्होंने इस सत्याग्रह में सभी की भागीदारी होने की वकालत की।

दिनांक 27 जून 2007 जिला युवा समन्वयक कार्यालय, नेहरू युवा केन्द्र, मथुरा में बैठक

राजेन्द्र सिंह और उनका दल जिला युवा समन्वयक कार्यालय, नेहरू युवा केन्द्र, मथुरा पहुंचा। जहां मीटिंग व प्रेस कान्फ्रेंस रखी गई थी। नेहरू युवा केन्द्र के कार्यकर्ताओं ने सभी सत्याग्रहियों को माला पहनाकर स्वागत किया। श्री राजेन्द्र सिंह ने पत्रकारों को सम्बोधित किया।

श्री रमेश शर्मा जी ने पत्रकारों को सम्बोधित करते हुये कहा कि यमुना सत्याग्रह यात्रा के अन्तर्गत पहला चरण कार्यक्रम यमुनोत्री से हथनीकुंड, दूसरा चरण हथनीकुंड से दिल्ली और तीसरे चरण का कार्यक्रम दिल्ली से आगरा, उत्तरकाशी तक चलाया जा रहा है। इसमें यमुना के पूर्वी और पश्चिमी किनारों की स्थिति का जायजा लिया गया। उन्होंने यमुनापुत्रों को मिलकर यमुना को संकट से बचाने के लिए कार्य करने को भी कहा।

भूजल को लेकर किए गए सवाल के जवाब में श्री सिंह ने कहा कि भू-गर्भ जल का सदुपयोग करने के लिए एक मॉडल बिल बनाकर सरकार को भेज दिया गया है। उन्होंने कहा कि इसमें भी भ्रष्टाचार में संलिप्त रहने वालों ने

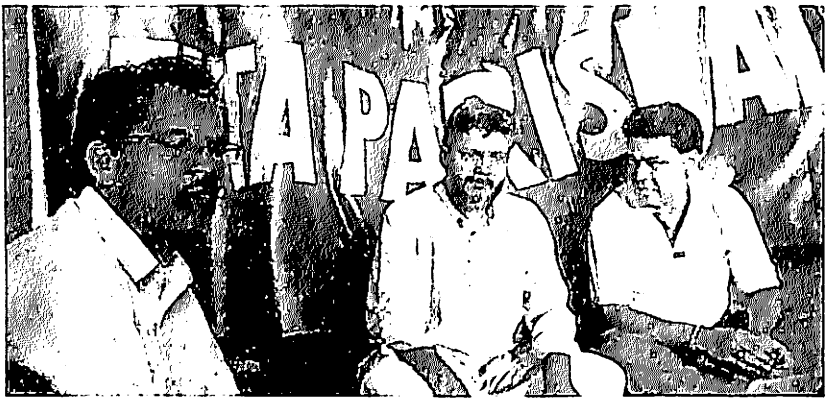

अपनी जेब गरम करने का रास्ता निकाल लिया है। भूजल के प्रयोग के लिए लाइसेंस दिए जाने की बात कही जा रही है। उनसे पूछा गया कि भू-जल का प्रयोग करने के लिए किसान कहां से लाइसेंस लाएगा ? इसके जवाब में उन्होंने कहा कि लाइसेंस देने वाले ही किसान की कमर तोड़ कर रख देंगे। इसके लिए सरकार को चाहिए वह ब्लॉक स्तर पर नियमित प्रयोग के लिए संसाधन उपलब्ध कराए। उन्होंने नीर-नारी पंचायत का गठन करने की वकालत की।

दिनांक 27 जून 2007 महिला शांति सेना, आगरा में बैठक

यहां से सत्याग्रही दल **आगरा** पहुंचा। जहां महिला शांति सेना की सदस्यों व पत्रकारों के साथ बैठक हुई। शांति सेना की कार्यकर्ताओं ने श्री सिंह व साथ में आये सत्याग्रहियों का स्वागत किया। इसके पश्चात् श्री राजेन्द्र सिंह ने पत्रकारों को सम्बोधित करते हुये कहा कि यमुना नदी की हालत अत्यन्त दयनीय है। प्रदूषण और जल न्यूनता इस समय सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। जिन्हें अभियान के तौर पर स्वीकार कर नदी को स्वच्छ जल युक्त फिर से बनाना है। बदहाली से सिसकती यमुना के आंसू पोंछने हैं। उन्होंने कहा कि जब से भारत ने विदेशी कंपनियों के लिए अपने दरवाजे खोले हैं, तब से इसी जल संपदा का दोहन और संरक्षण करने के नाम पर बहुराष्ट्रीय कंपनियां

खर्चीली और भारतीय परिवेश के सर्वथा प्रतिकूल टैक्नोलॉजी सरकार पर थोप रही हैं।

उन्होंने कहा कि देश में इस समय यमुना नदी सबसे ज्यादा समस्याग्रस्त है। अब इसी को निर्मल जल के प्रवाह युक्त बनाने का लक्ष्य कर वे सक्रिय हैं। यमुना बिरादरी को जाग्रत करने के लिए उनका चार चरण अभियान है। तीसरा चरण दिल्ली से आगरा, उत्तरकाशी, संगम इलाहाबाद के बीच का है।

महिला संगठन की अध्यक्ष डा. मनोरमा शर्मा ने संगठन के उद्देश्यों के साथ एकजुटता व्यक्त की। इस कार्यक्रम में सुश्री प्रेमा पाटनी, डा. शैलबाला अग्रवाल, नीलिमा पाटनी तथा डा. शशि गोयल ने इस यमुना सत्याग्रह में अपने संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका बताई तथा कहा कि उनका संगठन यमुना सत्याग्रह में पूरे जोश के साथ भाग लेगा तथा यमुना को बचाने के लिए काम करेगा।

दिनांक 28 जून 2007 को प्रिल्यूड पब्लिक स्कूल, आगरा में बैठक
दोपहर में **प्रिल्यूड पब्लिक स्कूल, आगरा** में एक बैठक हुई। बिल्डर्स-भवन निर्माताओं को सम्बोधित करते हुये श्री सिंह ने कहा कि गंगा-यमुना का दोआब भूजल का सबसे बड़ा भंडार है। पानी के व्यापार से जुड़े लोगों की वर्षों से इस पर निगाह है। सरकार की जल नीति भी उनके पक्ष में है। उन व्यापारियों के हितों को साधने के लिए योजनाबद्ध तरीके से नदियों पर कहर ढाया जा रहा है। इसी की शिकार यमुना नदी भी है। हमें वास्तविकता समझनी होगी। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संपदा और समाज में साझा रिश्ता होता है। जितना लोगे, उतना देना होगा, तभी बैलेंस बनेगा। इस रिश्ते पर किसी सरकार का हक नहीं हो सकता। राष्ट्रीय जल नीति की आलोचना करते हुये बताया कि नीति के अनुसार पानी के भंडार पर प्राइवेट व्यक्ति का कब्जा हो सकता है। इस माध्यम से मल्टीनेशनल कंपनी की

ख्वाहिश पूरी की जा रही है। कॉमनवैल्थ खेल गांव क्यों यमुना के किनारे आयोजित किया जा रहा है? दिल्ली में और भी जगह हैं ? यमुना को नाले में तब्दील करने की योजना काम कर रही है। हमें समस्या की तह में जाना होगा। पानी के लुटेरों और प्रदूषकों को पहचानना और रोकना होगा।

भवन निर्माताओं के सवालों का जवाब देते हुये मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित, जल पुरुष, राजेन्द्र सिंह जी ने कहा कि वह यमुना के किनारे के समाज में मित्रों की तलाश में निकले हैं। लड़ाई इसके बाद शुरू होगी। राजस्थान जहां साल की वर्षा 200 मिलीमीटर है, वहां के सूखे क्षेत्र आज पानीदार हैं, आगरा में 1600 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा होती है, यहां तो पानी की समस्या होनी ही नहीं चाहिए। यू.पी., हिमाचल, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा और उत्तराखंड यमुना के छह बेटे हैं, जिन्हें यमुना की इज्जत वापस लानी होगी। इसे यमुना का समाज ही पूरा करेगा। यमुना अभियान की बाबत उन्होंने बताया कि पांच राज्य सरकारों को उन्होंने पत्र लिखकर यह मांग की है कि यमुना को उसका पानी दिया जाए, जैसा कि राज्यों ने सन् 1994 में समझौता किया था। यमुना किनारे कंक्रीट के जंगल के बजाय प्राकृतिक जंगल लगाया जाए, इसमें पीपल, गूलर, बरगद, कदम्ब, आंवला के पेड़ लगाए जाएं, जिनसे जल का कम वाष्पीकरण होता है। यमुना के दोनों तरफ आने वाली प्राकृतिक जल धाराओं को पुनर्जीवित किया जाए, जल शोधन संयंत्र लगाया जाए। इसी प्रकार सामुदायिक वर्षा जल को संरक्षित करने हेतु तालाबों, बावड़ियों और जोहड़ों को पुनर्जीवित किया जाए। यमुना संस्कृति को पुनर्जीवित किया जाए।

उन्होंने पत्रकारों से कहा कि यमुना को बचाने में आप लोग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि गांधी जी भी पहले पत्रकार थे और एक पत्रकार समाज में एक ज्योति जला सकता है। समाज के लोगों को प्रदूषित यमुना एवं शुद्धिकरण के बारे में बताकर जागरूक कर सकता है तथा उनकी

संवेदनाएं जगा सकते हैं। अगर आगरा का समाज जागरूक हो जाये तो यह यमुना को प्रदूषण-मुक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

दिनांकः 28 जून 2007 को आगरा नगर निगम में पार्षदों व समाज के बुद्धिजीवियों के साथ संगोष्ठी

दिनांकः 28 जून 2007 को शाम को 4 बजे आगरा नगर निगम में पार्षदों व समाज के बुद्धिजीवियों के साथ संगोष्ठी रखी गई। यहां पर श्री राजेन्द्र सिंह ने अपने 25 वर्षों के अनुभवों का प्रेजेन्टेशन करके सवाल-जवाब के माध्यम से अनुभव बांटा।

उन्होंने पार्षदों, नागरिकों एवं अधिकारियों से कहा कि आगरा को स्वच्छ व सुन्दर बनाने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि आप ही वह शक्ति हैं, जो यमुना व आगरा को प्रदूषण-मुक्त करा सकती है।

उन्होंने यमुना के बारे में पांच मुख्य मांगें बताकर कहा कि असली सामर्थ्य तो समाज में है, जिसने मुझे थोड़ा उपयोग करने का मौका देकर कृतार्थ कर दिया है। मैं दिल्ली में हूं और यमुना के सवाल को लेकर ही हूं, लेकिन यह

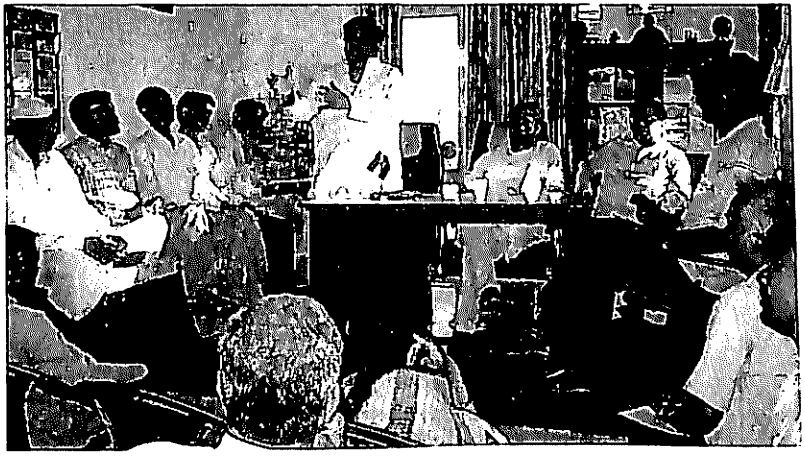

कोई राजेन्द्र सिंह का आपदा प्रबंधन नहीं है। यह समाज की वर्तमान जरूरत है। यमुना पर आपदा आयी है। इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता, लेकिन प्रबंधन सब समाज को, हमको, आपको मिलकर करना होगा। आप सबसे मेरी अपील है कि अपने-अपने स्तर पर जो कर सकते हैं, करें, मैं आपके साथ हूं। एक वादा मैं जरूर करता हूं कि मैं इसे बुझने नहीं दूंगा, लेकिन मेरे अकेले से क्या हो सकता है?

आगरा नगर निगम में हुई बैठक में श्री राजेन्द्र सिंह जी की बातों से प्रभावित होकर सभी पार्षदों ने कहा कि वह भी एक दिन श्रमदान के रूप में कार्य करेंगे तथा तालाब बनायेंगे, लेकिन हमारे इस कार्य में आप भी शामिल हों। इसकी हम आशा करते हैं। राजेन्द्र सिंह जी ने उन्हें आने का आश्वासन दिया कि आप लोग इतना अच्छा कार्य करना चाहते हैं तो मैं जरूर आऊंगा। आगरा की मेयर श्रीमती अंजुला माहोर एवं नगर आयुक्त श्री श्याम सिंह यादव ने श्री राजेन्द्र सिंह जी व उनके साथियों को धन्यवाद दिया कि उन्होंने आगरा नगर निगम में आकर पार्षदों व हमें अपने 25 वर्षो

के अनुभवों से नवाज़ा, इसके लिए हम उनका धन्यवाद करते हैं तथा हम भी यमुना सत्याग्रह में साथ हैं।

दिनांकः 30 जून 2007 हिमालय भागीरथी आश्रम, मातली में जल-सम्मेलन

पर्यावरणविद् श्री राजेन्द्र सिंह जी ने हिमालय भागीरथी आश्रम मातली में हो रहे जल सम्मेलन में कहा कि पहाड़ की जवानी व पानी पहाड़ के काम आये, ऐसी भावनात्मक लड़ाई लड़ के उत्तराखण्ड राज्य की कल्पना की थी। हालांकि राज्य प्राप्त हो गया है, परन्तु पहाड़ के जनमुद्दे आज भी अनसुलझे हैं जो मानव समाज में सबसे बड़ी दुखद घटना कही जा सकती है।

हिमालय पर्यावरण शिक्षा संस्थान, उत्तराखण्ड जल बिरादरी के तत्वावधान में आयोजित जल सम्मेलन में राजेन्द्र सिंह जी ने उत्तराखण्ड में बन रही जल विद्युत परियोजनाओं पर निशाना साधा और कहा कि राज्य में बन रही जल विद्युत परियोजनाएं जन जरूरत को ध्यान में रखकर नहीं बल्कि प्रकृति का विनाश करने हेतु बन रही हैं।

उन्होंने यहां तक कहा कि सन् 1992 में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पानी के व्यापार के लिये नीतिगत मामलों पर जद्दोजहद चल रही है, जिससे देश और राज्य को मजबूरन जलनीति बनाकर पानी के व्यापार के लिए दरवाजे खुले रखने होंगे। उन्होंने राष्ट्रीय जलनीति की धारा 13 को सिरे से नकारते हुये कहा कि यह जलनीति मात्र पानी के व्यापार के लिये बनायी गयी है, जिससे आम जन की आजीविका संकट में पड़ने वाली है। व्यवहारीय पक्ष यह है कि पानी के बिना जीवन अधूरा है और देश की संस्कृति और सभ्यता में पानी जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। आज की भौतिकवादी व्यवस्था जो प्राकृतिक संसाधनों के साथ क्रूर व्यवहार कर रही है, वह

भविष्य में बड़े जनहानि का सबब बनेगी। उन्होंने जल सम्मेलन में लोगों को आगाह किया कि उत्तराखण्ड हिमालय की शोभा एवं सुन्दरता यथावत् बनी हुई रहे। उल्लेखनीय यह है कि भागीरथी घाटी में चल रहे जन आन्दोलनों को राजेन्द्र सिंह जी के पधारने पर एक ऊर्जा प्राप्त हुई और लोगों ने उन्हें वर्तमान में हो रही समस्याओं से अवगत करवाया और कहा कि निर्माणाधीन परियोजनाएं लोगों को मुगालते में रख रही हैं।

इस अवसर पर उत्तराखण्ड जल बिरादरी के प्रदेश संयोजक श्री सुरेश भाई ने उत्तराखण्ड के लोगों की स्थिति तथा वहां बन रही जल विद्युत परियोजनाओं पर प्रकाश डाला और जलविद्युत परियोजनाएं लोक सुनवाई के बारे में जानकारी दी। उन्होंने आश्वासन दिया कि प्राकृतिक मंच अब उत्तराखण्ड राज्य नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से करेगा। उन्होंने आगे कहा कि तमाम जलविद्युत परियोजनाएं लोक सुनवाई तक करने में परहेज करती हैं जिससे लोगों को इन परियोजनाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है। यदि लोग अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाते हैं तो उन्हें जबरन प्रताड़ित किया जाता है। अब वक्त सोने का नहीं हैं, कंधा से कंधा

मिलाकर काम करने का है। यह लड़ाई जारी रहेगी, जब तक जल विद्युत परियोजनाओं में लोगों की आजीविका सुरक्षित न हो, साथ ही प्राकृतिक संसाधनों पर हो रहे अनियोजित विकास पर प्रतिबंध न लगे। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में लोगों द्वारा बनाई गई जलनीति को सरकार स्वीकार करे, इसलिए राज्य भर में निरन्तर कार्यक्रम चलते रहेंगे। जल संस्कृति मंच के संयोजक प्रेम पंचोली ने कहा कि जिस तरह लोक जलनीति को बनाने में उत्तराखण्ड भर में नुक्कड़ सभाओं तथा बैठकों का दौर चला, उसी प्रकार जलविद्युत परियोजनाओं की खामियों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए मंच अब पुनः नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों तक पहुंचेगा। मंच ''नाटक क्या नदी बिकी'' नाटक की सराहना करते हुए कहा कि नाटक में पानी, पेड़ और मनुष्य का आपसी सामंजस्य है, भावनात्मक रिश्ते का प्रदर्शन और परिस्थिति में प्रकृति और संस्कृति भी बचती है, तो कौन भला जो प्राकृतिक संसाधनों के बिना जीवित रहता है। इस अवसर पर सर्वोदयी कार्यकर्ता सुरेन्द्र दत्त भट्ट, हर्षिल की प्रधान बंसती नेगी, रामप्यारी, प्रेमा बाधिनी, हिमालय पर्यावरण शिक्षा संस्थान की हिमला देवी, रक्षा सूत्र आन्दोलन की सुमति नौटियाल, संगीता मियां तथा जल संस्कृति मंच के मनमोद रावत आदि लोगों ने भाग लिया।

2 जुलाई 2007 को जल सम्मेलन, इलाहाबाद

सुबह 8 बजे 2 जुलाई 2007 को इलाहाबाद पहुंचकर वहां हो रहे सम्मेलन में भाग लिया। इलाहाबाद में रामधीरज व ईश्वरचन्द्र जी ने राजेन्द्र सिंह व ईरीना सैलिना जी का स्वागत किया।

रामधीरज जी ने कहा कि आज पानी की समस्या केवल उत्तर भारत की नहीं है, बल्कि पूरे देश की है। धरती के नीचे पानी का भण्डार कम हो गया है। 10-15 साल पहले किसी को कहा जाता कि धरती के नीचे का पानी कम हो गया है तो लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते, लेकिन आज स्थिति यह

है कि गंगा और यमुना का पानी कम हो गया है। जिस कारण हमारी धरती का पानी भी कम हो गया है। इसलिए मित्रों, पानी का बड़ा सवाल पैदा हो गया है। आज हम पीने का पानी टैंकर से मंगवाते हैं, सवाल यह नहीं है। सवाल यह है कि आप अपनी गंगा व यमुना नदी को बचाने का काम नहीं कर रहे हैं। हमें अपनी गंगा और यमुना को बचाने का प्रयास करना चाहिए और हमें यह दृढ़संकल्प लेना चाहिए कि हमें अपनी गंगा और यमुना को बचाना है।

कमिश्नर, इलाहाबाद ने श्री राजेन्द्र सिंह जी व ईरीना सैलिना जी का यहां आने पर धन्यवाद दिया और कहा कि हमें अपनी यमुना को बचाना है। उसमें गन्दे नाले नहीं डालने देने हैं। हम इसे शुद्ध बनाने के लिए राजेन्द्र सिंह जी के यमुना-सत्याग्रह में उनके साथ हैं।

राजेन्द्र सिंह जी ने सबसे पहले सभा में आये साथियों को धन्यवाद दिया कि वे अपनी नदियों को बचाने के लिए यहां आये हैं और अपनी पानी की समस्या पर विचार करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि मैं पिछले साल एक छोटे से गांव रमला में एक छोटा सा जोहड़ देखने आया था। मुझे खुशी है कि लोग अपने पानी को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। ये जो चिन्तन है, ये जो जल का दर्शन है, ये जो जल की दृष्टि है, ये दृष्टि जहां उभरती है, ये भले ही छोटी सी हो, लेकिन ये असल कार्य में बहुत बड़ी होती है।

उन्होंने लोगों से अनुरोध किया कि जो सुप्रीम कोर्ट का निर्णय है, पुराने तालाबों से कब्जे हटवाने का, आप एक मुहिम की तरह तालाबों से कब्जे हटवा देंगे तो यह एक अच्छा कार्य होगा। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि कुछ जगह आपके यहां ऐसी हैं जिनमें माइनिंग के कारण आपके यहां का पानी कम हो रहा है। इन दोनों बातों पर आपको ध्यान देना चाहिए। इसके बाद सभा का समापन हुआ।

राजेन्द्र सिंह जी, रामधीरज जी, ईश्वरचन्द्र जी व ईरिना सैलिना जी, यमुना को देखने के लिए संगम घाट पर गये। संगम घाट इलाहाबाद का प्रयाग गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है। गंगा और यमुना का पानी बिल्कुल अलग तरह से है। गंगा का पानी यमुना के पानी से अधिक प्रदूषित है। यमुना का पानी यहां थोड़ा स्वच्छ हो जाता है, क्योंकि इसमें चम्बल नदी मिलती है। चम्बल का पानी पंच नदी में मिलता है। तो ये स्वच्छ पानी है, लेकिन इसमें इलाहाबाद के संगम घाट पर आते ही यह पानी प्रदूषित हो जाता है। संगम घाट का पानी इसलिए प्रदूषित होता है कि इसमें फैक्ट्रियों का गन्दा पानी और हमारे नाले पड़ते हैं। इस घाट पर बहुत गन्दगी है। ये जो गन्दगी है, ये गन्दगी नदी की पवित्रता को नष्ट करती है।

सरकार के हजारों-करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी ये नदियां साफ क्यों नहीं हुई हैं ? नदियां सरकार के हाथों में साफ नहीं हो सकती हैं। नदियों को तो साफ करने का कार्य समाज ही कर सकता है। जब तक समाज

अपनी जिम्मेदारी को नहीं समझेगा, तब तक हमारी नदियां साफ नहीं होंगी। समाज को अपनी जिम्मेदारी-हकदारी-ईमानदारी को समझना होगा। तभी हमारी नदियां साफ हो सकती हैं।

रामधीरज जी ने संगम घाट पर कहा कि इस समय देश में गंगा-यमुना नदियों का बुरा हाल है। यहां यमुना तो चम्बल नदी से होकर आती है, तो यह थोड़ी बहुत साफ है, लेकिन गंगा तो बुरी तरह से ही प्रदूषित हो गई है। सरकार और समाज को यह सोचना चाहिए कि कैसे इन दोनों नदियों को प्रदूषित होने से रोक सकते हैं। अगर नदियां मरती हैं तो हमारा समाज और हमारी संस्कृति भी धीरे-धीरे मर जायेगी। हमारी संस्कृति नदियों से ही जिन्दा है। हमें अपनी संस्कृति को मरने नहीं देना है। इसलिए हम अपनी नदियों को स्वच्छ व सदानीरा बनायेंगे।

❑❑❑

सत्याग्रह प्रक्रिया यात्रा

पहला चरण : 21 मई से 28 मई 2007 तक

स्थान : यमुना घाट, बागपत, बड़ौत, कैराना, हथनीकुण्ड

21, 22 मई 2007 **स्थान : यमुना घाट-बागपत**

जब यात्रा बागपत पहुंची तो वहां मौजूद सैकड़ों लोगों ने श्री राजेन्द्र सिंह व यात्रियों का स्वागत किया। इस स्थान पर श्री राजेन्द्र सिंह और यात्रियों ने स्थानीय लोग तथा पत्रकारों के साथ बातचीत और बैठक की।

स्थान : गोरीपुर चैक पोस्ट (बागपत)

जब यमुना सत्याग्रह यात्रा गोरीपुर चैक पोस्ट पर पहुंची तो वहां नदी के बीचों-बीच रेत निकालने का काम तेजी से चल रहा था। श्री सिंह ने बताया कि पहली बार नदियों को बांधने का काम अंग्रेजों ने शुरू किया था। उनका अनुसरण हमारी सरकार कर रही है।

स्थान : बड़ौत

यमुना यहां मर जाती है। यमुना का पानी यहां मटमैला दिखाई देता है। विकास ने विनाश को बुलावा दिया है। यहां पर यमुना नाले के रूप में बह रही है। लोग बढ़ रहे प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए संगठित होकर आगे आने को तैयार हैं।

22 मई 2007 **स्थान : कैराना-जनपद-मुजफ्फरनगर**

आज दिनांक 22 मई 2007 को यमुना सत्याग्रह यात्रा का दूसरा दिन था। आज की यात्रा प्रोफेसर एस.प्रकाश, संजीव ढाका, ललित शर्मा के मार्ग-दर्शन में आगे बढ़ रही थी।

कैराना यमुना घाट पर पुल के पास यात्रियों ने तलहटी में चल रहे खनन कार्य को देखा, यहां वास्तव में यमुना के पानी में से जे.सी.बी. द्वारा अवैध रूप से अंधाधुंध खुदाई चल रही थी। सैकड़ों की संख्या में ट्रेक्टरों द्वारा मिट्टी भर-भर कर बाहर जा रही थी। इस स्थान पर वास्तव में यमुना का असली स्वरूप बिगड़ चुका है। बीचों-बीच बड़े-बड़े खड्डे हैं, इस यात्रा में अपनी आखों से देखा, इस तरह का नजारा वास्तव में नदियों की पवित्रता को खत्म कर चुका है। साथ ही इस तरह के खनन से नदी का मूल अस्तित्व ही नष्ट हो चुका है। यहां यमुना का पानी नहाने लायक भी नहीं रहा है। यहां आस-पास के ग्रामवासियों ने प्रोफेसर एस. प्रकाश को बताया कि नदी में इतना प्रदूषण बढ़ गया है कि पानी की सड़न से आस-पास के इलाकों में पशुओं में सड़ा हुआ पानी पीने से बीमारियां फैल रही

हैं। फैक्ट्रियों का कैमिकल बहकर पानी मैं मिल रहा था। पानी में सड़न की बदबू आ रही थी। इनके किनारे मनुष्य जीवन का जीना भी मुश्किल हो गया। इस क्षेत्र में यात्रा को बहुत बड़ा जनसहयोग मिल रहा था। जन भावना से साफ लग रहा था कि वास्तव में यमुना के गन्दे पानी से नदी किनारे के लोग दुखी हैं।

यात्रा ने जगह-जगह यमुना-सत्याग्रह 2007 के पर्चे बांट कर अपनी मां की मर्यादाओं को याद दिलवाया। यात्रा में राजस्थान से जोगाराम चौधरी, संजीव जी, सलीम खान, उत्तर प्रदेश से ललित शर्मा, विनोद कुमार, हरियाणा से सुरेश राठी, दिल्ली से राजू, हिमाचल प्रदेश से रमेश भाई चल रहे थे।

सत्यवीर सिंह (प्रधानाचार्य) ने कैराना इंटर कालेज में यात्रियों का स्वागत किया। यात्रियों ने अपने विचार रखे।

23 मई 2007 **स्थान : हथनीकुण्ड**

यमुना सत्याग्रह यात्रा प्रातः 11 बजे हथनीकुण्ड पहुंची । बैठक हथनीकुण्ड अतिथिगृह के हाल में रखी गई। बैठक में.सिंचाई विभाग के 6 राज्यों के प्रतिनिधियों सहित पूरे देश के पत्रकार, मीडिया मौजूद थे।

उसके बाद हथनीकुण्ड से यमुना सत्याग्रह यात्रा ने नेहरू युवा केन्द्र, यमुना नगर (यमुना नगर) की ओर प्रस्थान किया। नेहरू युवा केन्द्र में श्री आहलुवालिया जी ने नेहरू युवा केन्द्र पर यमुना सत्याग्रह यात्रियों का माला पहनाकर स्वागत किया। श्री राजेन्द्र सिंह और यात्रा दल ने नेहरू युवा केन्द्र में विद्यार्थियों के साथ बढ़ते जल-संकट व प्रदूषण से बढ़ती बीमारियों के बारे में बात की। उसके बाद आहलुवालिया जी ने अपने विचार रखे।

गांव कमालपुर टापू जिला यमुनानगर (हरियाणा) रात को यमुना सत्याग्रही गांव में पहुंचे तो गांव में सैकड़ों की संख्या में उपस्थित युवाओं ने यात्रियों का माला पहनाकर और गीत गाकर स्वागत किया। जसबीर सिंह जी ने मंच का संचालन करते हुए कहा कि आज हमारे बीच 'जल पुरुष' श्री राजेन्द्र सिंह जी पधारे हैं। हम आज बड़े धन्य हो गये हैं।

ललित शर्मा जी द्वारा "गांव के हम रहने वाले, गांव का मान बढ़ाएंगे" गीत गाकर इस सभा का समापन हुआ।

24 मई 2007 को प्रातः 6 बजे यमुना सत्याग्रह यात्रा अपने अगले पड़ाव के लिए शुरू हुई। ठीक 7:30 बजे यात्रा कस्तूरबा गांधी, राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट-शाखा पंजाब, हरियाणा, रादौर (यमुना नगर) पहुंची। कस्तूरबा गांधी कन्या आश्रम गृह में प्रार्थना आरम्भ की गई। वहां की संचालिका ने श्री राजेन्द्र सिंह व यात्रियों का परिचय करवाया। सत्याग्रहियों ने अपने-अपने विचार रखे और अन्त में छात्राओं ने भाव-भीने गीत सुनाकर पूरे वातावरण को खुशनुमा बना दिया।

यात्रा उसके बाद गुमथलाराव ग़ांव (यमुनानगर) माध्यमिक विद्यालय में पहुंची, वहां के प्रधानाध्यापक ने श्री राजेन्द्र सिंह व यात्रियों का स्वागत किया।

पॉलिटेक्निक कालेज (सेठ जयप्रकाश) हरियाणा में प्रिंसिपल अनिल कुमार जी ने यात्रियों का स्वागत माला पहनाकर किया।

मोहनराय जी, पानीपत गोहाना (हरियाणा) नागरिक मंच आम जनता की तकलीफों को लेकर संघर्ष करने वाले, लोगों की समस्या का समाधान करने वाले पानीपत के नागरिक मंच के अध्यक्ष महेश शर्मा जी हैं।

25 मई 2007

स्थान : पानीपत के सनोली खुर्द, करनाल, स्वास्थ्य आश्रम पट्टी-कल्याणा

सत्याग्रहियों की यात्रा सनोली गांव में पहुँची । वहां सत्याग्रहियों ने गांव के लोगों के साथ बातचीत की और वहां की समस्याओं के बारे में जानकारी ली। सनोली गांव के लोगों ने संकल्प लिया हम अपने पानी की बर्बादी नहीं होने देंगे।

25 मई 2007 को प्रदेश स्तरीय लायब्रेरी (करनाल-हरियाणा) यमुना सत्याग्रह यात्रा सनोली से चलकर ठीक 11:00 बजे हरियाणा राज्य के करनाल में पहुंची। यात्रा "जल नहीं तो कल नहीं " को लेकर चल रही है। यात्रा का मुख्य संदेश अपने देश में बहने वाली 140 नदियां जिन्हें मां का दर्जा मिल हुआ था। आज यमुना मां, 'मां' नहीं रहीं है। मां के बेटे, अपनी मां के प्रति इतने दुश्मन हो गए हैं जिनकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

25 मई 2007 को यमुना सत्याग्रह यात्रा स्वास्थ आश्रम पट्टी, कल्याणा जिला पानीपत में पहुंची।

26 मई 2007 **स्थान - अट्टा**

26 मई 2007 गांव अट्टा (जिला पानीपत) हरियाणाः- गांव अट्टा में दूर-दूर से सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण इस बैठक में आये। नई पहल अट्टा गांव से हो रही है। जल बिरादरी को 1100 रुपये सप्रेम अट्टा गांव ने भेंट किये। जल बिरादरी ने यह धन वापस गांव को यमुना शुद्धि के काम हेतु दे दिया।

सोनीपत ग्राम अट्टा से यमुना सत्याग्रह यात्रा सोनीपत के लिए रवाना हुई। चौधरी छोटूराम स्मारक संस्थान, सोनीपत में यमुना-सत्याग्रह यात्रियों का स्वागत श्री सुरेश राठी जी ने माला पहनाकर किया।

26 मई 2007 को यमुना सत्याग्रह यात्रा कुर्सिया घाट दिल्ली में पहुंची।

कुर्सिया घाट में सत्याग्रहियों ने गांववालों के साथ बैठक की। गांव के लोगों ने अपने-अपने विचार रखे।

27 मई 2007

स्थान - खजूरी पुस्ता

27 मई 2007 को यमुना सत्याग्रह पद यात्रा दिल्ली के खजूरी पुस्ता से निकली। इस पदयात्रा में राजेन्द्र सिंह, रमेश शर्मा जी की अध्यक्षता में शुरू की गई। श्री रमेश शर्मा जी ने पदयात्रा की शुरूआत "नदिया धीरे बहो"

नदिया धीरे बहो-2
कौन सुनेगा तेरी आह नदिया धीरे बहो.....
सभ्यताएं जनमी तट तेरे, संस्कृतियां परवान चढ़ीं
तेरे आंचल के साये में सारी दुनिया पली-बढ़ी आज किसे अहसास.....हो
आज किसे.....2
नदिया धीरे बहो, 2

पहले तू माता सबकी, अब महरी सी लगती हो 2
पाप नाशनेवाली मईया सिर पे मैला ढोती हो 2
तेरी पीड़ा अथाह हो.....2
कौन सुनेगा तेरी आह नदिया.....

इठलाने-बलखाने वाली अब बेबस हो बहती हो 2
कंचन काया वाली मईया काली-काली दिखती हो 2
बंध गये तेरी बांह हो 2
नदिया धीरे बहो ...2
किसको है तेरी परवाह

तेरे पूत, कपूत हो गये - भूल गये तेरा सम्मान 2
ढूंढन से भी कहां मिलेगे, राजा भगीरथ, कान्हा, राम 2
किससे करोगी फरियाद हो ..... किससे ...2
नदिया धीरे बहो.....

कौन सुनेगा तेरी आह नदिया.....
तेरा घुट-घुट ऐसे मरना रंग एक दिन लाएगा
पानी रहते विश्व जब बेपानी हो जाएगा
देगा कौन पनाह ..... हो..... देगा ...2
नदिया धीरे बहो.....2
किसको है तेरी परवाह नदिया धीरे बहो.....

गीत गाकर की।

यमुना सत्याग्रह यात्रा का पहले चरण का समापन अक्षरधाम मन्दिर के पीछे लम्बी चर्चा के बाद हुआ। सभी ने सर्वसम्मति से यह फैसला किया कि जब तक हम यमुना को स्वच्छ नहीं करा लेते तब तक हम यह यमुना-सत्याग्रह चालू रखेंगे और यमुना के किनारे के दोनों तरफ के समाज को जोड़ना होगा। अन्त में श्री राजेन्द्र सिंह जी ने भगवान से प्रार्थना की और कहा जब तक हम यमुना को शुद्ध नहीं करा लेते तब तक हम एक साथ ऐसे ही जुड़े रहेंगे।

यमुना सत्याग्रह यात्रा का दूसरा चरण :

25 से 28 जून तक दिल्ली से आगरा

यमुना सत्याग्रह अभियान के तहत पहली सत्याग्रह यात्रा 10 से 27 मई तक हथनीकुंड से यूपी के रास्ते दिल्ली से हथनीकुंड तक की। 25 से 28 जून तक यह यात्रा दिल्ली से आगरा तथा 29 जून से 4 जुलाई यमुनोत्री से संगम इलाहाबाद तक की गई।

दिनांक : 26 जून 2007

स्थानः चांदपुरा, फरीदाबाद, वल्लभगढ़, छांयसा, मथुरा

दिनांक 26 जून 2007 को सत्याग्रहियों का दल दिल्ली से **चांदपुरा गांव** पहुंचा। वहां ग्रामीणों के साथ सभी यमुना के किनारे गये। उपस्थित ग्रामीणों ने यमुना की इस हालत को देखते हुये बताया कि पहले यह नदी साफ सुथरी थी, लेकिन अब यह दिल्ली की गंदगी को ढोती है।

इसके पश्चात् चांदपुरा गांव में ग्रामीणों के साथ बैठक रखी गई जिसमें रमेश भाई ने राजेन्द्र सिंह जी द्वारा लिखे गीत **'सीमेन्ट कंकरीट से मत बांधो'**

सीमेंट-कंकर-पत्थर से मत बांधो।
कदम, करील, बड़, पीपल, गूलर से बांधो।।
मोर-पपहिया, कोयल-चिड़ियां।
यमुना को सबकी जरूरत है, भैय्या।।

गन्दे नाले यमुना में मत डालो।
साबी जैसी अन्य सभी को पवित्र बना दो।।
जलग्रहण क्षेत्र में जोहड़ बनायें।
पुरानी सभी धाराओं को सदानीरा बनायें।।
फिर ना यमुना नाला बनेगी।
दिल्ली की सत्रह धाराओं से यमुना मां बनेगी।।
राष्ट्र मण्डल खेलों को यमुना पर हम नहीं करायेंगे।
ये ही खेल दिल्ली के स्टेडियम और घरों में सफल बनायेंगे।।
सीमेंट में बंधी यमुना नहीं चाहिए।
निर्मल अविरल यमुना चाहिए।।

बहादुर शाह ज़फर और महात्मा गांधी को याद दिलाने वाली यमुना चाहिए।
लाखों उजड़ों को यमुना का त्याग और प्यार हरियाली में बदलना चाहिए।।
नदियों के दोषक और शोषक अब यमुना तट को नही रोकेंगे।
वृक्षारोपण से यमुना के प्रदूषण और शोषण को दिल्लीवासी मिलकर रोकेंगे।।

अब यमुना तट पर बुलडोज़र नहीं, हाथों को पेड़ों का साथ चाहिए।
यमुना में सभी पार्टियां भूले स्वार्थ, मिलकर मां को जिलाने में लगायें हाथ।।
निःस्वार्थ होकर आये हम।
यमुना को हरा-भरा बनायें हम।।
इसके किनारों पेड़ों-जंगलों में गायें हम।
नदी के खेल दोनों किनारों पर जंगलों में खिलायें हम।।

इस गीत से बैठक का शुभारम्भ किया तथा उन्होंने ग्रामीणों को यमुना नदी की बेहाल स्थिति से अवगत कराया। चांदपुरा गांव की बैठक में अपने विचार रखते हुए उन्होंने कहा कि इसके लिए हमें दृढ़ संकल्प लेकर खड़ा होना होगा तभी हम अपनी यमुना मां को बचा सकेंगे। आओ, हम मिलकर आज संकल्प लें।

चांदपुरा के ग्रामीणों ने कुछ व्यक्तियों के नाम यात्रीदल को बताये, जो यमुना को बचाने तथा लोगों को जागरूक करने का कार्य करेंगे ।

मीटिंग के पश्चात यात्री दल **मैगा पाई होटल, फरीदाबाद** गया। जहां फरीदाबाद के बुद्धिजीवी लोग, पत्रकार व सरकारी कर्मचारी उपस्थित थे। यात्रियों ने उनको सम्बोधित किया।

रमेश भाई ने नदी गीत 'नदिया धीरे से बहो' सभी को यमुना को बचाने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती रेखा चौधरी, चेयरमैन ने यात्री दल को धन्यवाद दिया ।

इसके पश्चात् यात्री दल **एकता परिषद् कार्यालय, बल्लभगढ़** गया। जहां एकता परिषद् के कार्यकर्ताओं को भी यमुना सत्याग्रह में भाग लेने को कहा गया। कार्यकर्ताओं ने आश्वासन दिया कि यमुना बचाने के अभियान में वे भी जनजागरूकता का कार्य करेंगे।

26 जून 2007, इसके पश्चात् सभी यमुना तट के किनारे, **छांयसा गांव** गये। जहां पत्रकारों को यात्रियों ने यमुना सत्याग्रह यात्रा के बारे में बताया और पत्रकारों के सवालों के जवाब दिए और उनके साथ बातचीत की।

वहां से सत्याग्रही **विश्राम घाट, मथुरा** गये। जहां मंदिर के पुजारियों के साथ एक बैठक रखी गई। मंदिर के पुजारियों ने यात्रा-दल को अपनी समस्याओं से अवगत कराया और यमुना की गन्दगी तथा ट्रीटमेन्ट नाम पर किये गये करोड़ों रुपयों का खर्च और बढ़ते भ्रष्टाचार के बारे में जानकारी दी। यात्रियों ने उपस्थित पुजारियों व बुद्धिजीवियों को सम्बोधित किया। इसके पश्चात् मंदिर के पुजारी व लोगों ने यात्रियों को विश्राम घाट से नाव द्वारा नदी का अवलोकन करवाया। आगे जाकर देखा तो नदी काफी गंदी थी, किनारे पर ट्रीटमेन्ट प्लांट बंद पड़े हुये थे तथा नाले का पानी सीधा नदी में छोड़ा जा रहा था। नदी के अवलोकन करने के पश्चात् सत्याग्रही दल विश्वविद्यालय के गेस्ट हाउस में रुका।

दिनांक 27 जून 2007 **स्थान : मथुरा, आगरा**

आज सत्याग्रही प्रात 8.00 बजे **गोकुल बैराज, बी.सी.डी.** पहुंचे। जहां राजेन्द्र सिंह और उनके दल ने गोकुल बैराज बांध को देखा। वहां उपस्थित कर्मचारियों व शहरवासियों के साथ मीटिंग हुई। जिसमें सर्वप्रथम श्री रमेश शर्मा जी ने सीमेन्ट-कंकरीट से मत बांधो...

इस गीत से मीटिंग का शुभारम्भ किया तथा वहां के कर्मचारियों ने सभी सत्याग्रहियों को चुन्नी ओढ़ाकर और साफा पहनाकर सम्मान किया। उसके बाद श्री राजेन्द्र सिंह, श्री रमेश शर्मा ने अपने-अपने विचार रखे।

इस मीटिंग के पश्चात् सत्याग्रहियों का दल श्री माथुर चतुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय, डेम्पीयर नगर, मथुरा गया। जहां पर एक प्रेस कान्फ्रेंस को सम्बोधित किया गया।

माथुर चतुर्वेद परिषद् के अध्यक्ष नवीन नागर ने सत्याग्रहियों का स्वागत किया और उन्होंने इस सत्याग्रह में सभी की भागीदारी होने की वकालत की।

इसके उपरान्त राजेन्द्र सिंह और उनका दल **जिला युवा समन्वयक कार्यालय, नेहरू युवा केन्द्र, मथुरा** पहुंचा। जहां मीटिंग व प्रेस कान्फ्रेंस रखी गई थं।

यहां से सत्याग्रही दल **आगरा** पहुंचा। जहां महिला शांति सेना की सत्स्यों व पत्रकारों के साथ बैठक हुई। इसके पश्चात् श्री राजेन्द्र सिंह ने पत्रकारों तथा महिला शान्ति सेना के सदस्यों को सम्बोधित किया।

महिला संगठन की अध्यक्ष डा. मनोरमा शर्मा ने संगठन की उनके उद्देश्यों के साथ एकजुटता व्यक्त की। सुश्री प्रेमा पाटनी, डा. शैलबाला अग्रवाल, नीलिमा पाटनी तथा डा. शशि गोयल ने इस यमुना सत्याग्रह में अपने संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका बताई तथा उनका संगठन यमुना-सत्याग्रह में पूरे जोश के साथ भाग लेगा तथा यमुना को बचाने के लिए काम करेगा, ऐसा आश्वासन दिया।

इसके पश्चात् सभी सत्याग्रही **मुकेश जैन के निवास स्थल** पर गये जहां ईरिना सैलिना जी ने *''पानी का प्यार''* फिल्म दिखाई जिसमें पूरे देश-दुनिया में चल रहे पानी के मुद्दे हैं। उन्होंने उपस्थित लोगों को कहा कि अब जरूरत आ गई है कि आप सभी यमुना को बचाने के लिए आगे आयें, क्योंकि आगरा ही ऐसा क्षेत्र है, जहां यमुना सबसे ज्यादा गंदी व मैली है। अतः आप सभी को इसे बचाने को लेकर जोर-शोर से कार्य शुरू करना होगा।

दिनांकः 28 जून 2007 **स्थान : आगरा**

आज सुबह राजेन्द्र सिंह जी व उनका दल जिसमें श्री अश्विनी मिश्र, अध्यक्ष पू.दे.पूर. एवं गृह वशिष्ठ सर्वांगीण मानव सेवक समिति के श्री सुरेश शर्मा आदि मुकेश जैन जी के साथ **भैरों नाला** देखने गये, जहां नाले के पानी को शुद्ध करने के लिए शुद्धिकरण यंत्र लगाया गया है, लेकिन यह यंत्र देखने पर मालूम पड़ा कि यह यंत्र तो बंद पड़ा हुआ है तथा जो नाले का पानी है वो सीधा नदी में जा रहा है। यमुना के इस घाट को देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता है कि यह हमारी यमुना मां है। यह तो एक नाले का रूप ले चुकी है। शुद्धिकरण यंत्र जिसमें जापान की टेक्नोलोजी लगी हुई है और जिसमें करोड़ों रुपये खर्च हुये हैं, वो बंद पड़ा हुआ है तथा नाले का पानी जिसमें आगरा की गंदगी नदी में जा रही है। यहां पर ईरिना सैलिना, विनोद कुमार व प्रभुलाल सालवी ने नदी की वीडियोग्राफी व फोटोग्राफी की, जिसे देखकर शायद किसी को अच्छा न लगा हो, इसलिए उसने सत्याग्रहियों का वाहन जो शुद्धिकरण यंत्र के बाहर खड़ा हुआ था। उस पर पत्थर मारकर गाड़ी का शीशा तोड़ दिया।

भैरों नाला देखने के पश्चात् सभी **हाथी घाट** गये जो अपने आप में ऐतिहासिक जगह है। यहां पर पहले महिलाओं के नहाने व कपड़े धोने का स्थल था, लेकिन अब यह जगह तो जानवरों के नहाने के योग्य भी नहीं है। इसमें तो पूरे आगरा का प्रदूषण है, घाट गायब है।

यहां से सत्याग्रहियों का दल **एन.वी.सी.सी., 78 एम.एल.डी., शुद्धिकरण प्लांट, धांधूपुरा** गये जहां यात्री दल ने पूरे प्लांट का अवलोकन किया। वहां के कर्मचारियों ने बताया कि किस तरह से ये यंत्र कार्य करता है। यात्रा दल के सदस्यों ने उनसे पूछा कि ये प्लांट बंद क्यों हैं ? तो इसके जवाब में वहां कर्मचारी ने कहा कि अभी बिजली नहीं आ रही है। इसलिए यह बंद है। वरना तो यह प्लांट 24 घंटे चलता है। पूरे

प्लांट का अवलोकन करने के पश्चात् जब प्लांट के बाहर खड़े लोगों से बातचीत की गई तो मालूम पड़ा कि यह तो पूरे दिन में सिर्फ 3-4 घंटे चलता है। जिस शुद्धिकरण प्लांट पर सरकार करोड़ों रुपए खर्च कर रही है, वो इस तरह चल रहे हैं।

दिनांकः 28 जून 2007 को दोपहर में **प्रिल्यूड पब्लिक स्कूल, आगरा** में एक बैठक हुई। बिल्डर्स-भवन निर्माताओं को सम्बोधित किया। यात्रियों ने पत्रकारों से कहा कि समाज के लोगों को प्रदूषित यमुना एवं शुद्धिकरण के बारे में बताकर जागरूक करने तथा यमुना को बचाने में आप लोग यमुना को प्रदूषण मुक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए आह्वान किया।

शाम को 4 बजे **आगरा नगर निगम** में पार्षदों व समाज के बुद्धिजीवियों के साथ संगोष्ठी रखी गई। यहां पर श्री राजेन्द्र सिंह ने अपने 25 वर्षो के अनुभवों का प्रेजेन्टेशन करके सवाल-जवाब के माध्यम से अनुभव बांटा।

आगरा नगर निगम में हुई बैठक में सत्याग्रहियों की बातों से प्रभावित होकर सभी पार्षदों ने आश्वासन दिया कि एक दिन श्रमदान के रूप में कार्य करेंगे तथा तालाब बनाएंगे, लेकिन हमारे इस कार्य में आप भी शामिल हों। इसकी हम आशा करते हैं। राजेन्द्र सिंह जी ने उन्हें आने का आश्वासन दिया कि आप लोग इतना अच्छा कार्य करना चाहते हैं तो मैं जरूर आऊंगा। आगरा की मेयर श्रीमती अंजुला माहोर एवं नगरआयुक्त श्री श्याम सिंह यादव ने श्री राजेन्द्र सिंह जी व उनके साथियों को धन्यवाद दिया कि उन्होंने आगरा नगर निगम में आकर पार्षदों व हमें अपने 25 वर्षो के अनुभव हमारे साथ बांटे। इसके लिए हम उनका धन्यवाद करते हैं तथा हम भी यमुना-सत्याग्रह में साथ हैं।

यमुना सत्याग्रह यात्रा का तीसरा चरण :

29 जून से 4 जुलाई तक

स्थानः मसूरी, लैन्डोर, चम्बा, बरकोट, थत्यूड़, मातली

दिनांकः 29 जून 2007

स्थान : मसूरी, लैन्डोर, लीटरी, धनौल्टी, बटवालधार, रायपुर, थत्यूड़, काणाताल, चम्बा, बरकोट, ग्रामकोट, डुन्डा तथा मातली

आज 10 बजे श्री राजेन्द्र सिंह ने **लाल बहादुर शास्त्री अकादमी, मसूरी** में आई. ए. एस. प्रोफेशनल ट्रेनिंग में आई. ए. एस. ऑफिसर फेस-2 के प्रशिक्षणार्थियों को अपने 25 वर्षों के अनुभवों को प्रजेन्टेशन के माध्यम से बांटा तथा ग्रामीण ज्ञान को बचा के रखना है तथा सभी कार्यों में उसका उपयोग करने का आह्वान किया।

सत्याग्रहियों ने प्रशिक्षणार्थियों के साथ यमुना सत्याग्रह के बारे में बातचीत करके गंगा, यमुना, सरस्वती को प्रदूषण मुक्त कराने हेतु आह्वान किया।

इसके पश्चात् यात्रियों का दल मसूरी, लैन्डोर, लीटरी, धनौल्टी, बटवालधार, रायपुर, थत्यूड़, काणाताल, चम्बा, बरकोट, ग्रामकोट, डुन्डा तथा मातली जैसे गांव शहरों में गये। जहां लोगों से जनसम्पर्क व बैठकें आयोजित कर उन्हें यमुना की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया गया तथा उन्होंने जल बिरादरी द्वारा चलाये जा रहे यमुना सत्याग्रह के बारे में बताया गया।

दिनांकः 30 जून 2007

स्थानः मातली, उत्तरकाशी, मनेरी, भटवाड़ी, पाला

आज सुबह हिमालय पर्यावरण शिक्षा संस्थान के श्री सुरेश भाई व सत्याग्रहियों का दल **उत्तरकाशी, मनेरी, कोटा भटवाड़ी, पाला** आदि

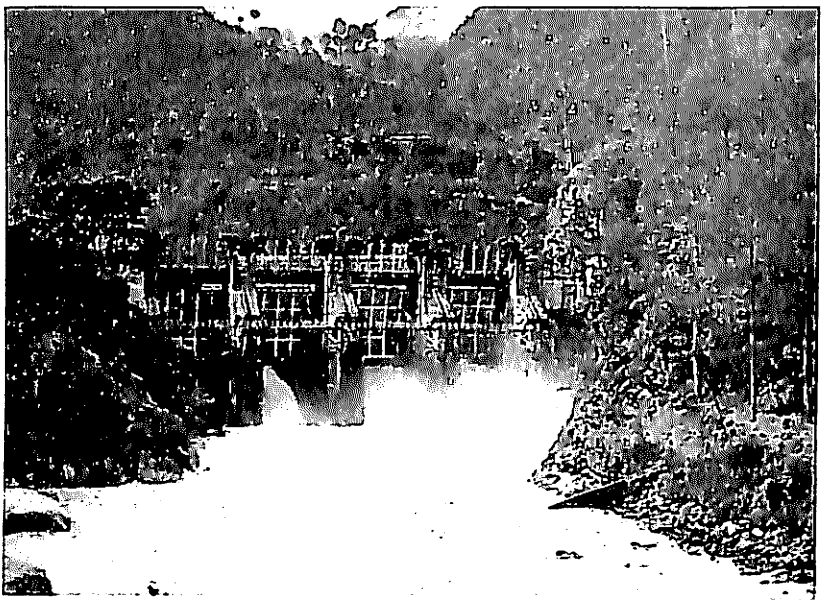

जगहों पर सरकार द्वारा चलाई जा रही लघु जल विद्युत परियोजनाओं का अवलोकन करने गये। उन्होंने वहां देखा कि पहले जहां मां अपने रास्ते जाती थी। अब उसे टर्मिनल के माध्यम से चलाया जायेगा। अभी उत्तराकाशी में छोटी-बड़ी छः परियोजनाएं चल रही हैं, जिसमें गंगा को हिमालय में सुरंग बनाकर विद्युत हेतु उपयोग लिया जा रहा है।

श्री राजेन्द्र सिंह ने भटवाड़ी में रुककर इस परियोजना को समझने की कोशिश की तथा उनके साथ आये सदस्यगणों ने इस परियोजना की वीडियोग्राफी व फोटोग्राफी करनी चाही तो वहां के उपस्थित गार्ड ने उन्हें रोक दिया और कहा कि यहां फोटो खींचना मना है। इसके जवाब में श्री सिंह ने कहा कि जाओ उस कानून को दिखाओ, जिस कानून में फोटो खींचना मना है। गंगा मां सिर्फ तुम्हारी नहीं है, यह सबकी मां है। उन्होंने इस परियोजना का विरोध भी किया ।

दिनांकः 30 जून 2007 यात्रियों ने हिमालय भागीरथी आश्रम मातली में हो रहे हिमालय पर्यावरण शिक्षा संस्थान, उत्तराखण्ड जल बिरादरी द्वारा आयोजित 'जल सम्मेलन' में भाग लिया।

भागीरथी घाटी में चल रहे जन आन्दोलनों को यात्रियों के पधारने पर एक ऊर्जा प्राप्त हुई और लोगों ने उन्हें वर्तमान में हो रही समस्याओं से अवगत करवाया और कहा कि निर्माणाधीन परियोजनाएं लोगों को मुगालते में रख रही हैं।

उत्तराखण्ड जल बिरादरी के प्रदेश संयोजक श्री सुरेश भाई, सर्वोदयी कार्यकर्ता सुरेन्द्र दत्त भट्ट, हर्षिल की प्रधान बंसती नेगी, रामप्यारी, प्रेमा बाधिनी, हिमालय पर्यावरण शिक्षा संस्थान की हिमला देवी, रक्षा सूत्र आन्दोलन की सुमति नौटियाल, संगीता मियां तथा जल संस्कृति मंच के मनमोद रावत आदि लोगों ने भाग लिया।

शाम को सत्याग्रही व हिमालय पर्यावरण शिक्षा संस्थान के कार्यकर्ता वरुणावत पहाड़ देखने गये जहां उत्तरकाशी में सरकार 250 करोड़ रुपये खर्च कर भूस्खलन को रोकने के लिए इसका ट्रीटमेन्ट कर रही है। नगर के लिए नासूर बने वरुणावत को कंक्रीट के पहाड़ में तब्दील किए जाने पर चिंता जताते हुए यात्रियों ने अध्ययन दल के साथ शीर्ष पर जाकर स्थिति का जायजा लेकर भविष्य के लिए खतरा बताते हुए प्रकृति के अनुरूप वृक्षारोपण करने की सलाह दी।

दिनांकः 1 जुलाई 2007

स्थानः मातली, सलम्यारा, नौगांव, यमुनोत्री, पुरोड़ी, विकास नगर

आज सुबह सत्याग्रहियों का दल दिल्ली प्रस्थान करने हेतु मातली से निकला। रास्ते में पड़ने वाले मातली, सलम्यारा, नौगांव, यमुनोत्री, पुरोड़ी,

विकास नगर में छोटी-छोटी बैठकें कर उन्हें यमुना सत्याग्रह के बारे में बताया तथा उन्होंने कहा कि उनके यहां इतनी सुन्दर यमुना दिल्ली, आगरा पहुंचकर गन्दे नाले का रूप धारण कर लेती है। इसलिए आप लोगों को इस सत्याग्रह में भाग लेकर यमुना को बचाना होगा।

2 जुलाई 2007 **इलाहाबाद**

2 जुलाई 2007 को इलाहाबाद पहुंचकर वहां हो रहे सम्मेलन में भाग लिया। इलाहाबाद में रामधीरज व ईश्वरचन्द्र जी ने राजेन्द्र सिंह व ईरिना सैलिना जी का स्वागत किया। इस बैठक में सत्याग्रहियों के अलावा रामधीरज जी, कमिश्नर, इलाहाबाद आदि ने अपने-अपने विचार रखे। इसके बाद सभा का समापन हुआ।

राजेन्द्र सिंह जी, रामधीरज जी, ईश्वरचन्द्र जी व ईरिना सैलिना जी यमुना को देखने के लिए संगम घाट पर गये।

इस चरण की यमुना सत्याग्रह यात्रा का दिल्ली में आकर 4 जुलाई 2007 को समापन हुआ।

इन यात्राओं के दौरान सुरेश राठी, राजेन्द्र यादव, महावीर त्यागी, रमेश भाई आदि सभी ने यमुना सत्याग्रही बनने का संकल्प लिया है। डा. मनोज मिश्र, दीवान सिंह, ओंकारेश्वर आदि सभी साथी भी सत्याग्रही बन गये हैं। सुरेश भाई, पंकज पंचौली ने यमुनोत्री क्षेत्र में इसे शुद्ध बनाने हेतु सत्याग्रही बनना तय किया है। ललित शर्मा, प्रदीप जैसे बहुत से युवा यमुना सत्याग्रही बनने हेतु तैयार हो रहे हैं। इस प्रक्रिया में सैकड़ों युवा-स्त्री-पुरुषों को सत्याग्रही बनाने का कार्य सम्पन्न हुआ है। श्री राजीव सक्सैना पत्रकार एवं आगरा पूर्वांचल देवाराधना एवं गृह वशिष्ठ सर्वांगीण मानव सेवा समिति आगरा के संस्थापक अध्यक्ष श्री अश्विनी मिश्र एवं श्री सुरेश शर्मा ने भी अपने सदस्यों

सहित यमुना शुद्धिकरण अभियान में सक्रिय सहयोग देने का संकल्प लिया। इनके साथ ही नौबस्ता क्षेत्र के कर्मठ रचनात्मक स्वयं सेवी कार्यकर्ता श्री मोहन कुमार एवं अरुण कुमार ने भी यही संकल्प लिया।

□□□

प्रेस नोट

महामहिम राष्ट्रपति जी ने संत श्री बाबा बलबीर सिंह सींचेवाल को यमुना को शुद्ध, सदानीरा बनाने के लिए दिल्लीवासियों को प्रेरित करने के लिए आमंत्रित किया।

आज दिनांक 11.7.2007 की शाम को 5 बजे राष्ट्रपति जी से भी भेंट की, और 20 मिनट बातचीत हुई । उनको यमुना पर निर्माण रोकने के लिए ज्ञापन सौंपा। राष्ट्रपति ने संत बाबा बलबीर सिंह सींचेवाल से कहा कि वे यमुना के किनारे रहने वाले सभी धार्मिक और जनसामान्य को सिखायें जैसे उन्होंने काली बैही को शुद्ध किया, वैसे ही यमुना को भी शुद्ध बनाने के लिए चेतना जगाएं तथा राजनेताओं को भी प्रशिक्षित करें।

जल बिरादरी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह ने राष्ट्रपति को यमुना में कॉमनवैल्थ खेल गांव रोकने के लिए ज्ञापन दिया। महामहिम ने इस ज्ञापन को देखकर कहा कि यमुना को शुद्ध, सदानीरा बनाने हेतु यमुना को प्रदूषण मुक्त अविरल बहना चाहिए।

गुरु वाणी - ''पहला पानी जिवो है, जेत हरिया सब कोय''
अर्थात् सबसे पहला जीव पानी है, यही बाकी सब जीवों को हरा करता है।

पंजाब से पधारे श्री संत बलबीर सिंह जी तथा जल बिरादरी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह ने गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली में एक प्रेस वार्ता में एक बयान जारी किया।

श्री संत बाबा बलबीर सिंह 'सींचेवाल' ने बताया कि 'पानी ही जीवन का आधार है, पानी पर सबका अधिकार है।' भारतवर्ष में जितनी भी नदियां एवं जलस्रोत हैं, सब जीवन रेखा हैं। इन नदियों एवं जल स्रोतों को गंदा करने का हक किसी को भी नहीं है। ये नदियां गंदी हो रही हैं। इसे सरकार को तुरन्त रोकना चाहिए।

श्री सींचेवाल बाबा ने पंजाब के सुल्तानपुर लोधी में 'कालीवेन' नामक नदी को साफ किया है। उन्होंने बताया कि संविधान के अनुसार किसी को भी

नदी को गन्दा करने का हक नहीं है। ऐसा होना राष्ट्रहित के खिलाफ है। इस तरह चलता रहा तो आने वाले समय में पानी नहीं मिलेगा। जिस प्रकार आज गरीब लोग अपने बच्चे को 15-20 रुपये किलोग्राम दूध खरीदकर नहीं पिला सकते हैं, वैसे ही परिस्थितियां पानी के लिए भी होनी हैं। यमुना नदी दिल्ली की जीवन रेखा है। इस यमुना को प्रदूषण मुक्त एवं इसका अस्तित्व बचाने के लिए जल बिरादरी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह के साथ मिलकर काम करेंगे। मैं इनके कार्य का सहर्ष समर्थन करता हूं। मैं राजेन्द्र जी के साथ यमुना-सत्याग्रह में तन्मयता के साथ हिस्सा लूंगा। यमुना-सत्याग्रह का प्रथमाचरण गांधी दर्शन दिल्ली में आज सम्पन्न हुआ। इसमें पजांब से श्री संत बाबा बलबीर सिंह, श्री राजेन्द्र सिंह, दीवान सिंह, ओंकारेश्वर, हरवंश सिंह चहल, सुरजीत सिंह, पाल सिंह, विनोद कुमार मिश्र, रमेश शर्मा आदि लोगों ने भाग लिया। ज्ञातव्य है कि यमुना सत्याग्रह का प्रथम चरण 'जल सत्याग्रह चिन्तन शिविर 2007' 18.4.2007 को गांधी स्मृति, 30 जनवरी मार्ग, बिरला हाउस, नई दिल्ली में शुरू हुआ।

राजेन्द्र सिंह जी ने कहा कि यमुनोत्री से इलाहाबाद तक की यात्रा द्वारा यमुना सत्याग्रह का पहला चरण सम्पन्न हुआ है और इस मौके पर बाबा जी आज दिल्ली आये हैं। उन्होंने जल बिरादरी एवं दिल्ली के कुछ लोगों के साथ बैठक की।

□□□

चिंतकों के पत्र

प्रदूषित यमुना एवं घटता भू-जल स्तर

परम् आदरणीय् श्री राजेन्द्र सिंह जी,

जल पुरुष श्रीमान् राजेन्द्र सिंह जी के पुनः आगरा आगमन पर सादर अभिवादन। समाचार पत्रों और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से आपकी आश्चर्यजनक उपलब्धियों के विषय में जान कर व हमारे शहर आगरा पर आपकी विशेष अनुकम्पा देखकर आपसे मुलाकात व पत्राचार करने को मन रोक नहीं पाया। क्योंकि नींद में सोये हुए को जगाना आसान है। पर जो जागती आखों से सो रहे हैं, उन्हें जगाना बहुत मुश्किल है। जो कार्य आपने अपने हाथों में लिया है, आपके इसी कर्मयोग की भूमिका में हम भी सार्थक कर्मयोग के सहभागी होना चाहते हैं। इसमें आपके मार्गदर्शन व आशीर्वाद की जरूरत है तथा कुदरत की अनुकम्पा से अपने शहर के हित में कुछ सुझाव/विचार हम लोगों ने लिखे हैं जो निम्नवत् हैं - वैसे तो आपको कोई सुझाव देना सूर्य को दीपक दिखाने के बराबर है पर क्या करें दिल है कि मानता नहीं, इसलिए यह साहस किया है तथा आपके पत्रोत्तर की अपेक्षा करते हुए उम्मीद करते हैं कि हम और आप इस आगरा शहर को क्या दे सकते हैं ?

प्रदूषण मुक्ति हेतु सुझाव

1. प्रदूषित जल, रसायनयुक्त विषाक्त पदार्थ किसी भी कीमत पर नदियों तक न पहुचने दें। यह प्राकृतिक सन्तुलन बिगाड़ने का प्रमुख कारण है। जल शुद्ध करने वाले जलचर जीव इससे मर जाते हैं।
2. अपने नजदीकी कार्यों को साइकिल से निपटाने का प्रयास करें। यह आपकी जेब, स्वास्थ्य व पर्यावरण की हित की दृष्टि से हितकारी है।
3. विवादित जगहों पर कूड़ाघर एवं खत्ताघर के रूप में न बनाकर सौन्दर्यीकरण कर छोटे-छोटे पौधे लगाने का प्रयास किया जाये। जब तक विवाद खत्म न हो।
4. पॉलिथीन प्लास्टिक के उत्पादनों पर रोक लगाई जाये।
5. घरों और कूड़ाघरों में तीन तरह के कूड़ेदान रखे जायें।
6. रसोई का कचरा अलग, पॉलिथीन प्लास्टिक अलग तथा कांच अलग रखे जायें।
7. कूड़ा उठाने वाले कर्मचारियों को निर्देश दिये जायें कि वह मिक्स कूड़ा न उठायें।
8. मिक्स कूड़ा फैंकने वालों का चालान व सख्ती की जाये।
9. जितने भी पॉलिथीन, प्लास्टिक उत्पाद की कम्पनियां हैं उनसे सरकार उनके वेस्ट विलयीकरण के लिये सहयोग ले।
10. बेकार प्लास्टिक व पॉलिथीन को गलाकर शहर के सौन्दर्यीकरण के लिए छोटे-छोटे कूड़ेदान व गमले तैयार किये जा सकते हैं।
11. गुटका, पाउच में पैकिंग देने वाली कम्पनियों को शहर साफ रखने के लिए योजनायें चलायें, जैसे पचास पाउच खाली लाने पर एक पाउच फ्री दिया जायेगा। इस लोभ से लोग पॉलिथीन को कूड़े या सड़कों पर नहीं फैकेंगे और कम्पनियों की गाड़ियां उसे एक जगह ले जाकर विलयीकरण करें।
12. बड़ी-छोटी उन इकाइयों को कचरा निस्तारण कानून के अन्तर्गत लाया जाये जिससे बहुत तादाद में कूड़ा-कचरा निकलता है। जैसे

पेठा, जूता, कबाड़ी, मैरिज होम आदि। गलियों में चलने वाले छोटे उद्योग पर नजर रखी जाये।

13. समाज सेवी संस्थायें शहर के नागरिकों को जागरूक बनायें, अभियान चलायें जो बस्ती कालोनी साफ रहती हो, उनकी तारीफ की जाए तथा जहां गन्दगी हो वहां सुविधा, सलाह तथा सख्ती का मन्त्र अपनायें।
14. प्रत्येक घरों की नालियों में अन्दर से जाली लगाना सुनिश्चित करें ताकि पानी के अलावा कूड़ा, कचरा नालियों में न बहे।
15. शहर भर में नाले नालियों में जाली लगवाई जाये जिससे कूड़ा नालों में होता हुआ नदियों में न जाये तथा जालियों के मुहाने रोज साफ कराना सुनिश्चित किया जाये।
16. नाले-नालियों को एक स्थान पर गड्ढानुमा ज्यादा गहरा कर दिया जाये जिससे कीचड़ सारे नाली-नालों में न फैल कर उन गड्ढों में ही जमा होगी और एक जगह से कीचड़ निकालने में सुविधा रहेगी।
17. टूटे-फूटे नालों-नालियों की मरम्मत व नये बनने के लिए व्यवस्था हो।
18. बिजली के खम्भे की दूरी के बराबर शहर भर में खिलौना आकृति वाले कूड़ेदान रखवाये जायें। जो दो या तीन भागों में बंटे हों, पॉलिथीन प्लास्टिक अलग, फलों के छिलके अलग और कांच अलग।
19. शहर के कूड़ाघर व कूड़ेदानों को तीन भागों में ही बांटा जाये जिससे कचरा मिक्स न हो।
20. स्कूल जा-जा कर बच्चों को शहर साफ रखने के विषय में जागरूक किया जाये कि क्या करें क्या न करें?
21. कुछ सिन्थेटिक वस्तुओं के कबाड़े को ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। जैसे रेग्जीन से बने जूते, स्कूटर, कारों के कवर, कपड़े इत्यादि।

प्रकृति में बदलाव हमारी ही गल्तियों का परिणाम

ग्लोबल वार्मिंग, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण व मौसम की अनियमितता सब कुछ मनुष्य की अदूरदर्शिता, लापरवाही, लोभी प्रवृत्ति का ही परिणाम है। विकास की अंधी दौड़ में तत्काल लाभ व सुविधा पाने के लालच ने विकासशीलता की खुशफहमी पाले हुए हम संसार के अरबों मनुष्यों ने सम्पूर्ण विश्व के पर्यावरण के लिए, कुछ 'करो या मरो' की स्थिति पैदा कर दी है। नाना प्रकार की लाइलाज बीमारियों में इजाफा और अनेकों तरह के जीव-जन्तुओं एवं वनस्पतियों का लोप होना भी हम संसार भर के अरबों मनुष्यों का सामूहिक रूप से जाने-अनजाने में पर्यावरण के प्रति की गई गल्तियों का ही परिणाम है। जिसने हमारा आन्तरिक सुख-चैन छीनकर हम लोगों को संसार में भययुक्त वातावरण में जीने पर मजबूर कर दिया है। आज बीमार होने पर हम डाक्टरों की ओर भाग रहे हैं, बिसलेरी के पानी को खरीदकर पी रहे हैं।

बीमारी और उपचार दुनिया में व्यापार बन गया है। जल जीवन है, अनमोल है, अब अनमोल पानी का भी मोल हो गया है, व्यापार हो गया है। आखिर हम सब जागती आखों से कब तक सोते रहेंगे और किस्मत का खेल जानकर रोते रहेंगे। हमारे लोभ-लालच ने हमें अर्जन की कला तो बखूबी सिखा दी और विसर्जन की कला से हम अनजान ही रहे। हमारे वेदों के अनुसार जीव और जगत् पांच भूतों से मिलकर बना है तो सृष्टि के पांचों तत्व हवा, पानी, अग्नि, भूमि, आकाश अपनी शुद्धि स्वयं व कुदरती ढंग से करने की सामर्थ्य रखते हैं।

आज से पचास सौ साल पहले हमारे पूर्वजों के जमाने में यह कुदरती शुद्धिकरण की प्रक्रिया सहज रूप से निर्बाध चल रही थी, कहीं कोई परेशानी नहीं थी, क्योंकि हमारे पूर्वजों के जीने का ढंग सहज व सरल था।

उनका अर्जन व विसर्जन भी सहज, सरल व कुदरती था। अगर हम पानी को ही लें तो यह सृष्टि में तीन रूपों में पाया जाता है - ठोस, द्रव्य, गैस। दुनिया में न कोई चीज घटती है न बढ़ती है, हां इनका रूप जरूर परिवर्तन होता है। उदाहरण के तौर पर एक बर्फ का ढेला गर्मी पाकर जब पिघल जाता है, तब पानी बनकर कहीं इकट्ठा हो जाता है और ज्यादा गर्मी पाकर गैस बनकर उड़ जाता है। यही हाल संसार में ग्लेशियरों के साथ हुआ। ग्लेशियर के आसपास के हजारों, लाखों किलोमीटर के जंगल, पेड़ मनुष्यों ने अपने लोभ-लालच के चलते साफ कर दिए।

हरे जंगल खत्म कर शहर, कारखाने बना दिए अर्थात् संसार के जीवन का अमृत संसार भर की नदियों को जीवनदायिनी मीठा पानी देने वाले ग्लेशियर का हरियाली कवच खत्म होने लगा। अतः बर्फ पिघलने लगी। ग्लेशियर सिकुड़ने लगे, इधर नलकूपों और सबमर्सिबलों से जमीन का पानी अंधाधुन्ध निकाला जाने लगा तो समुद्र का लेबल बढ़ने लगा। अब हम हल्ला मचा रहे हैं कि संसार के कई शहर समुद्र में डूब जाएंगे, इधर हम लोगों ने नदियों के किनारे शहर बसाए पर हमारी लापरवाही, विकास की अनोखी सोच, जिस डाल पर बैठे हैं, उसी डाल को काट रहे हैं; जिन नदियों से जीने के लिए पानी ले रहे हैं, उसी में जहर बहा रहे हैं। कैसे अपने घरों की नालियों से, फैक्ट्रियों से, कारखानों से घातक से घातक रसायन आज हम बिना सोचे-समझे नाले-नालियों में बहा देते हैं। जिसके कारण आज 'रमता जोगी बहता पानी' वाली कहावत झूठी साबित हो गई है। जिसके कारण संसार की और अरबों-खरबों जल साफ करने वाले जलजीव व जल वनस्पति पैदा होना बंद हो गई हैं, जो कि कुदरती पानी साफ करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे।

आज अनेकों पवित्र नदियां गंदी, मैली हो अपना वज़ूद खोने के कगार पर आ गई हैं। किसी कंपनी के पेय पदार्थ में कोई गंदगी निकल जाए तो

शासन-प्रशासन सभी हल्ला मचाते हैं। मगर अफसोस जीवनदायनी नदियों में सीधे ही सीवर, नाले, रसायन, जहर गिरा रहे हैं तो जनता से लेकर राजा तक किसी की भी जवाबदेही तय नहीं है। इससे बड़ी शर्म की बात क्या होगी ? हमें बचपन से आज तक यह तो सिखाया जाता है क्या खाएं, क्या न खाएं पर यह नहीं सिखाया गया कि क्या फैंकें-क्या न फैंके ? क्या बहाएं-क्या न बहाएं ? कहां बहाएं-कैसे बहाएं ?

मैं खुद बचपन से स्वर्णकारी के कार्यों से जुड़ा हुआ हूं। इस व्यवसाय के ऊपर भी नाले-नालियों में रसायन बहाने के दोष लगते रहे हैं। एक वरिष्ठ रसायनविज्ञानी से गहन बातचीत के अनुसार किसी भी रसायन उद्योग, कारखाने और छोटे-छोटे घरों, दुकानों में चलने वाली रासायनिक इकाइयों से नालियों में बहने वाले घातक रसायन को ट्रीटमेन्ट किया जा सकता है और उसमें से उपयोगी रसायन व क्रिस्टल रसायन प्राप्त करने के बाद जो पानी बहाया जायेगा तो वह जल जीवों के लिए किसी भी प्रकार से घातक नहीं होगा। इसके लिए शहरों में सरकार को व्यापारियों के लिए प्रयोगशालायें उपलब्ध करानी होंगी, जिसमें वह लोग फैंकने वाले रसायनों के सैम्पल लेकर आयें, तब वह उसे चैक करके उन्हें वह सही तरीका सिखा देंगे, जिससे उनकी आमदनी भी बढ़ेगी तथा फैंकने वाला पानी पर्यावरण व जल प्रदूषण से बिल्कुल मुक्त होगा। इसे कहते हैं कि सांप मरे न लाठी टूटे।

शहर से निकलने वाले कचरे को जब तक दो भागों में नहीं बांटा जायेगा। जनता तथा प्रशासन में जागरूकता जगाकर यह कैंसर रूपी राक्षस खत्म होने वाला नहीं है। इसलिये जल्द कूड़े को दो भागों में बंटवाने का कार्य किया जाये। जिसके एक भाग से खाद बने तथा दूसरे भाग को पुनः उपयोगी कर अन्य उत्पाद बनाये जा सकें। इसके बाद भी कुछ ऐसा भी बचेगा जो पुनः उपयोगी नहीं किया जा सकता है, उसे कारखानों में ईंधन के रूप में

प्रयोग करके ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है तथा उसके ज़हरीले धुएं को भी वैज्ञानिक ट्रीटमेन्ट करके उस धुएं का जहरीलापन भी खत्म कर सकते हैं।

मेरा इस लेख के माध्यम से बस इतना ही कहना है कि कुदरत के कार्य में बाधा न बनें, अगर सहज, सरल होगा जीने का ढंग तो कुदरत करेगी न हमको तंग। पूर्वकाल की तरह हम आम के आम और गुठलियों के दाम वाली जिंदगी जी पाएंगे। वरना कुदरत तो अपनी शुद्धता व संतुलन हर तरीके से हर हाल में बना ही लेगी। जिसको बनाने में हम मनुष्यों व जीव-जंतुओं के जीवन का कोई महत्व नहीं होगा। अगर हम अरबों मनुष्य संकल्प लेकर प्रकृति का साथ दें और पांचों तत्वों के शुद्ध व साफ होने में सहयोग करें, तभी आगे इस संसार का कोई वज़ूद व इतिहास रहेगा। अन्यथा सृष्टि के ये पांचों तत्व अपनी सफाई व संतुलन बनाने में इस संसार से जीवन ही साफ कर देंगे। पूर्वकाल में हमारे जीवन से निकली हुई गंदगी हमारे खेतों के लिए तारक का काम करती थी। मगर आज हमारे वैज्ञानिक आविष्कारों पॉलिथीन व रसायन हमारे दैनिक जीवन में इस तरह घुल-मिल गए कि हमारे ही द्वारा फेंकी हुई गंदगी हमारे लिए ही मारक साबित हो रही है। मारक को पुनः तारक में कैसे बदलें ? आज यही चिंतन का विषय है।

कुर्सिया घाट समाज के लोगों का श्री राजेन्द्र सिंह को लिखा गया पत्र :-

- **हिन्दू संस्कृति नष्ट नहीं हो — जल ही जीवन है।**
- **मंदिर ध्वस्त पर रोष — पंचवटी पेड़ लगाने चाहिए।**

यमुना जल सत्याग्रह की पद यात्रा आज कुर्सिया घाट पर एक सभा में परिवर्तित हो गई। सभा में कुर्सिया घाट के पुजारी, नाव चालक, बुद्धिमान पर्यावरण के लोग और समाज सुधारक आदि सम्मलित हुए। सरकार कॉमनवैल्थ खेल गांव और यमुना सफाई के नाम पर भारत की पुरानी

संस्कृति को नष्ट कर रही है। हमारी संस्कृति का जन्म ही नदियों के किनारे हुआ है। हमारे सारे संस्कार नदी के किनारे होते हैं। पीपल की पूजा करते हैं। गरीब आदमी भला यमुना को किस प्रकार से गंदा कर सकता है। यमुना के नाम पर गरीब आदमी को हटाकर उस जमीन को बड़े लोगों को दिए जाने की साजिश की जा रही है। यमुना मोनेट्री कमेटी यमुना के नाम पर नदी के तट से 300 मीटर जमीन खाली कराना चाहती है, जिसका स्पष्ट निर्णय नहीं हुआ कि 300 मीटर कहां से नापा जायेगा ?

जो लाचार गरीब थे, उनको सरकार ने निष्कासित कर दिया। मुगल काल में औरंगजेब भी उन मंदिरों को तोड़ने की हिम्मत नहीं कर सका था, जो आज मंदिर तोड़ने का आदेश देने वाला हिन्दू, क्रियान्वित करने वाला भी हिन्दू और आहत करने वाला भी हिन्दू और आहत होने वाला भी हिन्दू है। हिन्दू संस्कृति में नदी एक धार्मिक हिस्सा है। अधिकतर संस्कार नदी के किनारे होते हैं। वहां पर पूजा होती है। पीपल को पानी देते हैं। इनसे भला कहां गंदी हो सकती है। यमुना नदी की सफाई के नाम पर यमुना तट को हथियाने का खेल खेला जा रहा है जो कि गलत है। उच्च न्यायालय के निर्णय में साफ था कि अतिक्रमण हटाएं जाएं न कि गरीबों को। उषा मेहरा की अध्यक्षता में बनी कमेटी पूरी निष्पक्षता से काम नहीं कर रही है। पर गरीबों को हटाकर वहां पर बहुमंजिली इमारतें खड़ी करना चाहती है।

संस्कृत विद्यापीठ जो कुर्सिया घाट पर चलता था, उसको तोड़ दिया। उसमें करीब 2500 छात्र पढ़ते थे। उन विद्यार्थियों ने वेद मंत्रों का जाप करके यमुना की स्वच्छता के लिये कामना की।

विद्यापीठ के आचार्य ने बताया कि जल ही जीवन है। जल का पर्याय जीवन है। धर्म ग्रन्थों में जल को धर्म विज्ञान कहा गया है। जब जल प्रदूषित होता है, तो प्राणियों का स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। प्रकृति से छेड़छाड़ आज

नये अविष्कारों के कारण हो रही है। विजय किशोर ने बताया कि दिल्ली सरकार ने 1400 करोड़ रुपए खर्च कर, गन्दगी की चौदह थैली उठाकर यमुना सफाई की इतिश्री कर ली। यमुना तट के ब्राह्मणों ने बताया कि जल बिरादरी के इस यमुना जल अभियान में पूरी निष्ठा के साथ हम तैयार हैं।

यमुना बड़े लोगों के हाथ न जाए। देश की सभ्यता, गरीब ब्राह्मणों के मंदिर जो 100 वर्षों से अधिक पुराने थे, उन मंदिरों को तोड़ डाला गया, लेकिन जिन लोगों ने अक्षरधाम जैसे विशाल मंदिर बनाए हैं, जो करोड़ रुपयों के हैं, उनको क्यों नहीं हटाया गया? यमुना के किनारे और मंदिर नष्ट न हों, संस्कृति नष्ट न हो तो हमें यमुना नदी के किनारे बरगद, गूलर, आंवला, कदम आदि के पेड़ लगाने चाहिए। यमुना आपकी मां है। आप यमुना के बेटे हैं। यमुना आज मां नहीं रही उसे लोगों ने राक्षणी बना दिया है। मां की रक्षा करने की आज सबकी जिम्मेदारी है। हमें अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभानी चाहिए। संस्कृति भवन जो तोड़ गये थे। वे दुबारा नहीं बनाये जा सकते हैं।

80 वर्षो से एक जगह बैठे लोगों को उजाड़ दिया। बाहर से आने वालों को अतिथि बना कर बैठा दिया। कहां का न्याय है? सरकार सफाई कहां से करेगी ? यह हमें बताए। सभा के अन्त में निर्णय हुआ कि नदी को पूरे वर्ष जल बहने का अधिकार मिले।

एक सत्याग्रही का पत्र और कविता :-

यमुना बचाओ सत्याग्रह क्यों ?

देश स्वतन्त्र हुआ, उस समय हरियाणा नाम का एक क्षेत्र तो था परन्तु हरियाणा नाम का कोई प्रान्त नहीं था। पंजाब प्रान्त का एक भाग पाकिस्तान में और बचा हुआ संयुक्त पंजाब भारतवर्ष का उत्तरी भाग बना। उसी संयुक्त पंजाब में से हिमाचल और हरियाणा प्रदेशों का निर्माण

हुआ। यमुनोत्री यमुना का उद्गम स्थल है। वहां से निर्मल, स्वच्छ और पवित्र जल धारा के साथ उत्तराखण्ड के रास्ते हिमाचल, उत्तरप्रदेश और हरियाणा की सीमा बनाते हुए दिल्ली और राजस्थान को छूते हुए इलाहाबाद में त्रिवेणी के स्थान पर यमुना गंगा मां से जा मिलती है। सभ्यताओं का जन्म नदियों के किनारे ही तो हुआ है। देश और दुनिया के अधिकतर महानगर नदियों के किनारों पर बसे हैं। ''जल ही जीवन है'' यह जीवन का तथ्य भी इस बात से सिद्ध होता है कि आरम्भ में आबादियां पानी के समीप ही बसी थीं।

पहली नवम्बर 1966 को पंजाब से अलग होकर हरियाणा प्रान्त का निर्माण हुआ। श्री भगवत दयाल शर्मा पहले मुख्य मंत्री बने। कुछ ही समय बाद श्री बन्सीलाल जी ने मुख्य मंत्री पद की बागडोर सम्भाली। पंजाब से अलग हुआ हरियाणा का क्षेत्र पूरी तरह से उपेक्षित और पूरी तरह पिछड़ा हुआ इलाका था। इस क्षेत्र में कोई भी ठीक प्रकार का विकास कार्य तत्कालीन पंजाब सरकार ने नहीं कराया था। 1956 में सबसे पहले गांव में एक ट्यूबवैल स्वाध्याय आश्रम पट्टीकल्याणा में लगा था। आज उसी पट्टीकल्याणा गांव में 511 ट्यूबवैल हैं। श्री बन्सीलाल जी ने हरियाणा का विकास इस तेजी से किया कि देखते ही देखते यह पिछड़ा राज्य देश के अगड़े राज्यों में शरीक हो गया। आरम्भ में इस पूरे खादर क्षेत्र में जमीनी पानी का स्तर 15-16 फीट के लगभग था, जो आज घटकर 80-90 फीट तक जा पहुंचा है।

श्री बन्सीलाल जी ने अपने आरम्भ काल में ही प्रदेश के सभी गांवों तक बिजली पहुंचाने का कीर्तिमान स्थापित किया था। सभी गांवों में ट्यूबवैल लगे, जो हजारों और लाखों की संख्या में पृथ्वी मां के पेट में भरे पानी को निकालते जा रहे हैं। हरित क्रान्ति के समय जमीनी पानी का निकास दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता चला गया। वर्षा की कमी और यमुना के घटते जल स्तर के

कारण पृथ्वी के नीचे का जल स्तर घटता चला गया। घटे भी क्यों ना ? धान की फसल में वर्षा भी होती रहती है और ट्यूबवैल भी चलते रहते हैं।

जमीनी पानी की निकासी दिनों-दिन बढ़ रही हैं और पृथ्वी माता के पेट में पानी रिचार्ज बहुत कम हो रहा है। वर्षा का पानी तेजी से बह जाता है। वह धरती के पेट में पूरी तरह से नहीं पहुंच पाता है, नतीजा सामने है, क्षेत्र का जल स्तर तेजी से घटता चला जा रहा है।

पहले यमुना में बाढ़ आती रहती थी, इसके कई लाभ भी थे। पूरे खादर क्षेत्र में पानी रीचार्ज हो जाता था और सालों तक भरपूर पानी कुओं, ट्यूबवैलों से मिलता रहता था। यमुना में रुकी थोड़ी गन्दगी बह जाती थी और फिर स्वच्छ जल बहता रहता था। बाढ़ के पानी के साथ जो मिट्टी आती, वह पूरे क्षेत्र में जमीन पर फैल जाती, जिसके कारण वर्षों तक बिना खाद दिये अधिक उपज मिलती रहती थी। अब बाढ़ से बचाव के लिये यमुना के किनारे पर पूरे हरियाणा में बांध बनाया गया है। दिल्ली में तो यह बांध दोनों किनारों पर बंधा है। परिणाम यह हुआ कि बाढ़ से तो कुछ राहत मिली। परन्तु अब बाढ़ का पानी अधिक क्षेत्र में न फैल पाने के कारण धरती माता का पेट पानी से पूरी तरह नहीं भर पाता है। यदि पानी के रीचार्ज और डिस्चार्ज में सन्तुलन बना रहे तो पानी की समस्या आड़े नहीं आयेगी और यदि पानी पृथ्वी से लेना इसी प्रकार चालू रहा और देना ठीक नहीं किया तो वह दिन दूर न रहेगा जब पीने के पानी के भी लाले पड़ेंगे।

दिनांक 20 मई से 27 मई 2007 तक यमुना सत्याग्रह यात्रा का आयोजन जमनालाल बजाज पुरस्कार और एशिया के रमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित जल पुरुष श्री राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में हुआ। 20 मई से यात्री दल दिल्ली से यू.पी. के रास्ते बागपत, बडौत, कोतना, कैराना, सहारनपुर होते हुए 23 मई को हथनीकुण्ड बैराज पर पहुंचा। छः

राज्यों के करीब 35 प्रमुख साथी वहां इकट्ठा हुए। वहां से यात्री दल हरियाणा के रास्ते, यमुनानगर, दामला, रादौर, गुमथला, कुरुक्षेत्र, करनाल के वीहट रिसर्च सेन्टर, पानीपत फिर यमुना किनारे गांव सनौली खुर्द, आट्टा, पट्टीकल्याणा, सोनीपत के स्थानों पर सभाएं व प्रेस-वार्ता करते हुए 26 तारीख को यमुना किनारे कुर्सियाघाट पर एक बड़ी आम जनता की सभा कर यात्रा की पूरी जानकारी और यमुना की क्या दशा बनी है, यह बताकर 27 मई को वजीराबाद पुल से यमुना के पूर्वी पुस्ते के रास्ते अक्षरधाम तक की पदयात्रा, यात्रीदल और दिल्ली के नागरिक मिलकर करेंगे, यह घोषणा हुई। घोषणा के अनुसार 27 तारीख को प्रातः छः बजे बैनरों और हाथों में युमना बचाओ की तख्तियां लिये काफी संख्या में भाई-बहनों ने खुजरी पुस्ते से यात्रा आरम्भ की। यात्रा में नारेबाजी नहीं थी। हां जगह-जगह प्रेस के मित्र यात्री दल से साक्षात्कार कर रहे थे। दोपहर में अक्षरधाम से सटे यमुना बैड में रेल पटरी के साथ जंगल में सभा हुई। दिल्ली के उन 8-10 संगठनों के लोगों ने जो यमुना की लड़ाई अलग-अलग तरीके से लड़ रहे हैं, इस लड़ाई को एक साथ होकर लड़ने की बात तय की गई। इस सभा में जिन मुद्दों पर आम सहमति हुई, वे इस प्रकार हैं।

1. 1994 में हिमाचल, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली के पांच मुख्यमंत्रियों ने सर्वसम्मति से फैसला किया कि यमुना में उपलब्ध जल का 11 प्रतिशत यमुना में छोड़कर बाकी का जल हिस्से अनुसार पूर्वी और पश्चिमी यमुना नहरों में बांट कर छोड़ा जायेगा। खेद का विषय है कि समझौते पर अमल नहीं करते हुए सारा पानी नहरों में बांट कर छोड़ दिया गया है और जमना का 11 प्रतिशत हिस्सा समाप्त कर यमुना से पूरा पानी रोक दिया गया है। सत्याग्रही और दिल्ली के लोग मिलकर प्रयत्न करेंगे ताकि कम से कम 11 प्रतिशत पानी तो यमुना में अवश्य छोड़ा जाये।

2. यमुना में जो नगर पालिकायें जैसे करनाल, पानीपत, सोनीपत, बागपत आदि के सीवरों का गन्दा पानी किनारे के कल-कारखानों का गन्दा और जहरीला पानी सीधा न छोड़ जाये, उस पानी को ट्रीट करके ही यमुना में छोड़ा जाये।

3. यमुना के दोनों किनारों पर पंचवटी पीपल, बरगद, गूलर, आंवला और कदम्ब के वृक्ष लगाये जायें। 40 साल पुराना एक पीपल का पेड़ अपनी छोटी-बड़ी जड़ों और उनके बारीक तन्तुओं में 80 हजार गैलन पानी को रोकने की क्षमता रखता है और फिर धीरे-धीरे पानी नदी में रिसकर नदी को सदानीरा बनाये रखने की क्षमता इन पेड़ों में रहेगी।

4. यमुना नदी के दोनों किनारे के सभी गांवों के पुराने तालाब कब्जा मुक्त कराकर उन्हें खुदवाकर मेड़बन्दी कराकर और सभी गांवों में नये तालाब खुदवाकर बरसात के पानी से उन्हें भरा जाये। ऐसा करने से पृथ्वी माता का पेट पानी से भरेगा और भूजल स्तर ऊपर आयेगा।

5. किसानों से अपील की जाये और कानून बनाकर साठीधान न लगाने की बात की जाये। धान की खेती कम करके उसके स्थान पर तिलहन, दलहन और कपास जैसी कम पानी वाली फसलें उगाने हेतु प्रोत्साहित किया जाये। पृथ्वी के अन्दर से जितना पानी लें, बरसात में हर कोई उतना पानी पृथ्वी मां को लौटाये। तरीका होगा जहां पानी दौड़ता है उसे चलना सिखा दें, जहां पानी चलता हो उसे रेंगना सिखा दें और जहां रेंगने लगे फिर धरती मां के पेट में बिठा दें और फिर आवश्यकता पड़ने पर मां के पेट से निकाल कर अपना जीवन चला लें।

6. दिल्ली में वजीराबाद से ओखला तक 22 किलोमीटर लम्बा क्षेत्र है। इस क्षेत्र में दिल्ली के 22 गन्दे पानी के नाले यमुना में छोड़े जाते हैं। जिनके कारण यमुना का स्वरूप एक बड़े गन्दे नाले जैसा बनकर रह

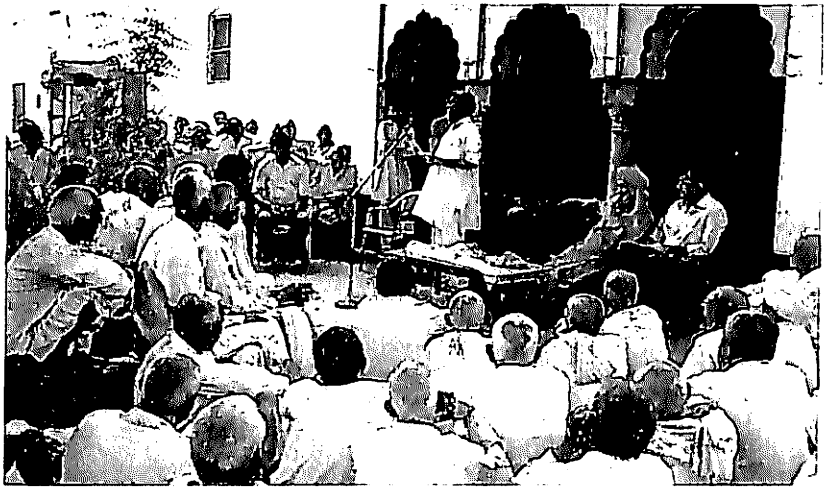

गया है। दिल्ली नगर निगम को चाहिए कि यमुना को यमुना बने रहने दें और उसमें सभी प्रकार का पानी ट्रीट करके ही छोड़ें।

7. यमुना की कुदरती चौड़ाई जो अब खजूरी पुस्ता पूर्व में और रिंगरोड पश्चिम के बीच स्थित है, उसे पूरी तरह सुरक्षित रखा जाये। इस क्षेत्र से पुराने कब्जे हटें और किसी भी प्रकार का नया निर्माण कार्य न हो और जो निर्माण कार्य गलती से हुए और हो रहे हैं, उन्हें तुरन्त प्रभाव से रोका जाये। चाहे वह खेल गांव का प्रस्तावित क्षेत्र हो, मैट्रो या अक्षरधाम जैसे निर्माण हों। यदि ऐसी रोक न लगी तो दिल्ली का भविष्य पानी के लिए अंधकारमय सिद्ध होगा। इस रिचार्ज क्षेत्र को कंकरीट के जंगल में न बदलें।

8. इस क्षेत्र में दिल्ली की पूरी प्यास बुझाने की क्षमता है। इसे पानी और शीतल पेय की विदेशी कम्पनियों को न बेचा जाये। उनकी गिद्ध दृष्टि इस पानी के बड़े भण्डार पर गड़ी है। अतः इसे सुरक्षित रखकर दिल्ली की प्यास बुझाने के काम में लिया जाए।

❑❑❑

कविता

यमुनोत्री से इलाहाबाद तक जनता कहे पुकार
भूल नहीं सकते माता हम तेरे उपकार

1. यमुना मां के तीर बसे हैं महानगर और गांव
   इसी नदी में व्यापार को चला करती थी नाव
   कलकल छलछल नाद सुनाती लेकर तेज बहाव
   पर्वत श्रेणी से नीचे उतरी कर उत्तराखण्ड को पार
   भूल नहीं सकते माता हम तेरे उपकार.....
2. हिमाचल का पांवटा साहब और आगे हथनीकुण्ड
   खादर क्षेत्र सरसब्ज था तेरा बनता जाता दुन्ढ
   बिगड़ा रूप देखकर तेरा हम रोये पकड़ कर मुन्ड
   जीव जगत की तू जननी है सब करते तुझ से प्यार
   भूल नहीं सकते माता हम तेरे उपकार.....

3. हथनीकुण्ड में रोक तुझे अवरुद्ध किया तेरा बहना
   तेरे किनारों की जनता का दूभर हो गया जीना
   यू.पी. और हरियाणा प्रान्त के आमजनों का ये कहना
   हम हैं सूखे और बाढ़ के मारे अब कैसे पड़ेगी पार
   भूल नहीं सकते माता हम तेरे उपकार.....

4. मलमूत्रयुक्त गन्दा पानी सब नगर पालिका छोड़ रहीं
   कैमिकल वाला जहरीला पदार्थ फैक्ट्रियां सारी बहा रहीं
   श्रद्धापूर्वक जनता सारी उसी गंद में नहा रही
   हरियाणा राज्य यू.पी. दिल्ली की अन्धी हैं सरकार
   भूल नहीं सकते माता हम तेरे उपकार.....

5. दिल्ली में तो हद हो गई तुझे बना दिया गन्दा नाला
अरबों रुपये तो खर्च हुए फिर भी तेरा रूप अभी है काला
नेता, अफसर, ठेकेदार ने मिलकर कर डाला है घोटाला
सभी समस्या हल होगी अब जनता के दरबार में
भूल नहीं सकते माता हम तेरे उपकार.....

6. यमुना मां का जल गर्भ क्षेत्र हम ना घिरने देंगे
पेप्सी, कोक की चालाकी हम पूरी ना होने देंगे
यमुना बैड कंकरीट का जंगल नही उसे बनाने देंगे
अक्षरधाम और मैट्रो रेल से अब करनी है तकरार
भूल नहीं सकते माता हम तेरे उपकार.....

7. महावीर अब ढेर लगाओ सबको ये बातें समझाओ
सब मिल जुलकर हाथ बटाओ तभी समस्या का हल पाओ
समय हाथ नहीं आयेगा फिर इसमें ना अब देर लगाओ
इस मुद्दे पर सब मिल जाओ तब होगा बेड़ा पार
भूल नहीं सकते माता हम तेरे उपकार.....
यमनोत्री से इलाहाबाद तक जनता कहे पुकार
भूल नहीं सकते माता हम तेरे उपकार.....

❑❑❑

मातृ-शक्ति का आह्वान

इस मुर्दों के शहर में,
कैसे बजाऊं बीन।
जिसे सुनते ही मुर्दे तो रहे मुर्दे,
घेर लेते हैं सांप।
हजारों करोड़ों के सब्जबाग,
दिखाते हैं मुंगेरी लाल।
अब तो डालर है सस्ता,
महंगा हुआ पानी।
खुदकुशी को उतावले,
क्यों लग रहे हिन्दुस्तानी।
वह दिन दूर नहीं,
जब करोगे रहीम को याद।
पर तब क्या यमुना होगी,
क्या तब होगा पानी,
या रहेंगे मात्र "वीराने" कंक्रीट के जंगल।
नदियों की व्यथा समझो,
और रहने दो उन्हें जिन्दा।
अब हुआ बस...
मातृ-शक्ति उठो,
जिला दो इन मुर्दों को,
और फूंक दो इनमें प्राण।
और दे दो,
मां यमुना को अभयदान।
एवं स्वयं को एक,
सुरक्षित भविष्य।

डा. मनोज मिश्र (राजेन्द्रसिंह को समर्पित)

छपते-छपते

यमुना सत्याग्रह को सफलता मिली

1 सितम्बर को एन.डी.ए. सरकार के नेता पूर्व रक्षा मंत्री, जार्ज फर्नान्डिस ने यमुना सत्याग्रह स्थल पर पहुंचकर कहा : ''अक्षरधाम निर्माण कराने का मैं अपराधी हूं।''

दिल्ली के उपराज्यपाल ने कहा ''यमुना में सब निर्माण हम तुरन्त प्रभाव से रोकते हैं। भविष्य में यमुना में निर्माण नहीं होने देंगे।

सरकार ने मान लिया, यमुना में गलत निर्माण हो रहा है। यमुना सत्याग्रही भी यही कह रहे हैं। यमुना सत्याग्रहियों का आग्रह ''सत्य'' है। सरकार चलाने वाले जब तक सत्ता की कुर्सी पर हैं, तब तक विकास के नाम पर विनाश करना ही इनका लक्ष्य होता है। जब सत्ता से बाहर आते हैं, तब

जिम्मेदारी का अहसास करके ईमानदारी अपनाते हैं। जनता की हकदारी की इज्जत करने लगते हैं। हमारा सत्याग्रह नेताओं को प्रकृति का सत्य सत्ता में रहते हुए समझाने का है। सत्ता की कुर्सी पर बैठे भी गलत को गलत कह कर रोकें । खेल गांव-मेट्रो डिपो यमुना में हैं। ये यमुना नदी में निर्माण करना दिल्लीवासियों तथा देशवासियों के साथ अन्याय है।

अब डी.डी.ए. और दिल्ली सरकार ने मान लिया 97 वर्ग कि.मी. में से 36 वर्ग कि.मी. में नया निर्माण और सीमेन्ट कंकरीट का जंगल बन रहा है। इसे तुरन्त प्रभाव से रोकेंगे। यमुना में से सभी तरह का नदी विरुद्ध निर्माण रुकना चाहिए। जब तक नदी में निर्माण होगा। तब तक हमारा सत्याग्रह जारी रहेगा। हमें उम्मीद है कि दो अक्टूबर से पहले दिल्ली सरकार यमुना नदी के निर्माण रोककर सभी तरह का अतिक्रमण हटा देगी। यमुना को खेती और वृक्षारोपण करके हरा-भरा बनाएंगे। यमुना को हरा-भरा बनाने में यमुना सत्याग्रही भी मदद करने के लिए तैयार हैं।

1 अगस्त को शुरू हुए यमुना सत्याग्रह का इस किताब को छपते-छपते आज 50वां दिन पूरा हुआ है। दिल्ली की जनता में अब यमुना सत्याग्रह के पक्ष में दिल्ली के गांवों, गलियारों, मोहल्लों, बस अड्डों, रेल्वे स्टेशनों तथा हवाई अड्डों पर पहुंचकर लोगों को यमुना बचाने के गीत गाकर, ढोल बजाकर, नाचकर और आपस में यमुना-संवाद चल रहा है। अब देखना है दिल्ली सरकार दिल्ली के समाज को कितना सुनती है और मानती है। दिल्ली की सरकार ने दिल्ली को झुग्गी मुक्त बनाने का संकल्प तो आज सुना दिया, लेकिन यमुना को कब्जामुक्त करके आजादी से बहने का फैसला कब सुनायेगी ? यमुना दिल्ली को बनाती है और यमुना पर दिल्ली सरकार कब्जे करवा रही है। यमुना के सरकारी कब्जों को हटवाने में दिल्ली का समाज यमुना-सत्याग्रह-संवाद से सफल होगा। ❑

यमुना सत्याग्रह तैयारी संवाद
जलबिरादरी

दैनिक जागरण

(1)

"पानी किसी की निजी संपत्ति नहीं बन सकता"

■ इस सप्ताह के साक्षात्कार में जल प्रबंधन के संदर्भ में समाज की जागरूकता पर बल दे रहे हैं राजेंद्र सिंह

यमुना को राखी बांध लेंगे रक्षा का संकल्प

यमुना बचाने को सिटीज़न फ्रंट का धरना

दिजबो बलात्कार कांड में रपट

We must link our hearts and minds with rivers, says Rajendra Singh

On Record by Vibha Sharma

Rajendra Singh

RAJENDRA SINGH, known as India's water man, is responsible for five dead rivers in Alwar, Dosa and Jaipur districts in Rajasthan — Aravari, Ruparel, Sarsa, Bhagani and Jahajvali — coming alive and flowing once again. His water conservation efforts for the past 25 years won him the Magsaysay award in 2002.

Secondly, since all rivers are fed by rivulets and streams, we must revive and rejuvenate all small streams so that the main ... maintains a perennial ...

12-2 26/8/07

Activists protest barricading at Games Village site

"The exercise was carried out at night while the Satyagrahis were sleeping in the area"

Staff Reporter

NEW DELHI: Hours after Yamuna Satyagraha activists an- ... Games Village site and stop the Delhi Government and Centre from undertaking construction on the flood ... tyagraha, a conglomeration of the Yamuna Jiye Abhiyan, URJA, Natural Heritage First and several other NGOs.

"Dr. Vinod Kumar Mishra ... been maintaining a 24-hour vigil at the site, were confined for more than 12 hours. "On Saturday morning when other volunteers tried to send ... movement is gaining ground with each passing day," members of the Yamuna Satyagraha coordination committee said.

In a statement issued by ...

the HINDU 7th AUGUST 2007

Saving the Yamuna is their only mission

Their protest against the Government's move to convert site into Games Village continues

- Just sit here and you realise that the breeze that blows here is incomparable, says 97-year-old former Delhi varsity professor
- "Even illiterate farmers here know that this site, with its unusual ratio of sand and soil, is the most important recharge zone"

Smriti Kak Ramachandran

NEW DELHI: Dependent on the Yamuna for his livelihood is Chain Singh. Almost seven years ago when the Government took over his land, he could not even muster courage to protest, but grateful that he had some more land to ... he moved on.

... fight for the land and this river," he says. Attached to the Yamuna emotionally is S. Prakash. A former professor of ... University, the 97- ...

Committed to saving the Yamuna are scores of other people. Some from far ends of the country, sitting guard at the site chosen for the construction of the Games Village. These people are ... Government's doggedness ...

... turned into a desert. Even ... farmers here know that this ... its unusual ratio of sand ... most important recharge ... Government seems ... ous to it," said Gopal Singh ... Tarun Bharat.

On Saturday when the ... site entered its 11th day ... was organised ... fighting to save the Yamuna ... an iron pillar erected at ... their protest. They are ... off their protest till ... concedes and shifts the ...

यमुना किनारे धड़ल्ले से हुए निर्माण पर खतरा

हल्का भूकंप भी बरपा देगा कहर

केंद्र सरकार की एजेंसी यूईवीआरपी की चेतावनी, कहा अभी भी चेत जाओ

रिक्टर स्केल पर चार के भूकंप को ही खतरनाक बताया, मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त और जलपुरुष राजेंद्र सिंह ने भी की और निर्माण न करने की अपील

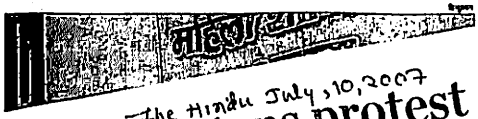

[illegible]

—The Hindu July, 10, 2007

'Waterman' threatens protest against Games village site

If the Delhi Govt. goes ahead with its plan to construct it near Yamuna's bank

Bindu Shajan Perappadan

NEW DELHI: The Yamuna in Delhi has found a voice of support in the form of Magsaysay Award winner Rajendra Singh who has announced that he will be forced to start a "non-violent protest" on the riverbanks if the Delhi Government goes ahead with its proposed construction of the Commonwealth Games Village near the river's bank.

Scheduled to meet senior politicians and officials here on Tuesday, Mr. Singh – better known as Waterman – ... ahead with the project. With Delhi falling in the earthquake-prone zone we cannot afford to have constructions in the area. Besides the construction here being a risk to human life we will also have to forgo a precious recharge zone."

'Important river'

Currently in Agra to garner support against the planned construction in Delhi and helping locals there to "recharge Yamuna", Mr. Singh – who has been instrumental in rejuvenating the rivers of Alwar in Rajasthan – said: "Yamuna is one of the most ... in the zone and watch its destruction."

Protesting against the deposition of cement and other construction material in the riverbed for constructing the games villages, Mr. Singh added: "Forty per cent of Delhi's water demand is fulfilled through the Yamuna and constructing here means killing the re-charge zone forever. The Government should look at other sites including setting up the Games Village in the Dwarka or providing accommodation to the guests in the University area."

Support forthcoming

Mr. Singh is also being supported by several organisations here in the Capital working on the issue a[...] called on people not ju[...] Delhi but also other St[...] cluding Uttar Prades[...] ryana, Himachal Prad[...] Rajasthan to come [...] to protect the Yamun[...]

Speaking about th[...] ment to protect the [...] Manoj Misra of Yam[...] Abhiyaan said: "[...] written to senior [...] requesting them t[...] the matter. The pr[...] for the Games Vill[...] ed in the riverbed [...] manding [...] Government rev[...] to build on the[...] constituting an [...] committee of e[...] into the matter[...]

यमुना के किनारे खेल गांव बनाने के खिलाफ मुहिम से जुड़ने की अपील

जल सत्याग्रहियों ने कहा, दिल्ली को बचाना होगा

जनसत्ता संवाददाता

नई दिल्ली, 24 अगस्त। यमुना के किनारे खेल गांव बनाने का विरोध कर रहे सत्याग्रहियों ने दिल्ली की जनता से इस अभियान में उनके साथ जुड़ने की अपील की है। विभिन्न संगठनों के लोगों ने खेल गांव बनाने और यमुना को बचाने के लिए एक अगस्त से सत्याग्रह शुरू किया है। इन लोगों का कहना है कि सरकार को यमुना में बढ़ते प्रदूषण और उसकी घटती जलधारा की चिंता है। बावजूद इसके वह यहां राष्ट्रमंडल खेलों के लिए खेल गांव बना रही है।

सिटीजंस फ्रंट फॉर वाटर डेमोक्रेसी, जल स्वराज अभियान ... आबादी को बाढ़ से सुरक्षा मुहैया करते हैं।

वंदना शिवा ने कहा कि उन लोगों का यह आंदोलन नदियों के जोड़ने के समान है। उन्होंने कहा कि सरकार को दिल्ली की जनता की कोई फिक्र नहीं है। वह तो विदेशियों के हित में दिल्ली को खत्म करने में लगी है। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन के मौके पर वे पेड़ और नदियों को बचाने का प्रण लेती हैं। दिल्ली की जनता को भी ऐसा ही प्रण लेना होगा, तभी उनकी दिल्ली बच सकेगी। प्रेस कांफ्रेंस में शीला दीक्षित होश में आओ, उलटी गंगा मत बहाओ और जमुना में तो पेड़ लगेंगे, खेल गांव कहीं और बनेंगे जैसे नारे भी लगाए गए।

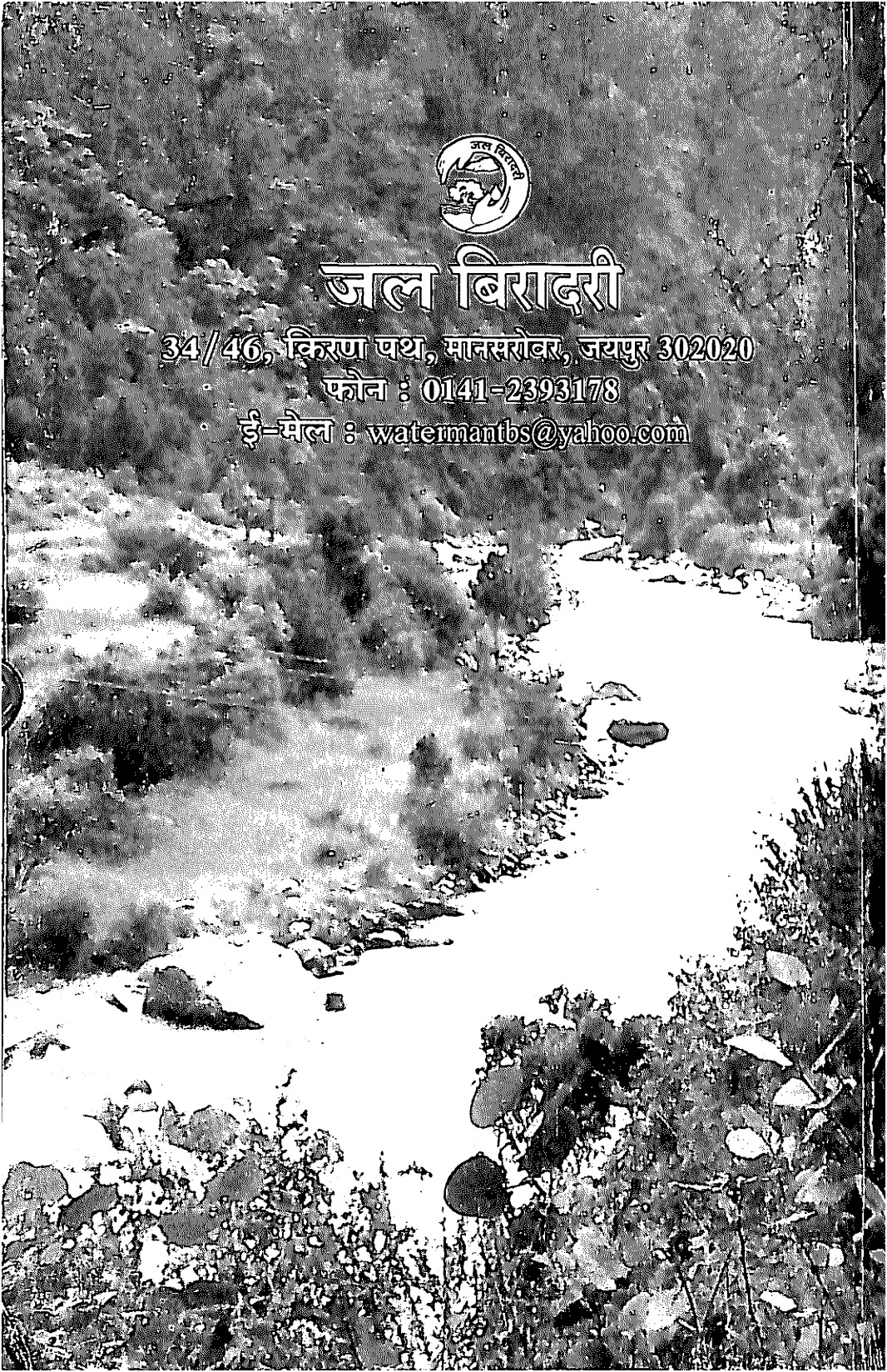

जल बिरादरी

34/46, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर 302020
फोन : 0141-2393178
ई-मेल : watermantbs@yahoo.com